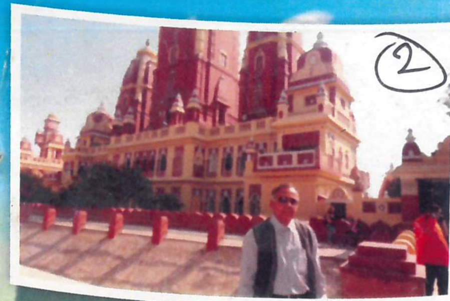
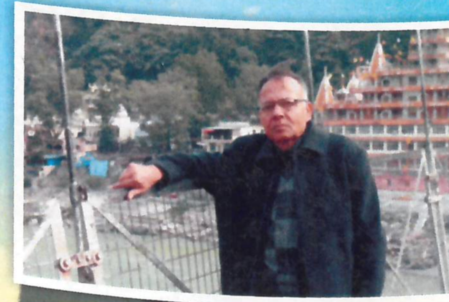
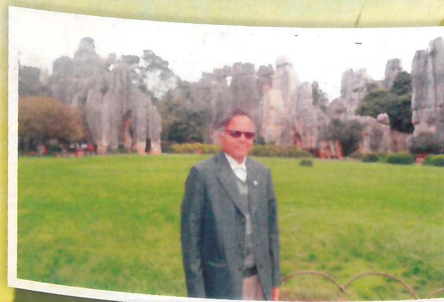
सीमाके आर-पार

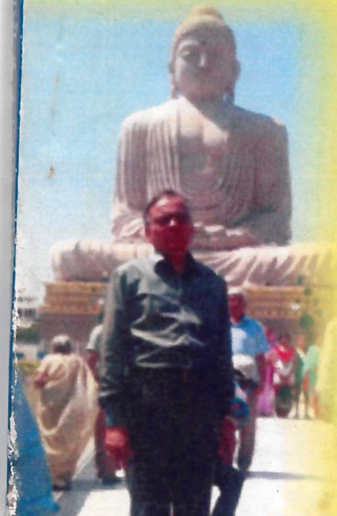
(यात्रा संस्मरण)

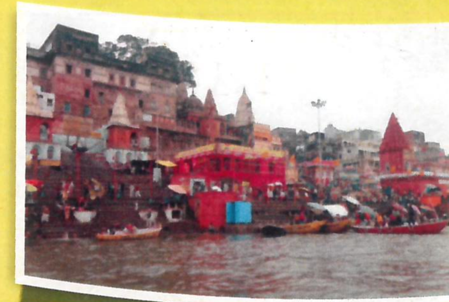












रामभरोस कापडि 'भ्रमर'

सीमाके आर-पार

(यात्रा संस्मरण)

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'



प्रकाशक

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान

जनकपुरधाम

सीमाके आर-पार
(यात्रा संस्मरण)

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशकः जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान
भ्रमर कुञ्ज, शिवपथ, जनकपुरधाम
फोन नं.: ०४१-५२०२६९

प्रति	: ५००
मूल्य	: २००।-ने.रु.
	: १५०।-भा.रु.
प्रकाशन वर्ष	: २०७३ साल
	: २०१६ ई.

मुद्रक : हिस्सी अफसेट प्रेस, जमल, काठमाण्डू

प्राप्ति स्थान
- राजेन्द्र कुशवाहा, रेल्वे बुक स्टॉल, जनकपुरधाम
- शेखर प्रकाशन, पटना
- चन्द्रेश, दरभंगा
- बुचरु पासवान, झंझारपुर, मधुबनी

ISBN No.: 978-9937-0-1346-8

SIMA KE AAR-PAR
[TRAVEL MEMOIR]
By : Ram bharos kapari 'Bhramar'

लेखकीय

आहे माहे

सएहने ! हम कोनो घुमक्कर नहि छी जे एकटा देखबाक बुझबाक लौलसँ अनेरे घुमैत रही। तखन जाहि कोनो संयोगसँ कतौ जएबाक अवसर भेटैत अछि, ताहि क्षणकेँ समेटबाक धरि लौल अवश्य अछि। तखन आनक हेतु सहज, दैनिकी अथवा बाध्यतावश होइत ओ भ्रमण हमरा लेल एकटा अवसर भ' जाइत अछि। हम चाहैत छी ओहि क्षणकेँ कागजपर उतारि बेरबेर ओहिक्षणमे जीवाक अनुभूति प्राप्त करैत रही।

साँचबात कहल –नियारिक' हम कतहु घुमल होइसे मोन नहि अछि, प्रसंग अएलैक, समयपर जएबाक छैक, दू चारि संगीकसँग विदा भ' गेलहुँ। हमर एकटा मित्र छथि मुम्बई पालघरमे। छथि तँ खासपट्टी, मुजफफ्रपुरकेँ, मुदा तीन दशकसँ बेसी भ' गेलन्हि ओत रहला। ओ सालमे नियमित सपरिवार घुमबालेल तीर्थाटन करैत रहैत छथि। भक्तिभावक तुष्टिक सँग दर्शनीय स्थानक अवलोकन। फेसबुकमे चित्र सभ पठबैत रहैत छथि। ततबे नहि हमरा उत्कोचित सेहो करैत रहैत छथि– 'आबो त घुमू, घरमे बैसल बैसल कोना मोन लगैए।' एहने सनबात सभ।

हम परिवारक सँग कतहु नहि घूमि सकै छी से बात नहि। मुदा ताही परिवारक कारणें घूमबामे असमर्थ भ' जाइत छी। अपना ओतेक लुरि नहि अछि जे बाट घाटक तारतम्य मिलबैत रही, परिवार ओहन अकिलगर नहि जे अपनो आ हमरो खियाल राखि सकथि, तखन जाहि आनन्दक हेतु घुमी तकर अभावमे घरेमे बैसल दुनियाँक सभ सुखक अनुभूति करैत रही सएह नीक लगैए। किए मोन दुखित करी....।

से बात मित्रके कहि नहि सकैत छियनि । तखन अपन आने तरहक असमर्थता बता बातकेँ घूमा देल करैत छी । ओना उज्जैनक महाकुम्भ हम एहने सन कारणसँ नहि गेलहुं । मित्रक एहि आश्वासनक बाबजुदो जे ओ उज्जैनमे एक दिनपूर्वे पहुँचि व्यवस्थापनमे हमरा पूर्ण सहयोग करताह । ई त हमर अभाग भेल, हुनक कोन दोष !

जे से एहि तरहेँ नियारल भ्रमण हम कएलहुं नहि, तखन अपन कार्यक्षेत्रके क्रममे प्राप्त अवसरसँ लाभटा उठा पौलहुं आ तकरे परिणाम थिक ई यात्रा संग्रह 'सीमाके आर–पार' । सीमासँ जूडक कोनो देश, ठाम जत हमरा जएबाक अवसर भेटल तकरे, एकटा दिनचर्या थिक ई संस्मरण । सम्भव थिक बहुत गोटे एहि क्षेत्रसभमे घुमल होथि । एकबेर नहि बेर–बेर घुमल होथि । मुदा ओहि ठामक वस्तु जातके देखबाक नजरिया फूट होइन्ह । तखन हमर देखाईमे किछु नव नहि होइतो स्वाद धरि, किछुओ परिवर्तित बुझापरतनि त बुझब संग्रहक किछुओ मात्रामे औचित्य प्रतिष्ठापित भेल अछि ।

नेपालीए मैथिली क्षेत्रमे पुस्तक प्रकाशनक गति बढलैक अछि । एतेक धरि जे एक्केबेर लोक कवि, कथाकार, उपन्यासकार रुपमे ठाढ होइत देखल गेल छथि । हमरा सभके दशको लागल स्थापित होएबामे, नवका पीढिक हस्ताक्षरमे जँ ई औकात छै त बेजाए नहि, प्रशंसा हएबाक चाही । बरु प्रेरणा लेबाक चाही – संघर्ष आ अध्ययनक युग आब गेलै, प्रविधि जखन विकासक गतिकेँ नव उँचाई पर लऽ अनलकैए त साहित्य किए आलमारी आ अध्ययन कक्षक छहरदेवालीयमे कैद रहत । एहिना नव नव डिभाइसक माध्यमसँ ब्राउज होइत रहौ सहित्य आ पाठकवृन्दकेँ मनोरञ्जन करैत रहौक ।

से एहन उर्वर जमीनमे नवफसिल उगएबाक इच्छा रहितो जे कोठी आ बखारीमे उझलल अन्न अछि, तकरे विकछा, छाँटिफटकि क' परसबाक जोगार क दानाके बेसाहमे लागल छी एखन । ई संग्रहो ताहि कोठी –बखारीक अन्न थिक । आंकरक सम्भावना रहितो ई थोडेक कालक हेतु जँ भूखकेँ तुष्टि दऽ सकत हम परिश्रम सार्थक बूझब । 'पुरान चाउर पन्थ' होइत रहै कहियो !

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

विजया दशमी २०७३
सितम्बर : २०१६

विषय सूची

सीमाके आर-पार

यात्रा प्रसंग : किछु दृश्यक संग


दिल्ली


रायपुर


कलकत्ता


पटना


राजगीर


मुम्बई


बनारस


मुम्बई


मुम्बई


तिरुपती

यात्रा संस्मरण

धानकसीसपर सृमद्धिक रूपान्तरण अछि, रायपुर

हमरयात्राक क्षेत्र बहुत सिमित रहल अछि। ओहुना हमर स्वभाव घरमुहाँ वेसी अछि, वाहर निकालबालेल बड़ गुनधुन, तैयारी किंवा संगतिक जरुरत। तएँ वेसी काल कन्छीए काटि लैत छी। एहु दुआरे भारत आ नेपालक कएक ठामसं आयल महत्वपूर्ण आमंत्रणकें मठैरैत रहलहुँ अछि। मुदा किछु तेहन होइछ जकरा त हाले उपेक्षा नहि कएल जा सकैछ आ तेहने सन आमंत्रण छत्रीसगढ़क राजधानी रायपुरसं भाइ मनीषक छल, जकरा चाहियो कऽ हम अस्वीकार नहि कऽ सकलहुं। चाहियो कऽ एहि दुआरे जे २०,२१ फरवरी २०१३ कऽ भारत बन्द रहैक यातायात कर्मी सभक। हमरा सभके जएबाक रहे २१ ता. कऽ पटनासं रायपुर रात्री ८.२० बजेक साउथ विहार एक्सप्रेस सं आ भारत बन्द रहैक। घरमे त सभकें विचार भऽ गेलै छोड़ल जाए यात्राक निर्णय। दरभंगामे भाइ चन्द्रेश, बन्धुबर बुचरु पासवान जीक रायसँ भोरका ५.३० बजेक गाडीसं पटना चली। ओत १-१.३० बजे धरि पहुंचि जाएत। हमरा ठीक लागल। मुदा तकरालेल हमरा ५ बजे भोरे धरि दरभंगा पहुंच पड़ैत। निर्णय भेल जे दू बजे रातिमे अपन गाडीसं निकलि जाएब। फेर किछुए कालमे ...बुचरु पासवान जीक फोन आएल ५.३० बजेक गाड़िक कोनो ठेकान नहि , बरौनीमे रुकल अछि। जएबाक

संभावना क्षीण भऽरहल अछि। तखन तत्काल निर्णय लेल हम रातिएमे दरभंगा जाइ आ ओहू दुनू गोटाकें गाडीमे चढ़ा रातिएमे पटनाक लेल विदा भऽ भोरे पहुंचि जाइ। वन्दक असरि नहि होएत। तकर सुचना दैत हम आ राजाराम सिंह राठौर तं छलाहे, बबलु चौधरी, नाती चन्दनकें संग ल ८.३० वजे रातिमे जनकपुरसं विदा भऽ गेलहुं। रातिमे जएबाक ई हमर पहिल अनुभव छल। राति ११.१५ वजे हम दरभंगामे चन्द्रेशजीक डेरापर छलहुं। जाएबला सभकें

खबरि कएल गेल। निराश भऽ घरमे लगभग अलसा गेल बुचरु जीके तैयार भऽ टावरपर अएबा लेल कहल गेलनि। एम्हर चन्द्रेशजी रोटीक जोगाड़मे लागि गेलाह। सभगोटे भोजन क १ वजे ओत्तसं विदा भेलहुं। टावरपर बुचरु जीके लैत पटनाक हेतु विदा भेलहुं। बाटमे किछु ट्रक एक-दुटा छोटका गाड़ी, वस अबैत देखलिऐक। जेना-तेना पटनामे नेहमानक डेरापर ५ वजे पहुंचि गेलहुँ। ओत्तहु सभ इन्तजारमे रहथि। सामान धऽ हम सोफे विछाओन धएलहुं त आन मित्रगण चन्द्रेश आ पासवान जी कतहु दोसर डेरापर, बबलु आ चन्दन गड़ीसं सोफे जनकपुर घुरि गेल। राठौर जी त संगे रहथि, ओ लैवमे प्राय : आराममे चलि गेलाह। दोसर दिन भेने सांझ कऽ रेलवे स्टेशनपर चन्द्रेश, पासवान जी त भेटलाह , डा. योगानन्द जी सेहो बड़ आहलादसं भेटलाह। गाड़ी लेट रहैक। तखन विश्रामकक्षमे जएबाक निर्णय भेल आ योगानन्दजी उपर दोसर तल्लामे अवस्थित विश्रामकक्षमे लऽ गेलाह जत्त कविर डा. रामनरेश विकलसं भेट करौलनि। हमरा लागल रायपुरक कष्टकर यात्राधरि पहुंचबाक पहिल साफल 'विकल' जीसं भेट छल।

गाडी दू घंटा लेट १ न.प्लेटफार्मपर आएल। हम सभ निचां आबि गेल रही। श्री एसी-एबी-२ मे हमरा सभक सीट रहए-२५,२८। अर्थात् लो बर्थ। कम्पार्टमेटमे टासल सीटमे नाम तकैत काल ड़ा. केष्कर ठाकुर टकरएलाह। मन प्रशन्न भऽ गेल। ओहीमे हुनको रहनि। भितर गेलापर श्रीमती अरुणा ठाकुर भेटलीह। ओहो चिन्हलनि। नमस्कार-पाती भेल फेर अपन सीटपर गेलहुं जे हुनका सभक सीटसं सटले छल। ड़ा. ठाकुर दम्पती सभक संगे चारि गोट

शोधार्थी छात्र-छात्रा सभक टीम सेहो रहनि जे किछु कालमे संगे होइतनि-क्यूलक वाद। से वादमे ओ बड़ आवेशसं परिचय करौलनि। हं, ओहिमे निक्की प्रयदर्शिनीसं हम पूर्व परिचित छलहुं। हुनक सकीयलेखन आ प्रतिबद्धता हमरा



प्रभावित करैत रहैत अछि। भेंट कऽ हमरा अपूर्व प्रशन्नता होइत अछि।

२२ ता. कऽ राति ८ वजे जाधरि रायपुर स्टेशनपर नहि पहुंचैत छी ताधरि हमरा सभक यात्रा पारिवारिक स्वरुप धऽ लेने रहए। गप-सप, खान-पीन आ कतेको नव योजनापर विचार-विमर्श। केन्द्रमे मैथिलीक अवस्था,राज्य आन्दोलनक स्वरुप,साहित्य,संस्कृतिक गति,अकादमी आ आन संस्थाक दायित्व विस्तारसं हमरा सभक विच घुमैत रहल। एहिमे भाइ योगानन्द, बुचरु पासवान,चन्द्रेश, विकलजी विच विचमे संग दैत रहलाह। ई चौबिस घंटा कोना कटल रहए पत्ते नहि चलल।

आ जखन स्टेशन पहुचैत छी तँ हाथमे बड़का गुलदस्ता (वुकी) लेने संयोजक भाइ मनिष भ्फा आदर भावसं ठाढ़ भेटैत छथि। ड़ा. केष्कर ठाकुर परिचय दैत, करबैत छथि। फोनपर गपसं जे अनुहार आ व्यक्तित्वक चित्र कल्पनामे बनल छल ताहिसं सोफे-सोफ मेल खाइत व्यक्तित्व भाइ मनिषजी हमरा सभकें वाहर लऽ गेलाह आ गाडीसं होटल पहुंचौलनि। बादमे हमरा लेल व्यवस्था कएल गेल राज्य सरकारक अतिथिगृह न्यू सर्किट हाउसमे गाडीसं पहुंचलहुँ। भाइ मनिषजी संगे छलाह। कमरा न.६०७। छठम मंजिलपर। भव्य पांचसितारा सुविधासं सम्पन्न। खान-पीनक हेतु निचां कैफे हाउस। एकफोन ८ न. मे, तुरत सभ किछु हाजिर। व्यय व्यवस्थापनके अर्थात् भाइ मनिष जीके। मुदा हम त मित्र सभक संगे खएबापर विश्वास कर बला। रहलहुं ओत्त मुदा खान-पान संगे रहए होटलेमे। कार्यकमक व्यवस्था ओतके कन्फ्रेन्स हाँलमे।

दोसर दिन सर्किट हाउसक भ्फरोखासं अहल भोरे सूर्योदक अनुपम दृश्य मोनके कैमराक क्लीकमे संयोगने हम मधुर कल्पनामे कतेक काल ठाढ़ रहलहु, पता नहि। राठौरजीक तगेदा भेल त तैयार हएबालेल वाथरुममे पैसल छलहुं।

मिथिलामहोत्वसक रंग

फरवरी २३ ता.कऽ उद्घाटन सत्र आ सम्मन समारोह रहैक। कार्यकमक सूची पूर्ण रहैक से नहि लगैत अछि। हं, अध्यक्षताक आ उदघाटनकर्ता प्राय: निर्धारित रहैक। लगभग ११वजे परिचय-पातक कार्यक्रम भेल। रायपुर अंचलक विभिन्न ठामसं मैथिल लोकनि आएल छलाह , कलकता , मूम्बई , वोकारो, जमशेदपुर, फिरोजावाद, समस्तीपुर, पटना, दरभंगा आ हम काठमाण्डू, नेपालसँ।



जनकपुरसँ राजाराम सिंह राठौर। जेहने कद काठी तेहने नाम। संगतिमे आत्मविश्वास बनल रहैत अछि।

परिचय पातक बाद भोजन भेलैक। तकरा बाद मूल समारोह शुरु भेल। अध्यक्षता हमरे रहे। अतिथि लोकनि मंचपर विराजमान भेलाह। छतिसगढ पर्यटन मण्डलक चेयरमैन कृष्णकुमार राय, विहार राज्य बाल संरक्षण आयोगक अध्यक्ष श्रीमति निशा झा, विख्यात शिक्षाशास्त्री एवं इतिहासविद् डा. कृष्णकुमार झा, इन्दिरा गान्धी राष्ट्रिय कला केन्द्र नई दिल्लीकेँ साउथ एशिया हेड डा. बच्चन कुमार, बक्शी सृजन पीठ छतिसगढक अध्यक्ष डा. रमेन्द्र नाथ मिश्र, प्रख्यात

गीतकार डा. बुद्धिनाथ मिश्र, मेटलोन विजिंगकेँ चेयरमैन राजेश्वर मिश्र, मोनेट इस्पात एवं पावर लि. खसरियाकेँ डाइरेक्टर जेपी शर्मा, हिन्दी मैथिली फैलोशिप संस्कृति मन्त्रालयक सदस्य पं. विद्यानन्द झा, छतिसगढ युवा चेम्बर अफ कमर्सक प्रदेशाध्यक्ष संजय वाजपेयी, डा. केष्कर ठाकुर, मैथिली विभागाध्यक्ष भागलपुर, सेल डाइरेक्टर सीपी मिश्रा सन सन दिग्गज व्यक्तित्वसभ मंचपर विराजमान छलाह।कार्यक्रमक सहयोगी संस्था सेलक डाइरेक्टर मिश्रा जी बड स्पष्ट शब्दमे कहलखिन्ह मैथिली सभ वर्गक लोकक भाषा थिक आ मिथिलामे रहनिहार सभ मैथिल छथि। एहि भावनाकेँ कार्यरुपमे लेबाक चाही। जे कहियोकाल नहि देखल जाइछ।

आई सँ लगभग चारि -पाँच सय वर्ष पूर्व मैथिल ब्राह्मण सभ विद्यादान एवं अपन कार्य कुशलतासँ एहि क्षेत्रक राजालोकनिकेँ प्रभावित कऽ अपन अपन सेवा प्रदान कएने हएबाक इतिहास अछि। इतिहासकार डा. रमेन्द्र नाथ मिश्र विभिन्न साक्ष्यक आधारपर महाभारत कालसँ एहि क्षेत्रमे ब्राह्मणक वासक तर्क रखैत छथि। ओना ओ ११७८ई.सं १६२४ ई.धरि पं.गंगाधर उपाध्याय,जनिका सन्र ११७८मे कलचुरी वंशी महाराज रत्न देव तृतीयके समयमे मिथिलाक भोर ग्रामसँ आनि मंत्री नियुक्त कएल गेल छलनि, सोलह पीढि धरि गढा-राजगुरु पदपर कार्यरत रहलाह।

डा. मिश्र (महाकोसल इतिहास शोध-पत्रिका,पृ-३४-३८) लिखने छथि जे सन १७०३क छतेबाडाक शिलालेख मैथिल पंडित भगवान मिश्रक लिखल छन्हि जे छतिसगढक प्रथम शिलालेख मानल जाइत अछि। पंडित लोकनि एत्त मठ

मन्दिर, सामन्तक दरबारमे ज्योतिष, तांत्रिक रुपमे समाजमे विद्यमान छलाह। जे आई धरि विभिन्न ठाम विभिन्न पेशामे छथि। मिथिलाञ्चल सँ ब्राह्मण पंडित सभक अतिरिक्त यादवसभ सेहो आएल छल जे अपन अपन पेशा आ व्यवसायमे संलग्न रहल आ आइयो महत्वपूर्ण सामाजिक अंग भऽ कऽ रहि आएल अछि। आनो आन जातिक लोक अछि एतए। हँ, एहि आयोजनमे यादव लगायत आन मैथिल सभक सहभागिता नहि देखने कतौ ठिके एखनो मैथिलक परिभाषा डेढसय वर्ष पुराने तऽ नहि मानल जा रहल अछि ? सन प्रश्न मोनमे उठैत रहल।ओना आयोजनमे तकर कोनो आभास नहि।आयोजक सोझराएल विचारक देखल गेलाह। मंच सँ कहल गेल रायपुर क्षेत्रमे १० हजारसँ उपर मैथिल छथि आ सभ अपनापर ठाढ, अपन अपन घरमे सुखसँ रहैत छथि। मोनमे कचोट एतबे जे पूर्खाक भाषा मैथिली नहि बाजि पबैत छथि। आ ने पूर्खाक बास डीहक ठीकसँ ठेकान भ पाबि रहल छन्हि। अपन डीह आ भाषा प्रति जे उद्याम प्रेम देखल, छटापटाहटि देखल मोन भाव विभोर भऽ गेल। सम्बन्ध जोडी, अपन पूर्वक गाम, वंशज खोजी- एतुक्का मैथिलक समान चाहना। सम्भवतः मिथिलाञ्चलसँ मैथिल विद्वान सभकेँ बजा बजा कऽ एतेक भव्य आयोजन करवाक पाछाँ इएह जुडवाक ललक भऽ सकैछ। अपन माटि प्रतिक लगाब भऽ सकैछ।

उद्घाटनक भार सेहो हमरे छल। पानसमे बत्ती बारि उद्घाटन कएल, जकरा आयोजक अशोक चौकरी, निशा झा लगायतक विशिष्ट व्यक्तित्व सहयोग कएलनि। तकराबाद सम्मानक क्रमशुरु भेल - पहिल सेलक डाइरेक्टर मिश्राकेँ, जनिका तुरत दिल्ली जाएबाक रहनि। हमरेद्वारा सम्मानित भेलाह। तकराबाद मिथिला विभूति सम्मान सँ अशोक जी हमरा सम्मानित कएलनि। मन्तव्य आ सम्मान दुनू संग संग चलैत रहल। हमरा द्वारा पं. विद्यानन्द झा, डा. रविन्द्र कुमार चौधरी, डा. बुचरु पासवान, चन्द्रेश लगायत एक दर्जन धरि विद्वान लोकनि सम्मानित भेल छलाह। सम्मानमे चादर, पाग, कलात्मक प्रतिक चिन्ह आ सम्मान पत्र।

वातावरण आर रोचक भेल जा रहल अछि। मन्तव्य जारी अछि। अपन अपन क्षेत्रक महत्वपूर्ण बात सभक खुलाशा भऽ रहल अछि। उद्घोषक डा. अशोक अविचलक मांजल स्वरलहरी वातावरणकेँ आर झमटगर बना रहलैक

अछि ।सम्मानक क्रम मनीष जीक इशारापर रुकि रुकि कऽ चलैत रहैत अछि।
जे जेहन महत्वक व्यक्ति हुनका नजरिमे तनिका तेहने सम्मानक लेल आग्रह आ प्रदान करबाक व्यवस्था। राति धरि चलल। हम अपन अध्यक्षीय भाषणमे नेपाल भारतक विचक राजनीतिक सीमा रेखा दू देशक नागरिकता भले प्रदान कएने हो, समष्टिमे हम अपनाकैँ मिथिलासँ आएल कहैत सम्बोधन करिते सभागारमे थपडी बजा जे स्वागत भेल ओ ठिके हृदयकैँ छु लेने रहए। नेपालमे होइत मैथिली गतिविधि, मिथिला आन्दोलन, राजनीतिक परिस्थिति आ नेपाल भारतक साहित्यिक, साँस्कृतिक सम्वन्धक कथा विस्तारसँ रखने रही। नेपाल, भारतक साहित्यकारक हेतु पुरस्कार एवं सम्मानक हेतु उदार अछि, सरकार सँ प्रदान कएल जाइत पुरस्कार व पुस्तक प्रकाशनमे समेत भारतीय सामेल छथि, मुदा भारतमे से नहि भऽ पावि रहल अछि, एहि पर विचार हो, साहित्य अकादमी प्रतिनिधि सोचथि -हमर आग्रह श्रोता स्वीकार कएलनि जे हुनका सभक ताली आ भावसँ बुझि पडल रहए। कार्यक्रमक समाप्तिक बाद खाना आ रात्री विश्राम छल।
२४ ता. कऽ कार्यपत्र प्रूस्तुति आ कवि गोष्ठी छलैक। विचार गोष्ठीक विषय रायपुर क्षेत्रक कवि साहित्यकार पं. बलदेव प्र. मिश्र, आंचलिक कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु आ पहिल नाटककार पं. जीवन झापर केन्द्रित छल, जाहिमे दू दर्जन सँ उपर विद्वत वर्ग भाग लेलनि। विच विचमे मनिष जीक आग्रहे सम्मानक काज सेहो होइत रहल। दोसर सत्रमे भारतकैँ विकासमे मिथिलाक योगदान' विषयपर भेल सेमिनारमे सेहो विचारसभ आएल। डा. वुद्धिनाथ मिश्रक
अध्यक्षता आ हमर पर्यवेक्षणमे भेल एहि सत्र समेतमे डा. मिश्र, डा. केष्कर ठाकुर, डा. अरुणा चौधरी, डा. योगानन्द मिश्र, डा. रामनरेश विकल, डा. शंकरदेव झा, डा. दमन कुमार झा, डा. अशोक मेहता, निक्की प्रियदर्शिनी, चन्द्रेश, डा. बुचरु पासवान, गुणनाथ झा, लगायतक विशिष्ट विद्वान लोकनि आलेख पाठ कएने छलाह। हम अपन मन्तव्यमे भारतक विकासमे मिथिलाक योगदानक क्रममे नेपालीय मिथिलाक योगदान सोहो सामेल कएल जएवा पर जोड देने रहिएनि, ओ श्यामानन्द मिश्रकैँ विदेश मंत्री बनि सेवा करबाक बात होइ, कृष्णप्रसाद कोइराला (मोरंग, मिथिला)क योगदान होइक आकि नेपालीय मिथिलासँ प्राप्त भाषा, साहित्यक प्रमाणिक ग्रन्थ सभक योगदान होइक, सभक

चर्च जरुरी। जकरा विद्वानलोकनि स्वीकार कएलनि।
रातिमे कवि सम्मेलन शुरु भेल, जाहिमे डा. बुद्धिनाथ मिश्र, जमशेद पुरक श्यामल सुमन, बोकारोक बुद्धिनाथ झा, अमिरीनाथ झा, शंकर देव झा, दमन कुमार झा, मीर अलीमीर, श्रीमति मुक्ता राजश्री, निक्की प्रियदर्शिनी, रायपुरसँ श्रीमति शशि दुवे, चन्द्रेश, अमर नाथ झा, मुम्बईसँ गंगाशरण शर्मा प्यासा, लगायत काव्य पाठ कएलनि। ई क्रम राति १२ बजे धरि चलैत रहल।
आ एहि तरहे दू दिना महोत्सवक कार्यक्रम सम्पन्न भेल। मुदा कल्हुका घुमनाई बाँकी छल। माने रायपुरक चिन्हबाक समय २५ ता. कऽ निर्धारित अछि। मोनमे उत्सुकता तँ अछि मुदा समयक आभाव खिन्न सेहो कएने अछि। २५ ता. कऽ भोरमे एक मिनि बस अओतैक आ सभ केओ धार्मिक स्थल सभक भ्रमण करत। इएह योजना छन्हि मनीष जीकैँ।
रायपुर छत्तीस गढ राज्यक राजधानी अछि। नयाँ राज्य पुरना राजधानी। रायपुरक संरचना एखनो पुरने ठाठ बाठमे अछि। तएँ मुख्यमन्त्री डा. रमण सिंहकैँ नयाँ रायपुर निर्माणक जरुरति पडलनि आ से १५-२० कि. मि. पूर्व दक्षिण कऽ भव्य भवन सभक निर्माणक संग प्रगतिपर अछि। जंगली झारपात, बज्जर जमीन कोसोदुर धरि हरियरीक नामो निशाान नहि रहितो रायपुर क्षेत्रक एहनो खेत देखल जाहिमे धानक उत्पादन अत्यधिक मात्रामे होइत अछि। वास्तवमे छतिसगढ अंचलकैँ धानक कटोरी कहैत जा रहलैए। छत्तीस गढ अंचल भेल करैत छल पहिने, जहिया राज्य नहि बनल छल। मध्यप्रदेशमे रहल एहि अंचलमे सरगुजा, रामगढ, विलासपुर, रायपुर, बस्तर, दुर्ग, राजनांदगांव जिल्ला पडैत छल। जनजाति आदिवासीसँ लऽ आधुनिक रहन सहन बला निवासी धरिक सुन्दर संयोग छैक, एहि अंचलमे जे आब राज भऽ गेल अछि आ रायपुर राजधानी। कहल जाइछ रायपुरक अठारह आ रतनपुरक अठारह गढ मिला कऽ छतिसगढ नामाकरण कएल गेल अछि। छत्तिसगढमे हैयवंशी, यदुवंशी, तुमाण वंशी, चेदिवंशी, राजासभक शासन काफी समय धरि रहल। एहि धरतीमे द्रविड आ आर्यक अदभूत समागम देखल जाइछ।
अगस्त्य ऋषि विन्ध्याचल पर्वत टपि कऽ एहि क्षेत्रमे आर्य संस्कृतिक प्रचार प्रसार कएने रहथि। सप्त ऋषिसभमे एक श्रृंगी ऋृषि रायपुरक सिहावा पहाडपर कठोर तपस्या कएने छलाह। सरगजाक रामगढकैँ कालीदासक मेघदुतक रामगढ

मानल जाइत अछि। जत्त निर्वासित यक्ष दू वर्षधरि बितौलक। रामगढमे विश्वक सभसँ प्राचीन नाट्यशाला 'सीतावेंगारा' अवस्थित अछि। विलासपुरक समीप शवरी नारायणमे सवरीद्वारा रामकेँ ऐंठ बैर खुआओल गेल रहैक से विश्वास अछि। एत्त लोमश ऋषिक आश्रम अछि। हिनक शिष्य श्रृंग ऋषिक तपोभूमि एकरा कहल जाइछ। त्रेतायुगीन कतेको कथास. एहि क्षेत्रकें जोडल गेल अछि।राजीमसं सटल जंगल दण्डकारण्यक रुपमे प्रचारित अछि जत ऋषि मुनीकें तंग कएनिहार राक्षससभसं राम बचौने रहनि।

छत्तीसगढक विभिन्न जिल्लाक साँस्कृतिक स्वरुप विभिन्न अवस्था आ परिस्थितिमे प्रभावित होइत रहलए। रायगढ आ सरगुजाक एक हिस्सा भोजपुरी आ मगही लोक संस्कृतिसँ प्रभावित अछि तँ रायपुरक नम्हर पूर्वी हिस्सा उडिया लोक संस्कृतिक प्रभाव क्षेत्र पडैत अछि। रायपुर क्षेत्रमे कविरपथी आ सतनामी परम्पराक व्यापक प्रचार प्रसार अछि। रायपुर क्षेत्रक प्रमुख व्यक्तित्वमे गुरुधासीराम आ पंडवानी गायकीकेँ विश्वस्तरधरि पहुँचएबाक सामर्थ्य रखनिहारि तीजनवाई आ ऋतु वर्मा छथि। रायपुरक प्रमुख चौक गुरुधासीराम स्तंभ निर्माणक संग हुनके नामपर अछि।

'सीताबेगरा' लगायत आन क्षेत्रमे रामकथाक अनेको प्रसंगकेँ जुडल हएबाक विश्वासमे एत्त राममंदिर सभक निर्माण कतेको ठाममे देखल गेल। तहिना कृष्णकथा पंडवानी रुपमे विख्यात अछि। महाभारतोसं कतेक प्रसंग एतुक्का लोकविश्वासमे विद्यमान अछि।

२५ ता. कऽ भोरमे ९ बजे धरि बस अएबाक सूचना भेटैत अछि। भाई चन्द्रेशक छेकल सीटपर बैसैत छी। बस राजीम कुम्भ दिश प्रस्थान करैत अछि। बाटमे चौडगर नव बनल सडक, नव नव भवन, प्रगति दिस बढैत छत्तीसगढ शासनक डेग मन मुग्ध कऽ रहल अछि। विहारमे सतीशक विकास आ छत्तीसगढमे डा. रमण सिंहक विकास सरिपहुँ मोनकेँ हर्षिक कऽ दैत अछि। दुनू भाजपा शासित राज्य।

छत्तीसगढ विकासेक दृष्टिसँ नहि कला , संस्कृतिक विकासमे सेहो आगु अछि। एहि ठामक लोककला अन्तर्राष्ट्रिय ख्याती कमौलक अछि। रायपुरमे अवस्थित राज्यक लोककला एवं पुरातत्व विभागक छहरदेवालीमे अंकित लोककलाक बानगी मोनकेँ मोहि लैत अछि आ सडकक बीचमे बनाओल

विभाजकपट्टी(डिभाइडर)पर ठाढ भऽ देखैत रहबाक इच्छा होइत छैक। जीवनक प्रत्येक क्षणकेँ लोककलाक भाव भूमि बनौल गेल अछि जे कतौ ने कतौ मिथिलाक लोकचित्रक

स्मरण करा दैत अछि। हमरा सभक कलामे विषय पुष्ट आ स्पष्ट होइछ। एम्हरका कलामे आदीवासी छाप अवश्य दृष्टिगोचर होइछ। स्थापत्य कलामे लकडीक काज बेसी होइछ। मंदिरधरिमे एकर व्यापक प्रयोग देखल जाइत अछि। एतुक्का लोक कलाकार लोकनि मूर्ति खुब गढैत छथि। एह, की गढैंत अछि जयपुरक कलाकारसभ। सरगुजाक सोनावाई देवालकेँ कलात्मक रुपें नीपि कऽ पोरा आ माटि सँ पशुपंछी, आदमी, सभक आकृति बनबैत छथि जे एकर चर्चा आ प्रसिद्धि अमेरिकाक सन फास्सिको धरि अछि। मोन पारु अपन गामघरमे महिलासभद्वारा एहिना पुआर आ माटि सँ बनाओल जाइत घोडा, हाथी, मनुक्ख, फूल, माछ, केछुआ आदि।

नाचगानमे अपने माहिर अछि छत्तीसगढक महिला सभ। सुआ नृत्य, ददरिया, करमा, फडी, नाचा, वांसगीत आदि एहने प्रसिद्ध लोकनृत्यसभ अछि जे विभिन्न मांगलिक आ अवसर विशेषगर आयोजित होइत रहैत अछि।

बाटमे देखैत छी चौरमे कारी वरसातीसँ झाँपल एक्के नमूनाक दर्जनो ढेरीसभ। उत्सुकता जगैत अछि। पत्ता लागल ओसभ धानक गट्टीसभ छैक। हजारो टन धान सरकार द्वारा किनि कऽ गोदामक आभावमे खेतमे चौकल गेल अछि। विधानसभामे आवाज उठौलापर खुल्ला राखल धानक बोरापर त्रिपाल चढल रहय कहादुन। औजी, तएँ ने धानक कटौरी कहैत छैक एकरा। ओना आब ने ओ देबी अछि आने ओ कराह। मुदा तैयो टुटल हथिसकर नौ घरके सांगर त छैहे। तएँ ने बाटमे पडैत नवांगाँवलग जाइत जाइत ४०-४५ धानक मिल एक पतिआनि सँ देखि पडैछ। ट्रकक ट्रक चाउर लदा बाहर पठाओल जाइत। चाउरक विशाल मंडी। ई सभ त धानेके कटोरीसं बहराएल छैक ने।

रायपुर सँ ४४ किमिक दुरीपर अछि राजिम कुम्भ। लगैए एही सालसं कुम्भक शुरुवात कैल गेल अछि। श्रीराजीव लोचन मंदीरसं छपल राजीम दर्शन पुस्तिकाक षष्ठम् संस्करण(२०१२ ई.)मे कुम्भक चर्च नहि कएल गेल अछि।

रायपुर सँ चलैत काल बडका बडका फ्लैश बोर्डमे राजिम कुम्भक चर्च आ आइए उदघाटनक सुचना रहैक। हमसभ उकटा अज्ञात खुशी सँ प्रफुल्लित

रही। इलाहावादमे कुम्भ तँ जारीए अछि ई नवका कुम्भ देखबाक अवसर तँ भेटल। वास्तवमे एहि ठाम राजिव लोचन विष्णुक मन्दिर प्रसिद्ध अछि। तीन नदि महानन्दी, पैरी आ सोंढुक संगम एकरा आर पवित्र स्थल बना देने छैक। तएँ भाजपा सरकारमे एहि संगमकेँ कुम्भकेँ रुपमे स्थापित करबाक विचार आएल होइक। आ से शासनसँ व्यापक इन्तजाम कएल गेल छैक। नवपुल, नव सडक आ स्नान आ पूजा अर्चनाक नव व्यवस्था।

आइए सँ एतुक्का कुम्भ प्रारम्भ भेल अछि जे दू सप्ताह धरि चलत। एकर शुभारम्भ मुख्यमन्त्री करताह जे सूचना देल गेल छल। बादमे पत्ता चलल जे उद्घाटन विधान सभा अध्यक्ष धरमलाल कौशिक कएलनि। राजिम कुम्भमे आएल श्रद्धालु विशाल क्षेत्रमे पसरल संगममे स्नान कऽ कुलेश्वर नाथ महादेवकेँ दर्शन पूजाक हेतु पक्तिवद्ध रहैत अछि। एहि सुयोगकेँ प्राप्त कएनिहारमे हम सभ तैंतिस गोटे रहैत छी -जाहिमे भाई बुद्धिनाथ झा (बोकारो), अमरनाथ झा (पुरी), चन्द्रेश, डा. बुचरु पासवान,डा.दमन कुमार झा,डा.शंकर कुमार झा,अमरनाथ झा, नाटककार गुणनाथ झा (कलकत्ता), डा. योगानन्द झा, डा. रामनरेश विकल, राजारामसिंह राठौर, पटनाक शिवकुमार आदि सामेल छथि।

जनश्रुति अछि जेबनवासक कममे राम,सीता आ लक्ष्मण एत्त विश्राम कएने छलाह। सीताद्वारा एकर निर्माण भेल तएँ हिनका उत्पलेश्वर महादेव कहल गेल एखन कुलेश्वर महादेवक नामसंख्यात अछि। बाढिक समयमे ई क्षेत्र डुबल रहैछ तएँ मंदीरकें उंचगोरा द क बनाओल गेल छैक। समयक कमि बाहरेसँ प्रणाम कऽ घुरि अएबालेल बाध्य करैत अछि।

बाटमे एकटा झोरा किनैत छी। आ दूगोट सीसा लागल फोटो ...। चलु कुम्भक सनेस तँ भऽ गेल। चलैत देखैत हमरा सभ पाँच गोटे फुटि गेल छी। विचार भेल ताबे हमसभ राजीव लोचन मन्दिरमे दर्शन कऽ ली। ओत्तऽ राजीव लोचल जीक तस्विर किनैत छी आ मन्दिरमे दर्शनार्थ पक्तिमे ठाढ भऽ जाइत छी। दर्शन पश्चात दश टकाक प्रसाद किनवाक व्यवस्था छैक। हम अहरगेसं पाँच गोट पुडिया किनि लैत छी -पटना, जनकपुर, बघचौडा आ काठमाण्डूक हेतु।

निचाँ मैदानमे ठाढ कएल बससँ खबर आबि गेल रहए जे सभ आबि हमरे सभक प्रतिक्षा कऽ रहल छथि। हम मन्दिर दिस ध्यान केन्द्रित करैत छी।



महानन्दी नदीक दहिन कात अवस्थित एहि राजिव लोचन मंदिर बहुत पैघ आकर्षक आ श्रद्धाक केन्द्र अछि। एत्त विष्णु भगवान प्रतिष्ठापित छथि। एकर अतिरिक्त अष्टभूजी दुर्गा, गंगा, यमुना, राम वराह, आ नरसिंहक मूर्ति सेहो दर्शनीय अछि। बहुत उत्कृष्टता पूर्वक मूर्तिक निर्माण कएल गेल अछि। शहरमे कारी पाथरक ध्यानमे लीन बुद्धक मूर्ति सेहो प्राप्त भेल छैक। एहि क्षेत्रमे सातम सँ लऽ एगारहम् शताव्दी धरिक प्राचिन मन्दिर पाओल जाइत अछि।

हमरासभकेँ बसपर पहुँचिते बस खुजि जाइत अछि। आब हमसभ चम्पारण जा रहल छी सन्त वल्लभाचार्यक जन्म स्थल आ हुनकेँ स्मृतिमे बनाओल भव्य कृष्णमन्दिर। रायपुर सँ एकर दुरी ६० किलो मिटर मानल जाइत छैक। हम सभ पहुँचैत छी तँ मन्दिरक भव्यता देखि दंग रहि जाइत छी। ओत्त नंगुर देखबामे आओल। बन्धुबर पासवान जी एकटा नंगुरक लगमे डेराइते बैसेत छथि आ हम फोटो खिचैत छिएनि। दुनू मस्त।

भितर कृष्ण कथासँ सम्बन्धित मूर्तिसभ स्थापित अछि। शिवमूर्ति अछि। मूल मन्दिरक दरवज्जा बन्द भऽ गेल रहैक। बाहरे सँ प्रणाम कऽ हमसभ आब धुरती बसमे आबि जाइत छी। वस रायपुर दिस बढल जा रहल अछि।

मुदा हमर मन एकटा आर पहेलीकेँ बुझवामे लागल अछि। ई सम्पूर्ण क्षेत्र आदिवासी जनजातिकेँ क्षेत्र रहलैक अछि। एहि क्षेत्रमे सामाजिक जीवनमे अन्धविश्वासक निक महत्व हएतैक। कहल जाइछ कोनो स्त्रीकेँ जखन 'टोहोनिया' घोषित कऽ देल जाइछ तँ ओकरा खुब सताओल जाइछ। जन विश्वास छैक जे ओ लोकक सोनित चुसैत छैक। ओकरा मारन, मोहन, उच्चाटन तीनु विद्या अबैत छैक। 'चितरादेव'केँ गाछपर चेथडा चढाओल जाइछ , औगनपाटकेँ बैलगाडीक करिया तेल चढाओल जाछ। चूरापाटकेँ चुडी। बैलक मूर्ती बना कऽ दूध चढाओल जाइछ। ई सभ तँ भेल जनविश्वासक बात। हम लोक संस्कृतिक एहि आदिम क्षेत्रमे लोकगाथा दिशध्यान केन्द्रित करैत छी। जिज्ञाशा व्यक्त कएलापर ज्ञात होइछ -एहि क्षेत्रमे बहुतो लोकगाथा गीत प्रचलित अछि जकर जडिमे उएह जादू टोना, भूत- प्रेत, योगी- योगीनी सभ रहैत अछि। एकटा सभसँ प्रसिद्ध लोकगाथा अछि -राजा वीर सिंहक। मध्य युगक एहि रचनामे अछि- एकटा योगी भिक्षा लेबाक लेल राजमहलमे जाइत अछि तँ रानीकेँ माछी बना अपना संगमे लऽ जाइछ। ओकरा खोजमे गेल राजा आ ओकर फौजके सेहो



पाथरक मूर्तिमे परिवर्तित कऽ दैत अछि। तखन राजकुमार योगीक एहि जादू मंतरक जालकेँ समाप्त कऽ अपन माता पिताकेँ उद्धार करैछ। वीरसिंह वीर तँ रहबे करथि, ओकर सपूत मदन सिंह हुनको सँ अब्बल रहथि। सुन्दर गायनद्वारा एहि गाथाकेँ गाओल जाइत अछि।

एकटा प्रसंग देखु -जखन रानीकेँ मााछी बना कऽ योगी लऽ जाइत अछि तँ राजा वीरसिंह अपन फौजक संग प्रस्थान करैत अछि। एहि गाथा गीतक टुकडी कतौ मिथिलाक लोक नायक सलहेशक युद्ध वर्णनसँ कतेक मिलैत अछि। ओहुना लोकगाथा गायनक एकटा खास विशेषता होइछ जे कोनो क्षेत्र, जनपदमे समान रुपेँ लागु होइछ। लोकगाथा सुननिहारकेँ रोचक लगैक, बान्हि कऽ रखैक तएँ ओकर पात्र आ परिवेशकें अलौकिक आ रहस्यमय बना क प्रस्तुत कएल जाइछ। ताहु दुआरे ने, डा. मणिपद्‌म सलहेसकेँ एहि दुनियाँसँ उपरक लोक बना देलखिन्ह अपन उपन्यासमे।

जेसे देखी ई खण्ड-

'नव लाख हाथी घोडा राजाकेँ तैयार
हाथी बला हाथी चढै, घोडा बला घोडा
गाडीबला गाडी अऊ, पैदल बला पैदल
बारा गाडा चावर धरे हावे
जोरा जोईकेँ वीर सिंह लेगये फौजे
पाँच हजार फौज रेंगावे
एक कोस रेंगे, दुहन कोस रेंगे
तीसरे कोसन तरिया डबरीमे जावे
बाबाकेँ डबरीमे परै है महिलानी
वीर सिंह तम्मु ला तनावे
राजाके तम्मू लगेहैं
आबे राजाके लगे कन्नाचं ....।

(भारतकेँ लोकगाथा गीत, भाग-२: उर्मिला वार्ष्णेय, पृ.-५३-५४)

हमरा सभक बस आब होटल सुधा रीजेन्सी लग अबैत जा रहल अछि। तीनक आमल भऽ गेल छैक। भूखसँ सभक हाल बेहाल छैक। भाई गुणनाथ झाकेँ ट्रेन पकडबाक छन्हि तँए सभ अगुताएल अछि। मुदा पहिने भोजन आ से

रायपुरक चर्चित होटल राजधानी थालीमे।

मनमे एकटा मलाल रहि गेल अछि - रायपुरक बाजार नहि देखलहुँ। किछु एतुका विशिष्ट सनेस लऽ जइतहुँ तँ नीक रहैत। से कछमछी हम चन्द्रेशक संगे राठौड बजारमे जा पुरा करैत छी ... किछु वस्तु खरिद कऽ। चलु इएह निशानी रहओ। ओना भाई मनीषक देल प्रतीक चिन्हक रुपमे बाबा विद्यापति अंकित सुन्दर कलात्मक काठक कलाकृति जाहिमे मिथिला विभूति सम्मानक संग हमर नाम पीत्तरिमे साटल अछि। सभ सँ उत्तम, नायब सनेस थिक हमरा लेल।

२६ ता. कऽ भोरे। साउथ विहार एक्सप्रेसमे भोरे ८:२० कऽ हमरा सभकेँ रीजर्वेशन अछि। सर्किट हाउससं एत्तहि होटलमे आबि गेल छी जे जएबामे सभक संग रहत। समय भ गेल छैक। हमसभ स्टेशन दिश बढि रहल छी। संगमे राठौड जी आ पासवान जी छथि।चन्द्रेशजी कतौ चाहक अमल मेटा रहल छथि। आ आब हम सभ स्टेशनपर छी। एकबेर गहींर नजरिसं रायपुरकें देखैत छी आ निर्धारित बोगीदिश बढि जाइत छी। संगमे अछि रायपुरक मधुर स्मृति, भाई मनीषजीक आदर भावसँ झुकल सम्पूर्ण देशयष्टि.......... ।

हमर देखल सुनल कोलकत्ता : डायरीक पन्नामे

२० दिसम्बर २००७

नेपाल रेलवेक दुटा इंजिन मध्य एकटा विगडल अछि। तएँ दिनमे दू ट्रेन मात्र। हमरा सभके भोरे ट्रेनसं जाए पडल। ९:१५ बजे जयनगरमे पहुंचलहु। ३:३५ बजे गाडी खुजैछ गंगासागर। एस ४ क ३३, ३४, ३५, ३६ खोजवाक कसरत कर पडल। भेटल त, सीट धएल। दरिभंगा अएलहुँ – चन्द्रेश नहि अएलाह। भेल जे वाटमे भेटताह। राति ८ वजे वाजल आ खानाक खोज पुछारी नहिं भेल तं पता लगौलहु – एहि ट्रेनमे खानाक कानो प्रबन्ध नहिं रहैछ। तखन समस्तीपुर जा विस्कुट, भुजिया, सुधाक मिठाई आदि किनि रतुका खानाक खानापुर्ति कएल। ट्रेनक घडघडाहटमे हमरा पुर्वोमे निन्न नहि होइत अछि, एहु बेर ठिकसँ नहि भेल। जे से .... भोर भेल।

२१ दिसम्बर २००७

हमसभ लेटसँ छी। ९:३० बजे सियालदह उत्तरलहु। हमरा सभके लेवाक

हेतु, स्वयं बैजू वावु गाडी ल ऽक ऽ आएल छथि, संगमे चन्द्रेश सेहो । ई एक दिन पुर्वे चल आएल छथि । शुद्धवात बजवाक हिनका आदति नहि छन्हि , एतहु सएह । हमरा सभके बाग वजारक दिगम्बर जैन धर्मशलामे टिकाओल जाइत अछि । ६२ नं कमरा । नेपालक हेतु खास ।

कलकत्तामे कार्यरत भातिज रामप्रतापके फोन करैत छी । ओ किछुए देरमे डेरापर आबि जाइत अछि । मारवाडी वासामे भोजन क ओकरा द्वारा छोडल मनोज (?) संगे किछु ठाम धुमवाले जाइत छी । विडला तारा मण्डल - विश्वक नम्बर वन तारामण्डल । भिक्टोरिया मेमोरियल आ तखन इलियट पार्क । भिक्टोरिया मेमोरियलमे ब्रिटिश शासक लोकनिक परम्पराके सुरक्षित राखल गेल अछि । ओहि समयक बस्तुपातके देखबाले उताहुल रहैए । इलियट पाक नवका प्रेमी - प्रेमीकाक मिलन स्थल । किछु देर पार्कमे वैसैत छी । तकर वाद रामप्रताप ओहि ठाँम रतुका खानाक हेतु जाइ छी । बुआरी माछक भ्फोर आ बढका बढका कुटिया । पता नहि, ओकरा कोना पता रहै जे बुआरी माछ हमरा खुबे नीक लगैत अछि । खाना खएलाक बाद डेरा पर मनोज पहुचा दैत अछि । आराम करैत छी !

२२ दिसम्बर २००७

कलकत्ताक भोर । ६ बजे उठैत छी । फ्रेश होइते चन्द्रेश जी एक गोटेक संग अबैत छथि – जोड छनि जे सोनागाछी जाइ । खूब सुनने छी । इच्छा जगैत अछि । रेवतीजी संग लागि जाइत छथि । संगमेक सन्तोष कुमार भ्फा ओम्हरे रहैत छथि - तासी मे । सभ मैथिल सभ ओम्हरे बैसैत छथि । सोनागाछीक कएकटा गल्ली । प्रवेश करिते देखैत छी पहडनियाँ सभ सजि धजि क आठे बजे बैसल । मोट-मोट, छोट, गोर । नजरि दौडबैत छी । ठीके ठाक । गोर चमरीक खेल छै सब ।

अरेरक सितारामक चाहक दोकानमे बैंसि किछु गमवाक अवसर भेटैत अछि । ४० वर्षक अनुभव छन्हि । कएकटा महिलाक इशारा आबि चुकल होइत छैक । सभ पाइ बलाके गमैत अछि । नहि, ठिक समय नहि अछि । भोरे भोर ......नहि,देखल जएतै ....।........

संगक सन्तोषसं किछु जानकारी लैत छी । जं पीबैत नहि छी

त एत्त इन्टरटेन्मेन्टक कोन अर्थ ?पहिल बेर दारु नहि पीबाक हिसाब किताब जोड लगैत छी । सन्तोष अपना धुनमे बजैत जा रहल अछि - एक स एक । न्यूनत्तम सय टकासँ हजारक । ओना कम उमेरक आ नीक ५०० टकामे भेटि जाइछ । सौंसे कलकत्ताके होटलमे सप्लाई होइछ । एत्त त पंजावी / बंगाली /नेपाली मण्डीवाली सभ सेहो । तीन चारि दिन काम नहि त खएनाई पर आफत । २-३ सय सँ ल ऽ पाँच सय हजार धरि । सडकक दुनू कात सजि क ठाढ २०-३० टकामे रीक्शा, ठेला वालाक हेतु । गार्डन सभमे ल क ऽ जाइत अछि लोक । आर बहुत रास बात,जकर हमरा लेल कोनो महत्व नहि रहैछ । महत्व त एतबे जे कतौ ने कतौ हमर कथाक प्लाट तैयार भ रहल छल जे बादमे हमर कथासंग्रहक शिर्षक कथा बनल .....हुगल उपर बहैत गंगा ।

एहि महल्लामे सामान्यत: अएला पर आग्रह, इशारा होइछ । छीनाछपटी नहि । केओ - केओ बदमाशी करैछ । मैथिल सभक क्लव अछि । ओत्त जानकारी भेटला पर छीनल वस्तु फिर्ता कराओल जाइछ । ५०० भोट छैक व्यत्र्म महल्लामे.....सन्तोष बहैत अछि ।। तएँ सभ ध्यान दैछ । सोनागाछी सेन्ट्रल मे छी हम सभ । - कालीघाट , दिश एकर जोड । पुरा कलकत्तामे ई व्यवसाय वेसी फलायल फुलायल अछि ।

४ बजे रंगना थिएटर । मैथिली दिवसक पहिल कार्यक्रम । आश्विनी कु चौवे, कलकत्ताक नगर निगमक मेयर भटट्‌चार्यक उपस्थिति । संयुक्तरुपें उद्‌धाटन होइछ । डा. नलिनी चौधरीक नृत्य देखल । लौगिया मिरचाई नाटक । नव तकनिक । अशोक भ्फाक अभिनय अति उत्तम । कएकटा प्रसंगक चित्र अपन कैमरामे उतारैत हम सभ किछु पुर्वे डेरा धुरि अएलहुं ।

२३ दिसम्बर २००७

२ बजेसँ गिरिश पार्कमे आम सभाक कार्यक्रम । सम्मान, कविगोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रम । हम सभ ठीक समय पर पहुचैत छी । पुस्तक विक्रेता शिव कुमारके गामघर ३० प्रति, जट जटिन ५ प्रति काल्हिए द ऽ देने छिऐ । आब हिसाबक बात छै , ओ अपना मने दैछ नहि, हमरा सभके मांगबाक पलखति नै । से आइ धरि भेटबो ने कएल अछि । ओत्त सभसं भेंटघाट होइछ । सुभाष चन्द्र यादवंस खासक ऽ । मन प्रशन्न भ जाइछ । अतिथि सभके मंचपर बजाओल जाइछ ।

गीत नाद आ अन्य कार्यक्रम बिच बैजुजी स्वयं हमरा तकैत लग अबैत छथि आ मँचपर ल ऽ जाइत छथि। तकरा बाद शुरु होइछ सम्मान कार्यक्रम। उडिया भाषाक साहित्यकारके मिथिलारत्नसं सम्मानित करवाक अवसर हमरा देल जाइछ। डा.रामदयाल राकेश, बदरी नारायणवर्मा सम्मानित होइत छथि मिथिलारत्नस। आह बदरीबाबू। आब हमरा सभक बीच नहि छथि।

सम्मान कार्यक्रम बाद कवि सम्मेलन प्रारम्भ होइछ। राम लोचन ठाकुर संयोजक छथि। हमहुँ पढैत छी गजल, जे एक राति पूर्व एतहि लिखने छी। बैजुजी हमरा तखने आग्रह करैत छथि जे किछु वजियौ। आन्दोलन आ सम्मेलनक सम्बन्धमे। हम लगभग १० मिनेट नेपालक वर्तमान राजनीति, मधेशी आन्दोलन, संघीय राज्य व्यवस्था आ मिथिला राज्य स्थापनाक आधार पर प्रकाश पाडैत छी। लोक ताली प ताली द ऽ रहल होइछ। हमर गजलक भावो सेहे रहैछ।

तकरा बाद कार्यकारिणी समितिक घोषणा हमरे द्वारा प्रस्तावित होइछ। – २००८ क अन्तराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक। जे चेन्नईमे हयवाक घोषणा डा. बैजु क ऽ चुकल छथि। हमरा उपाध्यक्ष बनाओल जाइछ। त हमरे सुझाव पर सचिव मे जीवनाथ चौधरी, संयुक्त सचिव मे सरस्वती चौधरी, राम नारायण देव के राखल गेलनि। तकरा बाद रंगारंग कार्यक्रम शुरु भेल। जे देर राति १०:३० बजे धरि चलल।

२४ दि सम्बर २००७

आइ कलकत्ता घुमवाक दिन रहैछ। राम प्रताप ८:३० बजे गाडी ल क आबि गेल अछि। हम चन्द्रेशके ल क ऽ जाए चाहैत छी। डेरापर बुआरी माछ मंगाओल गेल छै। खाना ओत्तहि छैक। बैजु बाबूसँ भेट क ऽ जाए चाहैत छी। सभसँ पहिने कालीघाटक काली मन्दिर। सभ व्यवस्था राम प्रताप करैत अछि। पंक्तिमे ठाड होइत छी, मुदा कम अछि लोक। पता लागल जे भी.आई.पी.क नामपर पाई देनिहार सभकें पहिने ढुका देल जाइछ आ दर्शन करा पठाओल जाइछ। पाइक खेल खुब होइछ। हम सभ जखन दर्शन क बहराईत छी त ११:३० भ ऽ गेल रहैछ। अर्थात आधादिन समाप्त। मन छोट भ ऽ जाइछ, तैयो राधा कृष्ण मन्दिर जाइछी जे बन्द रहैछ। तखन वोटानिकल गार्डन जाइत छी, जे विश्वक सभसं पैघ जैविक उद्यान होइछ। एत्त उद्भुत वरक गाछ अछि जे २५० वर्षक छैक।

मूल जडि १९२५ ई. मे समाप्त भ ऽ गेलै मात्र डाढिसं निचां आएल शाखा डाढि पर ई ठाढ अछि। अदभुत करिश्मा। हम एहि ठाम किछु फोटोग्राफ लैत छी। खास क ऽ कमलक फुल आ एकटा सुखाएल गाछक। हम अपन अगिला कविता संग्रहक मुखपृष्टक हेतु प्रतीक चित्र ....। चन्द्रेश जीक आश्वस्ति अर्थपूर्ण अछि। तकराबाद विद्यासागर सेतु होइत हावडा पुल जाइत छी। पुलपरस शांत बहैत हुगलीके देखैत छी। गंगाक धरतीस हुगलीक धरती धरि। डेरा अबैत छी - रामप्रतापक डेरा। खाना खाइत छी आ तुरत चलि पडैत छी – साइन्स सीटीक हेतु। कलकत्ताक अद्‌भुत दर्शनीय ठाम। जंगली जानवरक अन्तिम रुपक दर्शन एत्त होइछ। सात पार्ट अछि, जाहि मे समयाभावक कारणें दुतीन पार्टें हम सभ देखि सकैत छी। हं, स्पेश थियटरमे देखैत छी सौर्यक प्रारम्भिक खेल आ कलकत्ताक दर्शनीय स्थान सभक भिडियोक्लीप। भव्य आ आकर्षक। ३० टका लैछ एक टिकटक।

हम सभ जखन बहार होइत छी सांझ कं ७:३० भ ऽ गेल रहैछ। राधाकृष्ण मन्दिर जाइत छी। भव्य, आकर्षक मन्दिर। बगलमे कृष्ण जन्मक महत्वपूर्ण प्रसंग संगमरमरक मूर्तिमे। चारु कोण पर देवी देवताक मुर्ति, हनुमान, गणेश जी विशेष पूज्य।

आव सोझे डेरा दिश। बडा बजारक मछुवा बजार स्थित दिगम्बर जैन धर्मशाला अबैत छी। डेरापर विचार होइछ, समय बचल अछि किछु खरीददारी क ऽ लेल जाए। आगा जाइत छी आ सुहागन नामक एकटा कपडा दोकानमे पैसि ६ पीस साडी किनैत छी। १९०० ।- टकामे। डेरा अबैत काल रसोई होटलमे खाना खाइत छी आ डेरामे आबि सुतवाक उपक्रम करैत छी। चन्द्रेश आइ एत्त रह नहि चाहैत छथि – राति जाडे कठुअएलाह। तएँ हम सभ भोरक अशामे सुति रहैत छी।

२५ दिसम्बर २००७

आई निश्चितसँ उठैत छी। ९ बजे किशोरीकान्त मिश्र किताव ल ऽ अएवाक बात कएने छथि, प्रतिक्षा करैत छी। काल्हि हुनकास बात भेल छल। ओ विद्यापति स्मृति पत्रिकाक रजतजयन्ति अंक देखबैत इतिहासमे ल जाइत छथि। ओहिमे छपल यति त्रृति दृखबैत डाकटिकट पर विद्यापतिक चित्र कोना आओल

तकर सविस्तार सुनबैत छथि, नीक लगैत अछि। एखन एकटा पुस्तक ल अएबाक बात कहने छलाह से बाट जोहैत छिएन्हि ।ओम्हर नवोनाथ मिश्र आबि गेल छथि ,हम अपन नवका पुस्तक दैत छीयनि, आरो लोकके हेतु।। लीअ किशोरी बाबू सेहो आबि गेलाह ।हम किताब लैत छी आ आभार प्रबट करैत छिएन्हि। बैजु बाबु अवैत छथि। सभकें विदाई दैत छथिन्ह। हम सभ खाना खाइए कऽ जाए चाहैत छी मार्केटिङ। से रसोईमे खाना खा टैक्शी सं न्यु मार्केट (धर्मतल्ला) जाइत छी। समयाभावसँ आर वेसी खोजवीन नहि भऽ पबैत अछि। कपडा आदि लऽ २ बजे धरि अबैत छी। जएवाक रहैछ तएं सभ केओ सियाल दह पहुचैत छी। आ अपन - अपन सीट धऽ लैत छी। फेर निचैनस अएबाक मने मन संकल्प करैत कोलकत्तास विदा लैत छी।

२६ दिसम्बर २००७

भोरे ८:३० बजे जयनगर उतारि दैत अछि। नेपाली गाडी मे १० बजे चढि १२:३० धरि जनकपुर पहुँचि जाइत छी।

भारतीय जन संचार संस्थानमे किछु दिन

एक दिन वीरगंज सँ भारतीय महावाणिज्य दुतावासक संचार प्रभारी काउन्सलर जाँन एस सीलसी जीक चीरपरिचित स्वर टेलिफोनमे अभरैत अछि - 'कापड़ि जी , तैयार रहु दिल्ली जएबा लेऽ। कार्यक्रम जल्दीए पठाएब।'

संकेत तँ पूर्वे सँ छल मुदा समयक ज्ञान आब भेल। तैयारीक मन:स्थितिमे आबि गेलहुं। तकरा बाद तँ वीरगंज सँ निरन्तर सम्पर्क होइत रहल । फर्म आएल, भरल गेल , पठाएल गेलै। जनकपुर-काठमाण्डू , काठमाण्डू-जनकपुरक प्लेन टिकट लऽ लेवालेऽ कहल गेल। जकर पाइ काठमाण्डूमे भारतीय दूतावासक किछु क्षणक विश्राम अवधीमे दऽ देल जाएत आ काठमाण्डू -दिल्ली काठमाण्डूक टिकट सेहो।

जुलाई १५कें दिल्ली पहुँचबाक रहैक। १६ ता. सँ २५ ता. धरिक विशेष कार्यक्रम नेपालक पत्रकार सभक हेतु निर्धारित रहैक। यद्यपी एहिमे बरिष्ठ पत्रकार (क्ष्मलष्यच व्यगचलबष्कित)क हेतु कहल गेल रहय मुदा किछु कनिष्ठोसभ सामेल रहय। मुदा सभ चौचंख, सक्रिय आ किछु जानबाक इच्छा रहनिहार सभ।

१५ जुलाई अर्थात ३१ गते अखाढक प्रतिक्षा जोर पर छल। सामानसभ तैयार

कएल आ मानसिक रुपे दू सप्ताहक प्रवासक हेतु अपनाकेँ तैयार कऽ चुकल छलहुँ।

१५ जुलाई २००७ , रवि

तैयार भऽ लगभग ९:३० बजे एयर पोर्ट पहुँचैत छी। जहाज उडबामे किछु देरी छैक। हरि आबि चुकल रहैछ। हम टिकटक विधि व्यवहार कऽ समान जचाँ कऽ राखि दैत छी। बुद्ध एयरक जहाज अबैत अछि। हमसभ चहरि काठमाण्डू एयरपोर्ट पर उतरैत छी। सामान उठएबाक ठामपर जाइते एक गोटे पुछैत अछि- तपाई राम भरोस कापडी हो ..। हमरा बुझवामे कनेको भांगठ नहि रहैछ- दूतावास सँ आएल हयत। सामान लऽ बाहर लागल कारमे राखि कऽ हरि आ राजविराज सँ आएल बैद्यनाथ झाक संग दूतावास विदा भऽ जाइत छी। हँ विचमे पत्रकार महासंघक परिसरमे वीरगंजक साथीसभ भेटैत छथि।।

आइ रवि छैक तएँ छुट्टी छै, मुदा गोपाल वाग्ले अपने निवासमे विश्रामक व्यवस्था कएने छथि। कार सँ उतरिते विविध भारतक सम्पादिका आ काउन्सलर मीना गुप्ता स्वागत करैत बाजि उठैत छथि -आपका कार्यक्रम अच्छा रहा ...। माने वैशाख १ आ २ गते कऽ आयोजित हिन्दी कवि सम्मेलन दऽ कहि रहल छलीह।

सभतर वाग्ले साहब सभ सँ हाथ मिला हालचाल पुछै छथि। खानाक ओत्तहि व्यवस्था छैक। भारु बनाओल जाइछ। जाहिमे पंकज मल्लिक जी सहयोग करैत छथि। भोजन कऽ सभ केओ एयरपोर्टक हेतु तैयार भऽ जाइ छी। दूटा गाडी हमरासभकें लगभग २:३० बजे त्रिभूवन अन्तराष्ट्रिय विमान स्थल पहूँचा दैत अछि।

काठमाण्डू सँ दिल्लीक हेतु ४:१० बजेक उडान निर्धारित अछि। हमसभ २:३० बजे एयर पोर्ट पहुँचा देल गेल रही। सभ विधि पुरा करैत जखन गेट नं. ३क कोठरीमे पहुँचैत छी तँ ओ उमटाम भरल रहैछ। ओत्तहि खाली कुरसी देखि बैसि रहैत छी। ४:१०क प्रतिक्षा करैत रही कि फेर सूचना पार्टीमे किछु लिखल देखि पडैछ। रुपन्देही सँ आएल सहयात्री महेश्वरजीकें कनेक परिछा कऽ देखबाले कहैत छी - ओ जाइत छथि आ सूचना दैत छथि - आब प्लेन ५:२० बजे उडत। अर्थात ठीक एक घंटाक देरी। मन अकछा जाइत अछि।

एहि बीच दोहा , ढाका आ कलकत्ताक यात्रीसभकें बोलाबा आबि गेल रहैछ।

हमसभ निरिह भावे यात्री सभकेँ अपन अपन प्लेन दिश जाइत देखैत छी ।

अन्ततः दिल्लीक यात्रीसभकेँ सेहो बोलाबा अबैत छैक । सभ सम्हारि कऽ आगाँ बढैत छी । कएकटा जाँच सँ तँ बहरायले छलहुँ - एत्त फेर सँ चेक होइत अछि । ग्राउण्डमे ठाढ एयर इण्डियाक बस चढैत छी । बस इन्डियन एयरलाइन्सक एयरबस धरि पहुँचबैत अछि । किछु गोटे पछे रहि रहि गेल छथि । पुनः दोसर खेपमे बसमे औताह । हमसभ हरियरका वोर्डिंग पास धारी अर्थात इकोनोमिक क्लाश बला छी - दहिन कातक प्रवेशद्वार सँ जाइत छी । पुनः शुरुएमे समानक गहन जाँच होइत अछि , तकरा बाद बोर्डिङ्ग पासपर मोहर लगैछ । एक डेग आगाँ बढिते फेर सुरक्षा जाँच । अंग अंगक । आश्वस्त होइते आगाँ बढबाक संकेत भेटैत अछि । एक आधा डेग आगा बढिते एयरलाइन्सक कर्मचारी बोर्डिङ्ग पास मंगैत अछि आ अधकट्टी फाडि पुनः घुरा दैत अछि । एयर बसमे प्रवेश करैत छी । एयर होस्टेश मिस सीमा (प्रायः इहे नाम रहैक) भव्य मुस्कीक संग स्वागत करैत अछि । हम सभ भितर जाइत छी । जत्त दोसर सहयोगी महिला बोर्डिङ्ग पास देखि सीट नं. खोजि कऽ बैसवाक संकेत करैत अछि । आश्वस्त भऽ वैसैत छी ।

प्लेन ५:५० बजे रनवे छोडैत अछि । एहि मासमे आकासमे मधेश काफी लागल रहैत छैक । से तकर प्रकोप हमरा सभकेँ कएबेर महशुस भेल । यद्यपी एयस बसकेँ सेहो १५ /२० मिनट धरि पहाड आ जंगल सँ बहरएबामे लगलैक । जखन समतल तराई मे आएल तँ ततेक ने उपर भऽ चुकल छल जे निचाक किछु देखब संभव नहि, बरु मधेशक पहाड यत्रतत्र देखि पडल ।

उडलाक ४५ मिनेटक बाट जे निश्चय भारतक कोनो क्षेत्र छल हएतैक - मेघक करतब सभ देखबाक अवसर भेटल । जहाज काफी उपर उडैक - निचा मेघसभ एना वुझि पडैक जेना वांगक स्वच्छ आ उज्जर धपधप रुइक गोलाकेँ एक्के ठाम जमा कऽ कोनो चादरि विछा देल गेल होइछ । किछु मेघ आकाशमे छितराएल रुईक फहा जकाँ । गौर सँ देखलापर ई मेघ सभक उडैत रुप जेना आकासक परीसभ प्रकृतिक गमककेँ रुईक फहाँमे भरि अपन अपन नाकक पुरामे सुरकि रहल हो । लगैक जेना ठीके सभ दिश एहने स्वच्छ , पवित्र गमकक गम गमाहट पसरि रहल हो ।

ई कल्पनाकेँ तत्काले झटका लागल जखन भारी भरकम सय सँ वेसी यात्रीकेँ

ढोइत जहाज थरथरा उठल आ तंद्रा भंग भेल । एयर होस्टेसक मेही आवाज स्पीकर सँ गुंजल - अपन अपन सिट बेल्ट बाँन्हि ली .. । माने करिआ मेघक झुण्ड बीचमे आबि गेल छल आ विमानकेँ झकझोरि रहल छलैक । मुदा ई अवस्था ५ /१० सेकेण्ड सँ बेसी समयक लेल नहि रहल । पुनः पुरने दृश्य अबैत अछि, जाइत अछि । करिआ मेघ कएक बेर अपन जलबा देखबैत अछि .. ।

आब १० मिनेटक बाट पर छी । दिल्लीक लगक गाम शहरसभ देखि पडैत अछि । जहाज मेघ सभकेँ चिरैत निचाँ तरि रहल अछि । पाँच मिनेटक बाट ... । आर फरिछ भऽ रहल छैक । सडक- घर आ हरियर कंचन श्यामल धरती ।

एयर होस्टेसक चिन्हल आवाज फेर सँ सूनि पडैछ - दिल्ली एयर पोर्टपर जहाज उतरबाक लेल तैयार अछि । अपन अपन बेल्ट बाँन्हि लिअ । यात्रामे जे असुविधा भेल हो - तकरा लेल खेद अछि .. ।

हमसभ सकुशल एयरपोर्टपर आबि गेलहुँ इएह कम अछि .. । इदिरा गान्धी अन्तराष्ट्रिय विमान स्थल टर्मिनल । विशाल - पाँच किलो मिटर सँ बेसीक क्षेत्रफल आ लम्वाई । एयरवस सँ उतरि दोसर बसमे चढि निकास द्वार धरि जाइत छी । भितर प्रवेश कएलापर अध्यागमन विभागक औपचारिकता पुरा कऽ आगाँ तीन नं. क्षेत्रमे सामान लेबाले जाइत छी । चारु भर तकैत छी - सामाने नहि । वेग कत्त छुटि गेलै । खोजवीन होइत अछि । पता लगैत छैक किछु सामान आओर छैक । चलैत चादरपर अबैत बेग देखि पडैत अछि । झटकारि क लग पहुँचि हाथे सँ लोकि लैत छी । हं, हमरे अछि । भाई वैद्यनाथ झा ट्रली पकडने रहैत छथि । ओहिमे लादि आगाँ बढैत छी । मास मिडिया कम्यूनिकेशन सँ हमरा सभकेँ लेवाले बसक संग एकटा अफिसर आएल रहैत छथि । हमसभ अपन अपन सामानक संग बसमे सवार भऽ संस्थान दिस विदा भऽ जाइत छी ।

संस्थान शहर सँ काफी दुर छैक - एकांत ठाममे । ओत्तय अन्तराष्ट्रिय होस्टलमे रहबाक व्यवस्था छैक । सोझे होस्टल भऽ जाएल जाइत अछि । आगाँ हम आ हरी छलहुँ तएँ पहिल च्वाइस १ नं. कोठरी जे सोझेमे होइत अछि - पैस जाइत छी । विजली बारलापर कोठरी ठिके ठाक रहैत अछि । दू बेड, कम्प्युटर रखबा लेल दूटा टेवल । कपडाक आलमारी । एटैच बाथरुम । पंखा, एसी.. । मन हल्लुक होइत अछि ।

फेस होइत छी तँ फोन सँ खानाक हेतु बजाहटि होइत अछि .. । हमसभ

डायनिङ्ग हलमे प्रवेश करैत छी। वातानुकुलित डायनिङ्ग हलमे खाना राखल सादा .. । रोटी किछु भातक संग दू टा तरकारी। बादमे एक कटोरी खीर . । सामान्य खाना रहैछ। हरी तँ मुँह विचकबैछ .. । हम तँ पहिने बुझि कऽ सिद्धान्त पर रही।

दिल्ली प्रवेश करैत अपन इण्डियन फोनकेँ लगएबाक प्रयास करी - गामपर सभ प्रतिक्षामे हयत। मुदा स्मार्टक सीम काजेने करैछ। ई दुख कनेक भेल .. । मुदा बादमे देखल जएतैक।

१६ जुलाई २००७

आइ दश बजे सँ क्लास प्रारम्भ हयबाक छैक। नहा-धो कऽ ८:३० बजे डायनिङ्ग हलमे पहुँचि जाइत छी। सभ केओ, परोठा, तरकारी आ पाकल केराक जलखई करैत छी। तकरा बाद संस्थानक सेमिनार हलमे हमरा सभक क्लाश प्रारम्भ होइत अछि। सभ सँ पहिने एके श्रीवास्तवजी सभकेँ स्वागत करैत कार्यक्रमकेँ बारेमे विचार विमर्श करैत छथि। ई तय होइत छैक जे सभ केओ अनुभवी लोक सभ छी तएँ ओतेक हार्ड एण्ड फास्ट लेशन नहि राखल जाए , हँ- प्रश्नोत्तर व्यापक हो, ज्ञान वृद्धि जाहि सँ होइक।

कार्यक्रम अनुसार सँ चारि गोट विशेषज्ञ दिन भरिक कार्यक्रममे अपन अपन विषयपर बड मेहिन सँ विचार रखैत छथि। सहभागी अधिकांश व्यक्ति प्रश्न आ जिज्ञाशा रखैत अछि। जाहिमे नेपालक वर्तमान राजनीति सेहो बेर बेर चर्चक विषय बनैत अछि।

नेपालक राजनीतिक केन्द्र विन्दु दिल्लीए अछि ई वात स्पष्ट रुपें सहभागि लोकनि कहैत छन्हि।

साँझमे मेट्रो घुमएबाक कार्यक्रम अन्तरगत हमरा सभकेँ केन्द्रिय सचिवालय सँ विश्वविद्यालय धरिक यात्रा कराओल जाइत अछि। मेट्रोक यात्राक फूट आनन्द रहल। हँ, विश्वविद्यालय पहुँचि घुरबाक समयमे शत्रुधन, दिपेन्द्र आ विनोदकेँ सीम कार्ड लेबाले लगभग ४५ मिनटक समय लागब बहुतोकेँ नीक नहि लगैत छैक। टीमक एकटा नियम होइत छैक ने ! जे से राति लगभग ९ बजे मेस घुरैत छी। दिनमे मुर्गिक मासुक संग खाना रहैक , रातिमे माछक संग खाना छैक। खाना विहार किंवा नेपाल जकाँ चहटगर त नहि छैक मुदा ठिकेठाक कहबाक चाही। माछ उसठ लागि रहल छलैक - जेना वर्फक वा फ्रिजक हो ... ।

सुतवाक तैयारी कऽ रहल छी।

१७ जुलाई २००७ मंगलदिन

दश बजे क्लाश रुममे पहुँचैत छी। आइ हम आ हरी पाँच सात मिनट लेट भऽ गेल छी , तएँ सम्पूर्ण कार्यक्रम हमरे सभक प्रतिक्षामे रुकल छलै। जाइते कार्य प्रारम्भ भऽ जाइछ। एकटा फिल्म देखाओल जाइछ - नाइन्थ मन्थ फाइटर फँर फ्रिडम .. । बंगला देशक बनबाक अन्तरकथा ओहिमे देखाओल गेल होइछ। पाकिस्तानी सेनाद्वारा कोना बंगलादेशी सभकेँ सतएबाक स्वरुप आ ताहि सँ भागि लाखो शरणार्थीकेँ भारत प्रवेशक मार्मिक कथा .. । भारतद्वारा हस्तक्षेप - पाकिस्तानी सेनाक आत्म समर्पण .. । मुजिवुररहमानकेँ जेल सँ छुटब - पहिने भारत जाएब , आभार प्रकट करैत वंगला देश जाएब- ढाकामे भव्य स्वागत... ।

भारत सरकारक स्वीकृति सँ बनाओल गेल ई डक्युमेन्ट्रि बादमे राकि देल गेलै। जखन निजी हल भाडामे लऽ एकर प्रदर्शन एकर निर्माता कएलक तँ एक राति ११ बजे दूरदर्शन सँ एकर प्रदर्शन कऽ एकरा सदैबक हेतु डिब्बामे बन्द कऽ देल गेलै।

डाकुमेन्ट्रि बाद चाहक समय होइछ। हम सभ हलमे अबैत छी। हम चाह नहि पिबैत छी तएँ सरदारजी संस्थान सँ १४ दिनक जे भत्ता भेटल रहैछ तकरा लेबा लेऽ काउन्टर पर लऽ जाइत छथि। १४ दिनक खानाक सभ खर्च काटि कऽ २५१५/- टका नगद हमरासभक हाथमे दैत अछि। चलु किछुओ तँ किनल जा सकैछ। तकरा बाद दरभंगा विहारक सुबोध कुमार मास मिडियापर लेक्चर देबऽअबैत छथि। देश विदेश घूमल - मीडियापर रिसर्च करैत .. । बादमे परिचय होइत अछि। ओ नीक मैथिली बजैत छथि -पताक आदान प्रदान होइत अछि। ताहि सत्रमे एकटा गोपाल नामक व्यक्ति सेहो पत्रकारिताक भूमिका पर टिप्पणी करैत छथि। खास कऽ स्थानीय भाषाक प्रभाव आ तकर रोचक प्रस्तुतिक विषयमे चर्च होइत अछि।

लंचक समय भऽ गेल रहैछ। सभ गोटे लंचपर अबैत छी। खाना खा तुरत मिडिया हाउस दिश घुमबाक कार्यक्रम छैक। तैयार भऽ निकलैत छी। प्रो. श्रीवास्तव हमरा सभक संग छथि। भयंकर गर्मी .. अहा दिल्लीक गर्मी जनकपुरोक गर्मी सँ आगा अछि।

हमसभ हिन्दुस्तान टाइम्स विल्डिङ्ग पहुँचैत छी । के . के. बिडलाक भव्य भवन । हिन्दुस्तान दिल्ली संस्करणक सम्पादकीय आ समाचार विभागक पत्रकार पदाधिकारीसभ सँ लगभग ४५ मिनेट धरि अन्तरक्रिया होइत अछि । हुनका सभक जिज्ञाशा नेपालक राजनीति, मधेश आन्दोलन, राजाक भविष्य , संविधान सभाक निर्वाचन राजाक चलखेल , आदिक विषयमे छलनि । जकरा महेश्वर जी , शर्मा जी , पंक्ति लेखक विस्तृत रुपें देलक । ओत्त चाह भेलैक । लिफ्टक कारणे हमसभस सोझे तेसर मंजिल (निचाँ सँ पाँचम) पर अवस्थित बीबीसीमे जाइत छी । संस्थान सँ हमरासभक हेतु समय लऽ लेल गेल रहैक । प्रशासनिक प्रमुख तँ बहरा गेल छलीह मुदा निरज निराश नामक व्यूरो मैनेजरकँ हमरा सभक हेतु छोडि गेल छलीह । ओ अएलीह तँ हमसभ नेपाली छी बूझि नेपालीमे बात करऽ लगलीह । हमसभ अचंम्भित भेलहुं , ओ सिक्किममे नेपाली पढने हयबाक बात कहलनि ।

निरजजी हमरा सभकँ पुरा बीबीसी घुमौलनि । समाचार सम्पादन कक्ष , रेकर्डिङ्ग स्टूडियो उच्च कोटिक रहैक । तहिना बीबीसीक टी. भी . च्यानलक काज सेहो होइत । फुटेज सम्पादन कक्ष आ पठएबाक लेल तैयार कक्ष । एफएम रेडियोक सेहो संचालन कऽ रहल अछि । रेडियो वन । सभ सँ बेसी रेडियोक स्टाफ होइछ ...।

बीबीसीक कैन्टिनमे हल्लुक जलखईक आग्रह कएल जाइत । हमसभ पहिने शरबत पिबी निचाँ उतरैत छी । एही बीच संजिव जी सँ भेंट कराओल जाइत अछि जे इडियाक चीफ छथि , अत्यन्त शालीन व्यक्तित्व .. ।

निचाँ दिश अबैत बीबीसीक कैन्टिनमे हल्लुक जलखईक आग्रह कएल जाइछ । हमसभ पहिने शरबत पिबी निचाँ उतरैत छी । एही बीच संजिव जी सँ भेंट कराओल जाइत अछि जे इडियाक चिफ छथि , अत्यन्त शालिन व्यक्तित्व ।

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार प्रकाशन विभाग जएबाक तैयारी होइत अछि , मुदा सर्लाहीक कार्की जीक लग्घी एना कऽ ने हुनका बीबीसी विल्डीङ्गमे घुरिऔलकनि जे समय नहि बचलै ओत्त जएबाक । पुस्तक सभ खरीद करबाक योजना धराशायी भऽ गेल । जे से हमरासभकँ इडिया इन्टरनेशनल सेन्टर जे मैक्समुलर मार्गपर अवस्थित अछि लऽ जाएल गेल । जत्त ग्रामीण महिलासभ द्वारा एकटा स्थानीय भाषामे कोना अखबार चलाओल गेलैक तकर डाकुमेन्ट्रि

फिल्म एक घंटाक देखएबाक रहैक । हमसभ ओत्त आयोजन कएल गेल जलखई आ चाहक आनन्द लेलहुं आ तत्तहि भेट भऽ गेलीह ओहि आयोजन संस्थासँ जुडलि जया । निरन्तर संस्थाक योगदान रहैक ओ अखबार निकालबाक ।

एखन चित्रकुट आ वादा सँ बहराइत अछि । दुनूक सम्पादीका क्रमश: मीरा आ कविता सँ भेंट होइत अछि । मीरा कहैत अछि- मुख्य धाराक अखबार गाम जा नहि पबैत छल , जाहि सँ ने ओहि ठामक समस्या बाहर अबैत छलै आ जँ ओहि अखबारमे सरकार दिशसँ कोनो नव सहयोगी योजनाक खबरि छपबो करैछ तँ तकर जानकारी ग्रामीण क्षेत्रमे भऽ नहि पबैछ ।

तएँ ग्रामीण क्षेत्रकँ प्रभावित करबा ले सामूहिक रुपें ई अखबार निकालल गेल - खबर लहरिया । बुंदेल खंडक भाषामे । लगभग १८००-२००० तक छपैत अछि जे दुनू क्षेत्रक ग्रामीण इलाकामे जाइत अछि । दू रुपैआ दाम होइतो ग्रामीण क्षेत्रमे एक टका सँ बेसी नहि भेटि पबैछ - ओकर एकटा सहयोगी महिला कहैत अछि । अखबारकँ निरन्तरताक दिशसँ शालिनी जोशी देखैत छथि । हम जया जी सँ निरन्तरक इमेल मंगैत छी । ओ लिखबैत छथि - लष्चबलतबच२खकलषअफ ।

सेंटरक परिसरमे पूर्व दिश साथीसभ बचल समयमे फोटो खिचैत छथि । हम श्रीवास्तव जी सँ स्थलक विशेषताक बारेमे पुछैत छी, कारण एकरा स्मारक जकाँ बनाओल देखि पडैछ । ओकहैत छथि - आइ सं एक सय वर्ष पूर्व द.अफिकामे महात्मा गांधी सत्याग्रहक प्रारम्भ कएने रहथि । तकरे स्मृतिमे ई स्मारक बनाओल गेल । स्मृति पटलपर मार्टिन लुथर किंग आ महात्मा गांधीक विचार अंकित कएल गेल अछि ।

हमसभ बस पकडि राति ८ बजे धरि संस्थानक होस्टल घुमि अबैत छी । अझुका भ्रमण अनेक मायनेमे सार्थक अछि ।

रातुक खाना खा आब सुतबाक तैयारीमे लागि जाइत छी । प्रो. श्रीवास्तव ठीक ८:३० बजे भोरे तैयार भऽ बसपर पहुँचि जएबाले कहि चुकल छथि । सभ गोटे मारुति कारखाना देखबाक ले जाएत ।

१८ जुलाई २००७ बुधदिन

आई ९:३० बजे सँ मारुती उद्योग देखबाक कार्यक्रम रहैक, सभ तैयार भऽ समयेपर परिसरमे पहुँचि गेल रही । मुदा मारुती उद्योग सँ केओ आबि हमरा

सभकेँ लऽ जइतथि से एखनधरि नहि आएल हएबाक कारणें लगभग १०:१५ बजे एत्त सँ प्रस्थान कएल ।

मारुति उद्योग भितर जाइते शुरुएमे मारुति लिखल कैप देल गेल आ भितर जएबाक लेल हेलमेट आ विशेष प्रकारक चश्मा । शुरुमे मि. अरोडा मारुति उद्योगक अवस्था बारेमे विस्तृत जानकारी देलनि, जकर विश्लेषण पत्रकारसभ प्रश्न सँ नीक जकाँ कऽ सकलाह ।

हमरासभक संग मि. अरोडा आ अन्तराष्ट्रिय बजार व्यवस्थापनक म्यानेजर ए.के. कौशल छलाह । जापान आ कोरिया सँ मुख्य रुपे मंगाओल जाइत गाडीक बडीक हेतुक चदरा कटिङ्ग सँ लऽ गाडीक विभिन्न अंगक निर्माण आ संयोजनक प्रक्रिया देखैत अन्तमे गाडी अन्तिम चेक सँ पास कऽ बाहरक विशाल कम्पाउण्डमे एक पतियानी सँ खडा होइत- देखल । मि. अरोडाक दावा छलनि जे २१ सेकेण्डमे एकटा गाडी तैयार होइत अछि । ओना काज तेजी सँ भऽ रहल छलैक ।

एखन ई तीन प्लान्टक रुपमे चालु अछि । पहिल १ दिसेम्बर १९८३ ई मे चालु रहय त दोसर अक्टुवर १९९४ ई मे तहिना तेसर प्लान्ट मार्च १९९९ ई मे चालु भेल अछि। तीनू प्लान्ट मिला सभ तरहक २५०० गाडी दैनिक बनैत अछि । तीन शिफ्टमे काज होइत अछि , जाहिमे चारि हजार सँ उपर कर्मचारी जापानक स्टैण्डर्डमे दिन राति काज करैत अछि । एहि फैक्ट्रीमे जापानक सुजुकीकेँ ५४ प्रतिशत लगानी छैक तँ बाँकीक शेयर हिन्दुस्तानी जनताकेँ देल गेल छैक । शुरुमे जहिया सरकार चलौलक तँ ७४ प्रतिशत शेयर रहैक , वादमे सरकार अपन हाथ घिचि लेलक ।

एहि उद्योगक सभ समान एत्त नहि बनैत छैक । वाहर सँ जे अबैत अछि तकर सप्लाई कएनिहार २६० कम्पनी अछि । हरियाना गुडगाव स्थित मारुति उद्योगक विस्तार दिन दिन भऽ रहल अछि । गत वर्ष ई उद्योग ६ लाख ७४ हजार गाडी बनओने छल, जाहिमे ४० हजार निर्यात कएल गेल छल । नेपाल एकर एकटा ग्राहक देश रहलैक अछि ।

एत्त २ लाख सँ लऽ १६ लाख धरिक गाडी बनाओल जाइछ । सभ गाडीक फूट फूट निर्माण प्रक्रिया आ चेम्बर । ६ सय एकरमे एकटा प्लान्ट तैक । हमसभ देखलाक बाद मारुतीक कन्फ्रेन्स हलमे गेलहुँ, जत्त मारुती कार उत्पादनक एकटा भिडियो चित्र देखाओल गेल । तकरा बाद प्रश्नोत्तर चललै । तखने

अएलाह जनसम्पर्क मैनेजर एस आर कृष्णन ।

हुनको सँ बातचित भेल । हमसभ छात्रावास घुरि अएलहुँ । थाकर रही, खाना खा किछु देर आराम कएल आ तकरा बाद ३ बजे सँ पुनः क्लाश रुममे गेलहुँ । आनन्द प्रधान फिचर लेखनक रहस्यसभ बतौलनि आ मारुति उद्योगक निरीक्षणपर एकटा फिचर २०० शब्दमे लिखबा लेऽ कहलनि ।

आइ ५ बजेक लगभग छुट्टी भऽ गेल तँ हम , हरी आ बिबेक सरोजनी मार्केट टेम्पू लऽ गेलहुँ । जत्त कपडा मोलाओल गेल । सस्त त नहि लागल । ओनो हमरा इण्डियन सीम लेबाक रहय से ६०३० नं. नोकिया सेटक संग एयरटेलक सीम लेलहुँ ४२०० ।- भारुमे ।

आब फोन दिस सँ निश्चिन्त भेलहुँ। रातिमे खाना खा आब सुतबाक उपक्रममे छी ।

१९ जुलाई २००७ वृहस्पतिदिन

आइ भोरमे परमारजी फोटोग्राफीक सिद्धान्तकेँ बारेमे बतौलनि । एहि विषयमे ओ पारंगत छथि से नहि लागल । हं, किछु नव वात धरि जरुर सिद्धान्त रुपें बुझि सकलहुँ ।

तकरा बाद खलनउ सँ आयल अनूप श्रीवास्तव सँ साक्षात्कार भेल । ओ बरिष्ठ पत्रकार छथि । एखन हास्य व्यंग पत्रिका अट्टहास निकालैत छथि । दावी छन्हि तीस हजार सँ उपर सर्कुलेशन छन्हि । ओ पत्रकारिता करैत काल अबैत समस्या सभक बारेमे बतौलनि । हुनक कहब छलनि - समाचार जे खोजल जाए ओ बेसी प्रमाणिक आ पाठक बीच रुचि उत्पन्न करब बला हएबाक चाही , जखन उपलब्ध कराओल गेल समाचारमे स्वार्थ नुकाएल होइछ,ओ अरुचिकर आ भ्रमपूर्ण भ जाइछ । । अर्थात किछु गोटे पत्रकारक कान्हपर बन्दुक राखि चलबैत अछि ।

लंचक हेतु सभ गोटे छात्रावास अबैत छी । लंचक बाद आजतक चैनलमे जाइत छी । वास्तवमे बड़ बेसी आवेश छल देखबाक । यद्यपि निर्धारित समय सँ आधा घंटा देरी सँ हमसभ पहुँचलहुँ , मुदा तैयो कनेक प्रतिक्षाक बाद सोना झा (एक्जक्यूटिभ प्रमुख) हमरा सभकेँ सभ विभागमे घुमा घुमा देखौलनि ।

हमसभ प्रमुख समाचारबला स्टुडियो देखलहुँ । लाइट आ फिक्सड कैमरा । एकटामे समाचार प्रसारण भऽ रहल छल - महिला अपन प्रतिनिधि सँ बात कऽ

रहल छलीह । पयर सँ एटोमेटिक स्क्रीनकेँ आगाँ पाछाँ कऽ रहल छलीह । दोसर स्टुडियोमे कपिल देवक संग वातचित कऽ रहल छल - क्रिकेट रिपोर्टर । तेजक स्टुडियोमे एकटा लडकी समाचार पढबाक तैयारी कऽ रहल छली । सभ सँ अदभूत ई लागल जे स्टूडियो सादा रहैक- अर्थात वैक ग्राउण्ड नील / हरियर रंगक कपडा सँ बनाओल । जकरा समाचारक अनुसार ग्राफीक डिजाइन अप्रेटर पृष्टभूमिमे नयाँ नयाँ विम्ब आ समाचार दृश्य सभ धऽ आकर्षक आ रोचक बनबैत अछि ।

रीपोर्टर सभ द्वारा लाओल समाचार सभक सम्पादन ओ सभ अपने करैत अछि । कतबो कालक शूट हो ९० सकेण्डमे ओकरा समाप्त करबाक छैक । अधिकांश युवतीसभ कम्प्युटर पर बैसल अछि , किछु प्रतिक्षामे सेहो अछि ।

फिल्डमे गेल टिभी भान सँ सीधा प्रशारण होइछ , मुदा आन जिल्ला सभ सँ आएल फुटेज सभ एक ठाम जम्मा भऽ ओकरा व्यवस्थित कऽ सम्पादनक हेतु दोसर शाखामे पठाओल जाइछ । चारि गोट चैनल आजतक, तेज, हेडलाइन आ दिल्ली आजतकक तैयारी देखल , लाइब्रेरीमे सेहो गेलहुँ , जत्त प्रसारण भऽ चुकल फूटेज सभमे सँ ३-४ मिनटक आवश्यक फूटेजसभकेँ संकलित कऽ लाइब्रेरीमे राखल जा रहल होइछ । इमेलसभक द्वारा समाचार प्राप्त होइछ । स्टूडियो देखल , तीनटामे काज होइत आ एकटा मुख्य स्टूडियो खाली पडल ।

समाचारदाता सभ सतर्क । पढ़यबलासभकेँ स्टेप आ ग्राफीककेँ बारेमे पूर्व सँ जानकारी रहैछ । तएँ सन्तुलन बनाएब जरुरी । ई स्टूडियो भिडियो कोन टावरक सातम मंजिलपर अवस्थित अछि, ४ सँ सातम धरि ।

बाहर अएलाक बाद प्रकाशन विभाग जाइत छी । प्रो. के एम श्रीवास्तव संगमे छथि । ८२७ टकाक पुस्तक किनैत छी । प्रमुख सँ हुनकेँ चैम्बरमे बातचित होइत अछि । तकरा बाद उपरका मंजिलपर अवस्थित प्रेस काउन्सिलमे जाइत छी । ओतुक्का प्रकाशन देल जाइछ । तकरा बाद छात्रावास घुरि अवैत छी ।

खानाक बाद आब सुतबाक तैयारी ।

....

२० जुलाई २००७ शुक्रदिन

अझुका दिनक प्रारम्भ शोक आ सम्वेदना पूर्ण समाचार सँ भेल । जे मोनमे आशंका छल , आश्चर्यजनक रुप सँ सत्यमे परिणत भऽ गेल । पटना सँ

नेहमानक फोन आएल छल, जखन हम बाथरुममे छलहुँ । वाहर अबिते हरी कहलक । एतेक भोरे नेहमानक फोन ... । आशंका सँ ग्रस्त होइत हम हुनका फोन लगबै छी . .. । नेहमानक स्वर उभरैत अछि - कोनो खबरि आयल छल गामपरस अथवा बातचित भेल छल । हम नहि कहैत छीएयनि तँ ओ कहैत छथि- बूढा आई भोरे खतम भऽ गेलाह । आहिरेबा - जकर डर छल सएह भऽ गेल । गततीन चारि माससँ ओछाओन पकड़ने छलाह । मुदा विमार नहि , ८४ वर्षक बूढ स्वयं अपनामे विमार होइत अछि ।

आब साथीसभ सँ बात कएलहुँ , श्रीवास्तवजी सँ सेहो गपसप भेल । डेढ बजेक फ्लाइट सँ काठमाण्डू जाइ तँ की अन्तिम ४ बजेक फ्लाइट भेटि सकैत अछि ? ओतहुँ संस्कारक हेतु दिनभरि रोकल नहि जा सकैछ, एना भैया कहैत छथि । तखन जँ समयपर पहुँचिए नहि सकैछ, तखन जएबाक औचित्य की ?

भैया सँ गामपर बात होइत अछि, ओ इच्छा अनुसार काज करबाक बात कहै छथि । पत्नि सँ गप होइत अछि - ओहो जे समयपर आबि नहि सकब तँ काज सम्पन्न कइए कऽ आबी से कहैत छथि । हम फरिछा कऽ हमर अनुपस्थिति सँ आन कोनो हर्जक बात पुछैत छिएन्हि । ओ मात्र काजक हेतु टकाक बात करैत छथि , से हम स्रोतक नाम कहि दैत छियनि । जत्त सँ ओ पाइ उठा सकैत छथि ।

हम १० बजेक बाद क्लाश सँ पूर्व फेर प्रो. श्री वास्तवक चैम्बरमे जाइत छी आ अपन समस्याक बारेमे स्पष्ट सँ कहैत छिएनि । ओसभ बुझि कहैत छथि जे अहाँ पूर्ण क्लाश कइए कऽ जाउ । ई सरकारी संस्थान छै , अनेको लफडा छै - जखन काजक दिन सँ पूर्व पहुँचि जा सकैछी - तँ सभ प्रक्रिया पुरा कऽ ली । आ मन सँ तनाब हटा ली ।

हम हुनक बात सँ प्रभावित भऽ क्लाश रुममे जाइत छी । जखन प्रो. श्री वास्तव क्लाश रुममे अबैत छथि तँ गम्भीर मुद्रामे बजैत छथि - आज दुखद समाचार प्राप्त हुआ है । एक मिनट मौन धारण करे । आ सभ गोटे एक मिनट मौन धारण कऽ शोकमे सामेल भऽ जाइत छथि ।

हमरासभकेँ पत्रिका प्रकाशनक प्रविधि बताओल जाइछ । फोटो सप, पेज मेकर, ले आउट, प्रिटिङ्ग आदि।

हमरा सभ गोटे कहलनि जे जा धरि संस्कार नहि भऽ जाइत अछि ता धरि खाएब उचित नहि । से लंचमे हम सामेल नहि होइत छी । बरु मिडिया हाउस

देखबाक ले २ बजेसभक संग जाइत छी ।

सर्व प्रथम हमसभ प्रेस ट्रष्ट अफ इण्डिया जाइत छी । जत्त ओकर कार्य प्रणाली सँ अवगत होइत छी । किछु देर परिचय पातीक बाद डी. सी. डा. पी. के . बन्द्योपाध्याय सँ गपसप होइत अछि । फेर ओत्तय सँ बहरा पैदले प्रसार भारतीमे जाइत छी । आकाशवाणीमे । एक गोटे मैडम हमरा सभकँ स्लाइडक माध्यम सँ प्रसार भारतीक कार्य प्रणालीक विस्तृत जानकारी दैत छथि ।

तकरा बाद जोशी जी न्यूजरुम, सम्पादन कक्ष प्रशारण कक्ष, नेपाली सेवा आदिक दिश लऽ जाइत छथि ।

ओत्त सँ हमसभ नेशनल बूक ट्रष्ट अफ इण्डिया दिश बढैत छी । किछु किताव लेल जाए से इच्छा होइत अछि । विचमे पुनः गामपर फोन कऽ संस्कारक जानकारी लेबऽ चाहैत छी । नारायणजी आ ओकर माय सँ गप होइत अछि । पत्नि कहैत छथि - एखनधरि भुखले छी । हम तँ दू घण्टा बाद खा लेबय लेल कहने रही ने ! सरिपहुँ हुनका विचारे पौने चारि बजे हमरा खा लेबाक चाहैत छल । मुदा एक तँ हमसभ घुमि रहल छलहुँ दोसर घर सँ सूचना नहि छल । ६ बजेक बाद लगभग छात्रा वास घुमैत छी । दिनेशकँ किछु लएबा ले कहि कोठरीमे अबैत छी । नहा कऽ किछु खा पानि पिबि आश्वस्त होइत छी ।

२१ जुलाई २००७, शनि

श्रीवास्तवजी गाम चलि गेल छथि । पूर्व निर्धारित अझुका गुरगाँवमे मौल सभ देखएबाक योजना आ बेरियामे किनमेलक हेतु स्वइच्छा पर छोडबाक योजना सभ बदलि गेल अछि । रजिष्ट्रार साहब शनिए दिन दिल्ली दर्शनक कार्यक्रम सम्पन्न करबाले कहि देलकनि अछि । तएँ हमसभ लगभग १० बजे संस्थानक बस सँ निकलैत छी ।

पहिने इंदिरा गान्धी संग्रहालय । बहुतो बेर अखबारमे हुनक कृतित्व- व्यक्तित्वपर पढैत रहलहुँ अछि । एत्त हुनक आवासमे हुनक बैठक कक्ष, विदेशीसभ सँ भेटबाक कक्ष आ सभ सँ महत्वपूर्ण हुनक शयन कक्ष । हुनक व्यक्तिगत लाइब्रेरीक सुन्दर कलेक्शन यथावत राखिदेल गेल अछि । लगै छै जेना इन्दिरा ओहि सभमे घुमैत अपन दिनचर्या सम्पन्न कऽ रहल होइक ।

मोन तँ तखन कचकि उठल जखन अपन निजी कार्यालय सँ आवास दिस

जाइत हुनका हत्या कऽ देल गेलनि , से स्थान देखल । गोली लागल आ वेहोश भऽ खसल स्थान विशेष प्रकारक सीसा लगा दर्शनीय बनाओल गेल अछि । जखन हुनका मारल गेलनि तखनका साडी आ चप्पल सुरक्षित संग्रहालयमे राखल छैक ।

ताहि संग्रहालयमे राजीब गांधीक तस्वीर आ हुनक व्यक्तिगत प्रयोगक सामग्री सभ राखल । हुनक विशेष प्रकारक कम्प्युटर (लैपटप) चुनाव प्रचार आदिमे घर सँ बाहर रहलापर संगे रखैत दू गोट सामान्य बैगसभ सुरक्षित । आ कोयम्बटुरमे आत्मघाती बमद्वारा मारल गेलापर तार तार भेल पायजामाक अंश आ स्पोर्ट शू प्रदर्शनक हेतु राखल अछि ।एहि बलिदानी महान परिवार प्रति नतमस्तक होइत बहार होइत छी ।

तारा मण्डल देखबाले १५ टकाक टिकट काटि हम पाँच गोटे पक्तिमे ठाढ भऽ गेल रही , मुदा आन साथीसभक आग्रहक कारणे टिकट नेनहि बहरा भऽ गेल रही आ नेहरु संग्रहालय गेलहुँ ।

ओ महान व्यक्तित्व रहथि । हुनको अध्ययन कक्ष, भोजन कक्ष, बैठक कक्ष, आदिक अनेक कक्षसभ देखल । खास कऽ उपहार कक्ष तँ अद्‌भूत । कएकटा कक्ष भरल- एक सँ एक उपहार । नेपाल सँ सेहो चारि टा उपहार प्रदान कएल गेल रहनि । अपन शैली आ विशिष्टताक संग । नेहरुक ओ कक्ष सेहो सुरक्षित अछि जाहिमे ओ प्राण त्याग कएलनि ।

हमसभ तकरा बाद राष्ट्रिय संग्रहालय जाइत छी । लगैए जे ई नहि देखने रहितहुँ तँ अपूर्ण रहैत हमर ज्ञान । हड़प्पा सभ्यताक उत्खनन आ तकर चित्र एवं सामग्री सँ लऽ ४००० वर्ष पूर्वधरिक सामग्री सभ ओत्त राखल अछि । संग्रहालयमे देखबा लेऽ काफी समय चाही । मुदा जल्दी-जल्दी जे देखि पौलहुँ अछि ताहिमे किछु चित्रक छाया लेब जरुरी बुझि कैमरामे कैद कऽ चुकल छी ।

ओत्त हमरा ओरछा नरेशक चित्र भेटैत अछि । उपासक, वालकृष्ण, नटराज जे ११-१४ हम् शताव्दी धरिक मूर्तिसभ अछि प्रभावित करैत अछि । वाहरो मे किछु मूर्ति प्रभावित करैत अछि ।

राष्ट्रिय संग्रहालयक बाद इडिया गेट जएबाले सभ केओ जीद करैत छथि । संस्थान सँ खटल विनोद जी गाडीकँ इडिया गेट धरि लऽ जाइत छथि । हमसभ किछु दूर उतरि गेट लऽ जा फोटो सभ खिचैत छी । ओत्तहि विकाइत धीयापुताक

खेलौनासभ हाथेहाथ जकरा जे मोन होइछ किनैत अछि।

हमसभ छात्रावास घुरि अबैत छी आ भोजनक बाद ४ बजेपुनः दिल्ली दर्शनक हेतु चलबाक नियार होइत छैक।

से ४ बजे सभकेँ विचार होइछ - खास क' हम आर जोर दैत छिऐक आ गाडी अक्षरधाम दिश घुमा देल जाइछ। मुदा ओत्त गेलाक बदा हमरा ओहिमे जएबाक लेल अवसर नहि प्राप्त होइत अछि। बाहर गाडी लग फोटो खिचैत- मोनकेँ सान्त्वना दैत साथीसभकेँ अएबाक प्रतिक्षा करैत रहैत छी।

सब अबैत छथि आ गाडी कुतुब मिनार दिश बढि चुकैछ। ७:३० भ' गेल छै।आब झिलमिला रहल छैक। एतुक्का समय ४५ मिनेट पाछा अछि जनकपुर सँ। ओत्त सात बजे बत्ति बरि जाइछ, एत्त ७:४५ धरि बत्ति बरैत छैक।

जे से हमसभ लोटस मन्दिरकेँ दूरे सँ नीक जकाँ देखैत चारमिनार लग पहुँचैत छी। २० रु. क टिकट कटा भितर जाइछी। रातिमे बहुत किछु स्पष्ट त नहि मुदा प्राचीन खण्डहर देखि पडैत। किछु फोटो खिचैत छी।

आब सोझे छात्रावास घुरैत छी। रातुक खाना खा आब सुतबाक उपक्रम करब उचित बुझाइत अछि।

२२ जुलाई २००७ रबि

आइयो छुट्टीक दिन छै। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार भोरे १० बजे हम सात गोटे गुरगाँवक माल देखबा ले' जाइत छी। ओत्त एकटा मालमे जा एकटा सलवार फ्राक लगायत किछु समानसभ किनैत छी। ओत्तहि नियार भेलै जे सरोजनी नगर बजारकेँ देखैत वासापर घूमि। से ३ बजे धरि ओत्तहि किनमेल भेल। छात्रावसमे आबि भोजन क' कनेक आराम कएल। ललित आबि गेल रहए। ५ बजेक बाद ६ गोटे दूटा टेम्पूमे चांदनी चौक दिश बढलहुँ। दूनु मिटरबला टेम्पू रहय एकटा ८० टका आ दोसर ८६ टका लेलक।

ओत्त पहुँचलाक बाद लालकिला देखल। १५ अगस्त आ २६ जनवरीक कार्यक्रम सभ मोन पडि गेल। कतेक भव्य समारोह होइत छैक। रंगविरंगक झाँखी सभ नचैत गबैत।

किछु गोटेकेँ भेलैक जे १० टकाक टिकट कटा भितर जाएल जाए। फेर भेलै साँझ पडल जा रहल छै -बजारे घुमिलेल जाए। सएह नियार होइत छैक -

हमसभ बाजार प्रवेश करैत छी। देखैत सुनैत किछु कपडो लत्ता किनैत छी। हमरासभकेँ अद्भूत की लगैए जे सय टकामे चारिटा कमिज भेटैत। वजाप्ता पन्नीमे पैक कएल -बजार जकाँ। लोक लैतो छैक। सय टका तँ कमिजक सिलाई लैत छैक - ई कपडा कत्त सँ लाओत।

इएह सभ सोचैत हमसभ छात्रावास घुमि अबैत छी। काठमाण्डू अजयजीकेँ शुक्रदिन जनकपुर जएबा ले टिकटक जोगाड करबाले कहि सुतबाक तैयारीमे चल जाइत छी।

२३ जुलाई २००७, सोमवार

पूर्व निर्धारित कार्यक्रम अनुसार आइ भोरे पाँच बजे तैयार भ' निचाँ आबि जाइत छी। एखनधरि गाडी नहि आएल रहैछ। किछु फोटो खिचल जाइत अछि। ठीक ५:३० बजे गाडी अबैत अछि। सभ गोटे दू गोट कोर्लिस गाडीमे चहरि आगराक हेतु चलि पडैत छी।

बादमे वृन्दावन, मथुरा पडैत छैक, सडक सँ किछु माइल उत्तर देखि पडैत अछि। मथुराक तेल रीफाइनरी एक नम्बरपर छैक। विशाल एरिया छेकने - एकटा पैघ चिमनी सँ आगिक धधरा निकलैत। IIMCs हमसभ आगरा ९ बजे पहुँचि जाइत छी। पहिने विचार होइछ, सिकन्दराबाद देखल जाए - अकबरक मकबडा। बड़ भव्य तँ छैहे, शिल्पकलाक अद्वितिय निर्माण। तकरा बाद हमसभ आगरा किला जाइत छी जे लगले किछु कि.मि.पर अछि। भव्य लाल किला। एहि किलाक नक्कलपर दिल्लीमे लाल किलाक निर्माण भेल छल। अकवरक जीवनक विविधता एहि किलामे ओहिना झलकैत अछि।

तहिना शाहजहाँक भव्य सोच सेहो। एत्त सँ लोक ताजमहल देखैत अछि। कहल जाइछ जखन शाहजहाँकेँ बेटा जहागिर कैद क' देने रहैक तँ ओही घर सँ ओ सीसा लागल खिडकी सँ ताज महल देखल करैत छल।

हमसभ किला देखलाक बाद होटल प्रिया गेष्ट हाउस दिस जाइत छी। ओत्तहि ठहरबाक व्यवस्था अछि। थाकि तँ गेले रही। कनेक आराम क' प्रिया रेस्टुरेन्टमे भोजन कराओल जाइछ। सभ गोटे भोजन क' होटल अबैत छी आ तीन बजे ताजमहल देखबा ले' जाइत छी।

भितर प्रवेश करिते मोनमे अनेको तरंग उठ' लगैत अछि। निरन्तर पढैत आ

देखैत आबि रहल ताज महल हमरा सभक आगाँ छल । फोटो खिचबाक काज होइत छै । ताज महलपर उपर चढैत छी आ पैघ पक्तिमे ठाढ भऽ भितर शाहजहाँ आ वेगम मुमताज महलक मकबरा देखैत छी । कहल जाइछ सुरक्षाक कारणे आब निचाँ तहखानामे राखल मूल मकबरा नहि देखाओल जाइत छैक । जे बनल अछि ओ तकर नकल मात्र अछि ।

जे से हम सभ विश्वक सात आश्चर्यमे एहि बेर पहिल आएल ताजमहलक सौन्दर्यक विशिष्ट पक्षपर विवेचन करैत होटल घुमैत छी । कनेक देरक आरामक बाद बाजार , वीग बजार(माल)मे घुमबालेऽ जाइत छी , जत्त उस्ताद जाकिर हुसेनक तबला बादन आ अनुप जलोटाक भजनक सीडी किनैत छी । आगराक इएह सनेस बुझि पुनः होटल अबै छी जत्त सभ हमरेसभक प्रतिक्षामे रहैत छथि । सभ गोटे उएह प्रिया रेस्टुरेन्टमे रात्री भोजनक हेतु विदा भऽ जाइत छी ।

२४ जुलाई २००७ मंगल

आइ भोरे ७ बजे स्नान कऽ आगरा सँ जयपुरक हेतु जएबा लेऽ तैयार भऽ रहल छी । भोरमे प्रियां रेस्टुरेन्टमे जलखइ छै आ तकरा बाद जयपुर दिस प्रस्थान । हम सभ ओहिना आगा बढै छी । पहिने कहल गेल छल बाट खराब छै , मुदा जखन हमसभ आगा बढैत छी तँ बाट बनि चुकल रहैछ आ दोसर कात बनि रहल छै । यु.पी. सीमा काटि जखन राजस्थानमे प्रवेश करैत छी, एकटा नव उत्साह मोनकेँ छुबैत अछि , रेगिस्तान, उँट आ नहि जानि किछु आर आर सभ ।

मुदा तेहन नहि किछु, हँ पहाडी सिलसिला कए बेर भेटैत अछि । शुरुमे तँ बुँदा बाँदी शुरु भऽ जाइछ । एहि सँ राजस्थानक गर्मी सँ बचैत छी , मुदा कतौ देरी सँ नहि पहूँची तकर डरो रहैत अछि । जयपुरमे राजा मानसिंहक किला सेहो देखबाक रहैत अछि ।

आगारा सँ निकलि हमरासभकेँ फतेहपुर सिकरीक किला सेहो देखबाक रहैत अछि । बुंदाबुदी शुरु भऽ जाइछ । कम्पाउण्डमे हमसभ उतरैत छी । दिल्ली पर्यटनक कर्मचारी हमरासभक टिकट कटैत अछि आ एकटा गाइड संग अबैत अछि ।

अकवरक अद्‌भूत महल । रानी जोद्धावाईक भव्य महल, टोडरमलक कार्यालय ।

अकबरक पचिसी खेलबाक स्थान । पाथर सँ खाना सभ बनाएल । भितर बीचमे चिस्तीक दरगाह , जत्त अकबर अरदासक हेतु गेल रहय आ औरंगाजेब पैदा भेल रहैक । महाराजाक प्रवेश, नावाज पढ़वाक स्थान अद्‌भूत । आ सभ सँ पैघ बुलन्द दरबाजा - विश्वक सभ सँ पैघ । बुलन्द दरवाजाक सभ सँ दक्षिण फतेहपुर आ किलाक उत्तर सिकरी । तानसेनक गायनक स्थल । राजा आ रानीकेँ सुनबाक ठाम । सम्राट अकबरद्वारा बनाओल पाथरमे उकेरल पशु पछी सभक चित्रकेँ मुडी काटि देल गेल छै-मुस्लिम धर्ममे तकर गुंजायश नहि कहि एहन काज कएने छल ।

बुंदावाँदीक बिच हमसभ जयपुरक हेतु विदा भऽ जाइत छी । जयपुर मात्र ५५ कि.मि. रहि जाइछ । एकटा बाजार डौसामे हमसभ खाना खाइत छी । ओहि सँ पूर्व डौसा जिल्लाक सिकन्दरमे संगमरमर, पाथरक मूर्ति बनौनिहारक व्यवसाय देखलल । रंग विरंगक मूर्तिसभ बनल , बनाओल जाइत । जनकपुरधाम क्षेत्रक मन्दिरसभक मूर्ति एम्हरे सँ लऽ जाएल जाइत अछि ।

जयपुर अबैत अबैत मौशम साफ भऽ गेल रहैछ । ४ बाजि चुकल छै । हमसभ सोझे मान सिंहक किलामे जाइत छी । टिकट लेल जाइछ , गाइड उपलब्ध कराओल जाइछ । निचाँ रंग विरंगक सवारी साधनसभ । उपर हजारो रंगक हथियार सभ । खास कऽ राजा मानसिंहक साढे पाँच किलोक तरबार, तेहने कवच सहितक पोशाक, लौह टोपी, आ बहुत किछु । जिवित राजा माधव सिंहक महल । एक पत्नि, एक बेटी जे केयर टेकर सँ विवाह कऽ लैछ । आ तकरे एकटा बेटाकेँ गोद लऽ लेने छैक राजा । विश्वक सभ सँ पैघ धनिकमे नाम । ३ हजार करोडक सम्पति । अनेको कारोवार । पैलैस कैफे भितरे । ई किला हुनक निजी छन्हि।

हमरासभकेँ होटल आशिष लऽ जाएल जाइत अछि । नीक होटल अछि । कनेका काल आराम करैत छी आ वाजारक हेतु नीकलि पडैत छी । एकटा दोकानमे की पैसैत छी -हम चारि गोटे लगभग ५ हजार टकाक समान किनैत छी । कम मोल मोलै नै कएने रही , तैयो सय पचास ओ ठकिए चुकल अछि । जेना तेना १५०० टकाक समान ... ।

होटल अबैत छी , भोजन करैत छी आ विश्रामक हेतु तैयारी शुरु कऽ दैत छी ।

२५ जुलाई २००७ बुध

आइ भोरे ८ बजे जयपुरक होटल आशिष छोडैत छी। ओत्तऽ सँ जन्तर मन्तर देखैत छी। सौर्यक रोशनी सँ दिन आ समयक गणना कएल जाइछ। राजा सवाइ जयसिंह द्वि. ज्योतिष विद्याक ज्ञानी छलाह, उएह एकरा ६ वर्षमे बनबौलनि। १७२८ ई. मे ई बनि कऽ तैयार भेल छल। एकरा सरकार अधिग्रहण कऽ एखन पुरातत्व विभागक अधिन अछि। मुदा घरसभक हालति खस्ता छैक। भवन पर घर-फूस जनमल। ओत्तहि पूर्व राजाक सम्पति चम चमकैत।

तकरा बाद दिल्लीक बाट धएलहुँ। बाटमे अमोरक किला देखल। राजा मानसिंहक महल, १२ गोट रानीक शयन कक्ष। दूगोट रानीक कक्ष। अपन ग्रीष्म आ शरदक शयन कक्ष। मंत्रणा कक्ष। दरवारे आम ...। कारीगरीक अदभूत नमूना। शरदकालिन भवनमे सीसाक अद्‌भूत काम छैक। साढे चारि सय वर्षपूर्वक ई बनौट, एखनो अपन सौन्दर्य आ कलात्मकताकेँ कायम रखने अछि।

पूर्व - पश्चिम आ उत्तरक पहाडीपर १२ किमिमे पैघ सुरक्षा देबाल एखनो देखि पडैछ। सुरक्षाक पुख्ता इन्तजाम। कहियो काल सम्राट अकबर स्वयं महलमे आबथि तँ तखन महलक चमक दमक दोसरे रहैक।

एहि किलाक बाद हमसभ दिल्लीक हेतु विदा भऽ जाइत छी। आगरा सँ जयपुर अबैतकाल भरतपुर देखल गेल छल। जत्त विश्वक सभ सँ पैघ पछी विहार छैक। ई स्थल विजेपीक यशवन्त सिंहक सेहो पडैत छैक। ओ एतुक्का राजा छथि। जयपुर दिल्ली राजमार्गपर दौडैत गाडी जखन हरियानाक सीमामे पहुँचैत अछि तँ वोर्डरक बाद औद्योगिक क्षेत्र प्रारम्भ भऽ जाइत छैक। ई क्षेत्र गुरगाँव धरि पसरल अछि। एत्तहि हिरोहोण्डा बनैत अछि, सुजुकी मो. साइकल बनैत अछि, मारुति गाडिसभ बनैत अछि, हल्दीरामक भूजिया लगायतक बस्तुसभ बनैत अछि।

साँझमे ५ बजेक लगभग हम सभ होस्टल पहुँचि जाइत छी। थाकलो सभ अछि। रात्री भोजनक पश्चात आरामक सभक इच्छा स्पष्ट देखल जा रहल अछि।

२६ जुलाई २००७, बृहस्पति

१० बजे सँ १:३० बजे धरि हम कल्हुका टिकट कन्फर्म करएबाले बेहाल रहलहुँ। इकोनोमी क्लासमे तँ नहि भेटल, उपरका क्लासमे ३५००/- टका तीरि कऽ एक सीट देल गेल। हरिक सेहो कन्फर्म करएबाक रहैक, नहि भऽ सकलै। सम्भवत: ओ एहिसं खुशो भेल अछि।

अफ्नुका क्लाश फीचर राइटिङ्क आधारपर भेल छल। जे आनन्दजी लेने रहथिन्ह। तकरा बाद साइवर आ इन्टरनेट सम्बन्धि प्रशिक्षण बत्राजी देलनि।

क्लाश समान्य रहैक। ५:३० बजे समाप्त भेलाक बाद ७ बजे हमसभ विदेश विभागद्वारा होटल मौर्य शेराटनमे देलगेल रात्री भोजमे शामिल होएबाले गेलहुँ। समय पर पहुँचलहुँ तँ विदेश विभागमे दक्षिण एशिया देखनिहारि सचिव प्रीति शरण हमरासभकेँ स्वागत करबा लेऽ तैयार बैसल छलीह। परिचय भेल तखन सी गुरुराजराव अएलाह तँ भरिपाँज कऽ पकड़ि स्वागत कएलनि। तकराबाद ष्ब्अ क संचालिका प्रभारी मैडम अएलिह। तखन अएलाह एस डी मुनी। नेपाल राजनीतिपर खूब चर्चा भेल। खास कऽ मधेश आन्दोलनपर। मुनीक कथन रहनि - आब जे बात तराईमे उठाओल गेल छैक, तकरा आब इग्नोर नहि कएल जा सकैछ। जे की ९० आ २००६क परिवर्तनक वाद बनल अन्तरिम संविधानमे मधेशकेँ उपेक्षा कएल गेलै, तएँ आइ एतेक पैघ आन्दोलन भेलैए। एहि सँ मधेशक पहचान बनलैए।

पक्तिकार (लेखक) मधेशी आन्दोलनक अवस्था आ अनिवार्यतापर अपन विचार राखल। पटनाक पत्रकार सम्मेलनक अनुभव सुनाओल। एक्के टेवुलपर ष्ब्अ क अध्यक्ष, सचिव शरण आ मुनीजी बैसल छलाह, हमसेहो ओहिपर छलहुँ। शरण काफी उत्सुकता सँ जानकारी प्राप्त करबाक प्रयास करैत देखल गेलीह, जकरा हमपूर्ण विश्लेषण कऽ देखा देलियनि जे मधेशी उपेक्षित अछि।

दोसर दिश वीरगंजक कन्सुलेट जनरलक अफिस सँ मधेशीकेँ राहत भेटलैक अछि आ आब किछु भारतपर आशा जगलैक अछि सेहो बात कहल।

अबैत काल श्रीमति शरण (पति: पंकज शरण) हाथ जोडैत कहलनि -हमरा तँ अहाँ सँ बहुत किछु गप करबाक आशा छल, मुदा कि करु, ओ वीरगंज अओतिह से बतौलनि। तखन वीरगंज भेटबाक विश्वास दिऔलनि। राव साहबक आत्मिय खोजविन, स्नेह, सदभाव प्रदर्शन हमरा मुग्ध कऽ देलक।

सभ सँ विदा लऽ हमसभ छात्रावास घुरि गेल छी ।

२७ जुलाई २००७

आई हमरा गाम जएबाक अछि । मोन त भारी अछि । मात्र एक दिन आर छलै प्रशिक्षणके । पहिलबेर एसकरिए जएबाक ई अबस्था हमरा किछु नर्भस कएने रहए । मुदा काजे एहन रहैक जे जाएब जरुरी । आई नौकेस रहैक । कमसकम एहि बिधिमे उपस्थित रहब उचित छलैक ।

हम तैयार भ क्लाश रुममे अबैत छी । सब साथीक नजरि हमरेपर टिकि जाइत छन्हि । सभक नजरिमे समबेदनाक छाप ओहिना बुझा रहल अछि । मोन उद्वेलित त हमरो भ उठैत अछि । मुदा......।

हमरासभक मूख्य प्रशिक्षक डा. एके श्रीवास्तब हमर प्रमाणपत्र ल क तैयार छलाह । हम औपचारिकरुपें हुनकास प्रमाणपत्र ग्रहण करैत छी । सहभागी सभगोटे थपडीबजा ओहि क्षणके स्मरणीय मनादैत छथि । हम तकराबाद सभसं विदा ल सोझे संस्थानक गाडीसं एयरपोर्ट दिश बिदा भ जाइत छी । एयरपोर्टपर सभऔपचारिकता पूरा क किछु काल प्रतिक्षामे बैस पडैत अछि । जखन बुलाबा अवैछ त एयर ईंडियाक जहाजमे अपन सीटपर बैसते मोन पडैत अछि.....आहिरेबा, हमर प्रमाणपत्र आ ग्रूपफोटो त समान जाँचपास करैतकाल ओत्तहि छुटि गेल । मोन स्वयंपर घोर भ गेल । आब उपाय कोन । जहाजक पंखा नाच लागल छलैक । हम गुनधुन करैत जहाजपर निराश सीटपर ओंगठि गेलहुं । तखने चमत्कार भेल । एकटा महिला हाथमे हमर पीयरका लिफाफ लेने जहाजमे प्रवेश करैत आवाज दैत अछि......राम भरोस कापडीजी कौन हैं । हम त हकबक रहि गेलहुं । अपनाके सम्हारैत उठि क कहलियनि.....जी मैं हूं । ओ हाथ बढबैत कहैत अछि...यह आपका लिफाफा छुट गया था । हम धन्यबाद दैत लिफाफ पकडैत छी । ओ निकास दिश बढि जाइत अछि ।

जहाजो लगैए ओकरेलेल जेना रुकल छल । ओकरा जाइते रनवेपर ससर लगैत अछि ।

भावनाक हिलोरमे उधिआइत मधेपुरा

हमर मधेपुरा (विहार)क भ्रमणकेँ एतेक ने महत्व देल जएबाक चाही जे संस्मरणे लिखल जाए । कए बेर मोनमे ई बात उठैत अछि । हम साहित्य सेबी ,भाषा सेवीसभ एहिना साहित्यिक कार्यक्रमसभमे आमंत्रित होइत रहैत छी । कतेक लेखा लेल जाए ।

मुदा नहि, मधेपुराक यात्रा हमरा लेल अत्यन्त महत्वक एहु दुआरे भऽ गेल जे सेमिनारमे सफलतापूर्वक सहभागिताक संगहि आई सँ तीस वर्ष पूर्वमे वीरपुर धरिक हमर यात्राक रुकल पडाब एकाएक आगाँ बढि रहल छल । चलु, नहि वीरपुर तँ ओकरे आस -पासक नगर मधेपुरे सही ।

जखन दरभंगासँ भाई चन्द्रेशक मिसकाँल आएल रहे तँ हम बुझने रही मात्र हमर हाल चाल बुझबा लेल ओ मिसकाँल नहि कएने हएता । जखन अपनो खर्चसँ हुनकासँ हम बातचीत करैत रहैत छी तँ चट दऽ फोन काटि दैत छथि से पुरुषक जँ मिसकाँल आबय तँ तुरत काँल करबाक जरुरति होइत छै , से कएलहुँ त ओ सोझे विषयपर आबि गेलाह -'मधेपुरा सँ डा अमोल राय अहाँकेँ फोन करताह । ओत्त ३१ ता. कऽकार्यक्रम छैक, अहाँकेँ आमन्त्रित करताह । ' हुनका द्वारा कहल एतेक बातकेँ निक जकाँ बुझवाक लेल हमरा कएबेर फोन करय पड़ल । जे से ठीकेँ किछु देरक बाद डा. अमोल रायक फोन आएल आ ३१ ता. कऽ होबयबला सेमिनारमे सामिल हएबाक आग्रह कएलनि । हम घरसँ निकलबाक मनस्थितिमे नहि रही । वर्षातक लक्षण रहबे करैक । कहलिऐन-मेघक कारणे बाटघाट कठिन भऽ सकैछ । से.... । हमर बातकेँ लोकैत ओ आबेशपूर्वक कहै छथि -अहाँक स्वीकृति हमरासभकेँ चाही । अन्तर्राष्ट्रिय सेमिनार होबऽ जा रहल छैक । कएकटा फर्मलिटी पुरा करऽ पड़तैक ।

एक दू दिनक आग्रह अनुरोधक बाद हम हरदा बाजि गेलहुँ । माने अएबाक स्वीकृति दऽ देलियनि । आब हमर समस्या ई जे ओम्हर हमर अवरजाइत नहि । बाट घाटक कोनो पता नहि । तखन इन्टरनेटपर बैसि बाटक खोजविन कएलहुँ । आ अन्ततः राजमार्ग होइत भीमनगर आ ओहि ठामसँ मधेपुरा । सभ साढे चारि घण्टा अपन सवारी साधनसँ । भेल एक आध घण्टा थपाइयो जएतै त की हर्ज ! चली एक बेर ओम्हरो जत्त बसै छथि हमर कोनो प्रिय , जकरा सुना कऽ श्री कृष्ण

कोनो अर्जुनकेँ महाभारतमे लडबाक प्रेरण प्रदान कएने छलाह । माया मोहसँ दूर राखि मात्र अस्त्र प्रहारक उर्जा संचरण कएने छलखिन्ह । हँ, ई दोसर बात छै हम उर्जश्व त भेल रही, मुदा अर्जुन नहि बनि पएने रही । अभिमन्युक नियति भऽ गेल रहए आ आइ तीस वर्षसँ ताहि पराजयक दंशकेँ हृदयपर उठौने स्वयंकेँ विसरबाक आ परतारबाक अभ्यास कऽ रहल छी ।

दुत्, कत्त चल गेलहुँ । मधेपुरा जएबाक नियार पक्का भऽ गेल आ हम कथाकार राजाराम सिंह राठौरकेँ ३० ता. कऽ चलबाक सूचना दऽ देलिऐन । एहन यात्रासभमे राठौर जी हमर सहयात्री भेल करैत छथि । नामो नहि, देहयाष्टियो राजपूते सन छन्हि । से संगति के संगति आ ... ।

हम नियार कएलहुँ महेन्द्र राजमार्गसँ भीमनगर जाएब, ओत्तसँ मधेपुरा जे इन्टरनेटक नक्शा ७५ किलोमिटर दुरी बतबैत छल । एन एच १०६ आ ७५ किलोमिटर । माने भीमनगरसं अधिकतम डेढ घण्टाक सफर ।

२०१४ अगस्त ३० तारिख कऽ १०:१५ बजे भिनसर हमर स्कारपिओ महेन्द्र राजमार्गपर दौडबाक हेतु ढल्केक रुखि कऽ चुकल छल । वातावरण नीक रहैक । बदली भेल करैक । धूप -छाँव । रुपनीसँ आगा बढ़ला १५-२० मिनेट भेल हएत तँ मोन पड़ल भारदहक पप्पु मण्डल, बहुआयामिक व्यक्तित्वक लोक । ओना हमर परिचय एकटा फोटोग्राफरक अछि । संयोगसँ फोन लगैत अछि आ १५ मिनटक भितर भारदह पहुँचबाक बात हम कहैत छिऐक । ओ प्रशन्न होइत अपनाकेँ चौकेपर रहबाक बात कहैत अछि ।

जखन चौकपर पहुँचलहुँ उजरका हाफ पेंट आ उजरकेँ हाफ सर्ट लगौने सड़केँ कातमे प्रतिरक्षारत् भेटल । आहलादपूर्वक प्रणाम-पातिक बाद भोजनक आग्रह कएलक । भोजन तँ हम कइएलेने रही । मना कऽ देलिऐक मुदा किछुओ ग्रहण करबाक ओकर आग्रहक आगाँ झूकऽ पडल । सडकक पछिम दिशक एकटा दोकानमे माछ चूड़ा, मुरही खाय पड़ल । तकरा बाद पान खुआ विदा कएलक । हम सभ पप्पूक आवभगतसँ प्रशन्न होइत आगाँ विदा भेलहुँ । भीमनगर दिश जाइत नेपाली सशस्त्र प्रहरीक जाँच स्थलपर बड़ उटपटांग प्रश्न ओत्तुक्का प्रहरी (सिपाही) कएने रहए । जखन ओकरा ई बुझऽमे अएलैक जे हम स्कारपिओ पर जा रहल छी, जकर नम्बर भारतीय छैक । ओकर उपदेश भरल उपराग रहैक-'अहाँ सन देशक चारिम अंग मानल जाएबला लोक भारतीय नम्बर प्लेटक

गाडीपर चढत् ।' ओहि अल्पज्ञकेँ हमरा समझ्एबाक समय नहि रहए जे तराई क्षेत्रमे प्रशस्त भारतीय नम्बर प्लेटक गाडी छैक आ ओ फोकटमे नहि , कड़ा भन्सार शुल्क जम्मा कऽ कऽ । आ ई रखबामे कोनो हर्ज नहि छैक ।

जे से तकरा बाद भारतीय सीमा सुरक्षाबलक जवानसभकेँ चित भरैत भीमनगर प्रवेश करैत छी । संगक राठौर जी कथा गोष्ठीमे एक बेर सुपौल गेल छथि ।, हुनका यात्राक अनुभव पुछने रहियनि । ओ कहने छलाह, भोरे ५ बजे जनकपुरमे चहरि १० बजे भण्टावारी-भीमनगर पहुँचलहुँ । आ तकरा बाद सुपौलक बस पकड़ि जे चढलहुँ तँ पाँच बजे साँझमे पहूँचलहुँ । सडक खराबक वा दुरी अस्पष्टताक आशंका रहए मोनमे । चौकपर पुछऽ पड़ल-मधेपुरा जाएबला रास्ता कोन छिऐ ? मैथिलीमे पुछब काज नहि लागल , हिन्दीए मे पुछऽ पड़ल । आगां बस स्टैण्ड छै , तकरे दक्षिण दिश बाट गेल छै , सोझे मधेपुरा । तखन राठौर जीकेँ आँखि खुजलनि -हँ, ओत्त सँ बाट छैक ।

हमसभ जखन बस स्टैण्ड लग पहुँचलहुँ त दूरेसँ सूचना पट्ट देखलिऐक जाहिमे वीरपुर-०५, मधेपुर-७५ कि.मि. दुरीक संकेत करैत दक्षिण दिश तिर घुमौने छल ।, हम सभ ककरो पुछने ताहि बाटपर आगाँ बढ़ि गेल रही । एन.एच. १०६ ! वाह रे ! एन. एच. । मुश्किलसँ एकटा गाडी फुटि सकैछ । बाटक स्तर तँ किछु दुर खराबे छैक । तखन आगाँ जा कऽ पक्की कऽ देल गेल छैक । हमसभ पिपरा बजार , राधोपुर होइत सिंहेश्वर पहुँचलहुँ । प्रसिद्ध सिंहेश्वर महादेवक मन्दिर । तीनक अमल छल हएतैक । सडकक कातमे गाड़ी लगा हमसभ मन्दिर परिसरमे गेलहुँ ।, मन्दिरक पट बन्द रहैक । आगाँक शिवगंगा (पोखरि)मे जलसिक्त कऽ वाहरे सँ प्रणाम कएल आ घुरैत काल औपचारिक दर्शन-पूजाक बचन हारलहुँ ।

सिंघेश्वरसँ मुश्किल सँ १० मिनेटक बाद । नगर प्रवेश करैत करैत डा. अमोल रायकेँ अपन गन्तव्य बारेमे पुछलियनि । ओ पेट्रोल पम्पपर आबि कँलेजक वारेमे जानकारी प्राप्त कऽ सोझे मधेपुरा काँलेजमे आबि जाएब से कहलनि । हम सभ पुछैत पुछैत काँलेजक प्रशासनिक भवनक आगाँ पहुँचि गेलहुँ । गाड़ीसँ उतरिते स्वागत , सत्कारक संग बैठकमे लऽ जाएल गेलहुँ , जत्त डा. राय आ प्राधानाचार्य डा. अशोककुमारसँ भेट भेल । प्रशन्नता होइत अछि ।

ओत्त एक डेढ़ घण्टा धरि प्राय: गपसप भेल । चाह भेलैक तखन आरामक हेतु

होटल ग्रीन हाउस । हमरा लेल एकटा डबल सीटक एसी कमरा बूक कराओल गेल । हमसभ आराम सँ सामानक संग प्रवेश कएलहुँ । सवारी चालककेँ एक जनिया कमरा दिआओल गेलैक । फ्रेश भेलाक बाद विचार भेलैक जे मधेपुरा बाजार देखल जाए ।

बाहर निकनि पत्ता लगौलहुँ , ठहरल ठाम सँ १५-२० मिनटक बाटपर रहैक मधेपुरा बजार । वास्तवमे ई क्षेत्रपुरान मधेपुरा छैक, जकरा प्रायः लालु नगर सेहो कहल जाइछ । ई संसदीय क्षेत्र लालु यादवक रहलनि अछि । एहिबेर हुनके पार्टीक पप्पु यादव जितलाह अछि जदयूक राष्ट्रिय अध्यक्ष शरद यादवकेँ हरा कऽ ।

हम सभ गाडीसँ मुख्य बजारमे जाइत छी । दूटा चप्पल किनै छी । एकटा मर्दाना , एकटा जनाना । हमरासभक बोर्डर क्षेत्रसँ महग । फेर होटल घुरि अर्डर बमोजिमक खाना मंगा खा क सुति रहैत छी । एहि विच दरभंगासँ साढे ६ घण्टाक बस यात्राक बाद डा. भीमनाथ झा आबि चुकल रहैत छथि ।

३१ अगस्त २०१४

डा. अमोल राय हमरा सभसँ रातिएमे बचन लऽ लेने छलाह जे मर्निङ्गवाकमे घुमैत जखन एकटा मन्दिर लग पहुँची तखन ओहो भेटताह आ किछु काल संगे रहताह । हम, राठौर जी आ भीम भाई टहलऽ लगलहुँ । निर्धारित ठामपर भेटलाह राय जी । ओ एकटा बडका फिल्ड दिश लऽ गेलाह जत्त रामदेव बाबाक योगक अभ्यास अपनेसँ कएल जाइत अछि । तकरा बाद ओ लगेमे रहल अपन कुटिया पर लऽ गेलाह । सुन्दर साफ सुधर । हमसभ आगाक खुरसीपर बैसि गपसपमे लागि जाइत छी । एहि प्रतिक्षामे जे रायजीक चाहक स्वाद लऽ होटल घुरि जाइ । ओत्तहि सुपौलमे भाइ केदार काननसँ भीमभाइक सौजन्यसँ गप होइत अछि । मधेपुरा काँलेजक हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. विनय कुमार चौधरी सेहो आबि गेल छथि । किछु कालक प्रतिक्षाक बाद जखन डा. रायक डाइनिङ्ग टेवुलपर जम्मा होइत छी तँ मोन प्रशन्न भऽ जाइत अछि । सेमिनारक मध्य १ बजेमे होबयबला भोजनकेँ थम्हि सकयबला जलखईक जोगाड रहैक । पूर्णताक बाद होटल अबैत छी । स्नान कऽ सेमिनारक हेतु तैयारी शुरु कऽ दैत छी । विषय छैक -हिन्दी मैथिली साहित्य और नागार्जुन । की बजबाक चाही तकरे ठेकनिआबऽ

लागल छी । सवा दश बजेक लगभगमे डा. रायक फोन अबैत अछि सभागारमे अएबा लेल । चिट्ठीमे १० बजेक समय देल गेल छैक । हम सभ १०:३०बजे पहुँचि गेलहुँ ।

जेना कि कार्यक्रम सभमे होइत छैक सेमिनारक उद्घाटन समारोह १२ बजेक बादे प्रारम्भ भऽ सकलैक । अध्यक्षता कएलनि मधेपुरा काँलेजक उर्जावान प्राधानाचार्य डा. अशोक कुमार यादव, मुख्य अतिथि छलाह डा. जगदीश नारायण प्रसाद, उद्घाटनकर्ता वि.एन.एम.यु.क प्रतिकुलपति डा. जे. जी. एन झा आ विशिष्ट अतिथिमे डा. भीमनाथ झा संग हमहु छलहुँ । एहि अवसरपर लगभग एक दर्जन विद्वान, आतिथि लोकनिकेँ पाग, आ अंगबस्त्र आ बुकी दऽ स्वागत , सम्मान कएलनि प्राधानाचार्य डा. कुमार । अतिथि लोकनि दिशसँ हमरा बजबाक सु अवसर भेटल जाहिमे मधेपुरा अएबाक सुयोग प्रति आभार व्यक्त करैत १९७६ ई.मे यात्री जीसँ दरभंगामे भेंट कऽ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानद्वारा प्रकाशित पहिल मैथिली पुस्तक, मैथिली कविता संग्रह (सं. भ्रमर, प्रेमर्षि)केँ विमोचन करौने रहियनि तकर संस्मरण सुनाओल ।

उद्घाटन समारोहकेँ समाप्त कऽ तत्काले दोसर सत्रक प्रारम्भ भऽ गेलै जाहिमे यात्री/ नागार्जुनक साहित्यपर विशद् चर्चा मुख्य विद्वानसभ सँ कएल गेल । एहि चर्चामे सामिल भेलाह भागलपुर सँ आएल विद्वान डा. रामपूजन सिंह, दरभंगा सँ आएल डा. भीमनाथ झा आदि ।

लगभग तीन बजे भोजनक हेतु कैन्टिन दिश प्रस्थान कराओल गेल । जत्त आहलाद पूर्वक भोजन कऽ सहभागि लोकनि पुनः सभागारमे जम्मा होइत गेलाह । चारि बजेक बाद तेसर सत्रक प्रारम्भ भेल जाहिमे अन्य अतिथिक संगहि पुनः हमरो विशेष वक्ताक रुपमे बजबाक अबसर देल गेल जाहिमे हम नेपालमे विद्यापति, हरिमोहन झाक बाद नागार्जुन सर्वाधिक पढ़ल जाएबला मैथिली साहित्यकार छथि से कहल । नेपालमे विद्यापतिक सम्मानमे नेपाल सरकार एक करोड़ टकाक अक्षय कोष राखि ६ लाख कटा धरिक पुरस्कार मैथिली सेवीसभकेँ प्रदान कएल जा रहल जानकारी सेहो देल ।

सेमिनारक दश घंटाक बैसारमे प्रतिभागी प्रशिक्षार्थी, शोधार्थी सभक संग आमन्त्रित स्थानीय विद्वत वर्गकेँ उत्साहपूर्ण उपस्थिति रहल । रातिमे मधेपुरा कँलेजक संगीत विभागक कला शिक्षकसभद्वारा स्वागत गायन, लगायत अन्य

गीत संगीतक प्रस्तुती कएल गेल छल। रातियोमे काँलेजे परिसरमे भोजनक व्यवस्था रहैक से पाबि हमसभ होटल आबि गेलहुँ।

१ सितम्बर २०१४

आई विदावारीक दिन छैक। रातिए हम ७ बजे मधेपुरा छोडि देब से डा. रायकेँ कहि देने रहऐन। ओ राति आबि कऽ विदावारी कऽ गेल छलाह। डा. भीमनाथ झा जीकेँ ६:३० बजे बस पकडबाक रहनि, मधेपुरा- दरभंगाक बस। मुदा एकटा समस्या आबि गेलनि। आ कनेक दुखी मने विदा भऽ गेल छलाह। बादमे प्रधानाचार्य डा. अशोक जी आबि सभ समस्याक समाधान कएलनि तखन हमहुँ सभ शुभ-शुभ कऽ विदा भऽ सकलहुँ।

विदा होइते मधेपुरा पर एक नजरि देने रहिऐक। बड़ बड़ दिग्गज राजनेताक गढ मधेपुरा विकासक बाट जोहैत कोशीक प्रकोपसँ आतंकित डेरायल डेरायल सन। २००८ ई.मे बाढ़िमे डुबल रहय मधेपुरा। बड़ हाहाकार मचल रहैक। एहुबेर कोशीमे बाढि अएबाक हल्ला पसरलैक तँ लोक फेर सिहरि उठल रहए। मुदा से हल्ले मात्र रहल। एखन सभ शांत अछि। १ मई १९८१ ई सँ फूट जिल्ला बनल मधेपुरा शिक्षा क्षेत्रक केन्द्र विन्दु अछि।

हमरासभक लक्ष्य अछि सिंहेश्वर स्थानमे दर्शन पूजा करब सेहो। १० मिनटक भितर हमसभ मन्दिर क्षेत्रमे पहुँच जाइत छी। पैसबा काल पंडा निवासपर नजरि पडैत अछि। पंडासभ जेना अपन यजमानकेँ खोजैत एकत्र भेल चौल मजाक करैत। हमसभ सोझे मन्दिरक पूर्व कातसँ बनल परिसरमे जा जलपात्रमे अगाडीक शिवगंगासँ जल भरैत छी आ फेर फूलडाली बेचनिहार सँ फूलडाली लऽ मन्दिर प्रवेश करैत छी। हमरा सभक पाछा एकटा पंडा स्वत: पछोड धऽ लैत अछि। मन होइए किए ई पंडा! मुदा जखन ओ आत्मियता पूर्वक संकल्प करबैत अछि, लगैए जरुरी होइत अछि। एकटा दोसर पंडाकेँ जिम्मा लगा देल जाइत अछि। ओ मंदिर भितर शिवलिङ्गकेँ मंत्रोचारणक संग स्पर्स करा फूल , जल अर्पण करबैत छथि। तकरा बाद पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, श्रीराम परिवार, श्री कृष्ण आदिक मन्दिरमे दर्शन करबैत पूजा दर्शनक इतिश्री करबैत छथि। सरिपहुँ मोन प्रशन्न भऽ जाइत अछि। सोमदिन आ कामना शिवलिङ्ग दर्शन ...। मोनक कामना अनन्त... भगवान शिवपर बड़ भार छन्हि। कतेक केँ

पूर्ति करथु ..। जे से हमसभ पंडा महोदयकेँ दक्षिणा दऽ मन्दिर परिसरसँ बाहर भऽ जाइत छी। आब जनकपुर घुरबाक लक्ष्य अछि।

जनकपुर घुरबाक लक्ष्यसँ आगा बढैत छी , मुदा जखन राघोपुरसं पूर्वे एकटा गाममे प्रवेश करैत छी दक्षिण भारतीय शैलीआ व्यवस्थापनमे निर्मित श्री वरद्राज पेरुमाल देवस्थानक भव्य मन्दिर बाट रोकि लैत अछि। अहा! की शिल्प विधान छैक। लगैऐ दक्षिण भारतक कोनो प्रसिद्ध मन्दिरक आगाँ ठाढ़ भऽ गेल होइ। एकर प्राण प्रतिष्ठा किछुए दिन पूर्व भेल छैक -७ मई २०१४ कऽ । एखनो भितरेमे कएक ठाम निर्माण काज चलि रहल छैक। मन्दिर तँ भव्य अछिए। प्राङ्गणमे बनाओल अन्य छोट छोट मन्दिर आ भगवानक विभिन्न रुपक आकर्षण प्रतिमा मनमोहक अछि। ई भगवान विष्णुक मन्दिर थिक। बाहर बामकात गरुड़ आ दहिन कात बजरंगबलीक भव्य , आकर्षक पूर्ण कदक मूर्ति ठाढ कएल गेल छैक। चलु एहि साँस्कृतिक/ साहित्यिक यात्राक ई थप उपलब्धि रहल हमरा सभक।

यात्राक क्रममे शंकरपुर, राधोपुर आ पीपरा बजार। हँ, एत्तुका खाजा कहाँदन विशिष्ट होइछ -मुँहमे दिऔक कि गलि जाइत अछि। डेढ़ किलो खाजा किनैत छी। जलखई खएबाक जरुरति महशुस होइत अछि। कत्तऽ हएत सएह गुनधुन करैत सिमराही अबैत छी आ एकटा होटलमे जलखईसँ मोन तृप्त करैत छी। आब तँ कलौ हएतै कोशी वैरेजपर। कोशीक छोटकी माछ आ भात।

भीमनगर अबैत छी। हमरा सभकेँ बामकात कोशी वैरेज जएबाक रहैत अछि। मुदा हमसभ चालककेँ दहिन कात चलबाक लेल कहैत छिऐक।

घुरैत काल कोशी बैरेजपर अटकैत छी। भन्सार कटबैत खाना खाइत छी। कोशी वैरेजपर एक क्षण रुकैत छी -इएह कोशी अछि ने, जे सम्पूर्ण कोशी क्षेत्रक गामकेँ आतंकित कएने रहैत अछि। सुपौल, सहर्षा,मधेपुरा, वीरपुर,राघोपुर,बीहपुर, किसनगंज आ आर आर कतेक गाम। एहु बेरक हल्लासँ ई क्षेत्र भयाक्रान्त भऽ सुरक्षित ठौर धऽ लेने रहए। १८ अगस्त २००८ ई. कऽ अदकल मोन। मुदा खतरा टरि गेलै आ आब सभ निचैन अछि। से डाइन कोशी एखन आफन तोडि रहल अछि -भरल भरल कोशी, तरुआरिक धारपर नचैत कोशी ...।

घुमैतकाल बरमझियाक बूढ़ाक असली पेड़ाक नामपर आधा किलो पेड़ा सनेस लऽ लैत छी। एहि सँ पूर्व भारदहमे माँ कंकालनीकेँ सेहो दर्शन करब नहि

विसरैत छी। बाटमे पत्ता लगैत अछि जनकपुरमे बन्द हडताल छै जे ६ बजेसँ पूर्व खुजब सम्भव नहि। हमसभ गति मंथर करैत छी। रुकबो करैत छी। आ अन्ततः ६:३० बजे घरमे सकुशल घुरि अबैत ।

♦♦♦

हमरा संस्मरणमे चीन

किछु महिना पूर्व एकगोटे सम्पादक सदस्य हमरा फोन कएने छलथि। आहाँकेँ अपन लेख देबय पडल। हम छक्क परि गेलहुँ, चीन कहलाक बाद एक बेर गाडी सँ खाशाक सपना मात्र पुरा कएने हम चीनक विषयमे कि लिख सकैत छी। हम स्पष्ट कहलहुँ , मुदा समावेशक नाममे हमर आलेख हुनका चाहबे करैत छलन्हि। हम जनकपुरमे छलहुँ , काठमाण्डू अऔलाक बाद देब कहि देलहुँ। विचार छल –चीन सम्बन्धी पुस्तक पढि किछु लिखि देब। ई अलगे बात छल कि ओ हमरा मनकेँ कतहुँ नहि छुने छल।

किछु कारण बश ओ हमरा सम्पर्कमे नहि अएलथि आ हम धर्मसंकट सँ बचि गेलहुँ मुदा नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक चीन जायबला टोलीमे परलाक बाद ओ महानुभावक टेलिफोन वार्ता याद आबि गडेल। आ आइ सात दिन चीन भ्रमणक घुरि क९ आबि चुकल छी। हमरा लग लिखय जोगर बहुत रास प्रसंगसभ अछि। ओ विभिन्न आलेख मार्फत अएबे करत।

हमर दूगोट पडोशी भारत आ चीन प्रतिक जिज्ञाशा अस्वभाविक नहि अछि। भारतक लगभग सभ महानगर पहुँच बहुत रास जानकारी संकलन क९ चुकल समयमे चीन प्रतिक जिज्ञाशा बढब स्वभाविक छल। एहि बेर चीन गेलाक बाद ओ जिज्ञाशासभ सेहो शांत भेल। तीयानमेन चौक, अरनिको बनौने पैगोडा , ग्रेटवाल हमर पढल जानल ओहन जिज्ञाशासभ छल , जाहिकेँ सम्बन्ध हमरा बुझब छल, देखयकेँ छल। कहै नहि पडत जखन हमरासभक चीनक आतिथ्य संस्था सीफलेक स्वाइना फेडरेशन अफ लि तरेरी एण्ड आर्ट सर्किल कार्यक्रमक रुपरेखा उपलब्ध करौलक, हमर सोचल करिब करिब सभ स्थान हमरा दर्शनीय सूचीमे छल। मनमे एकटा उत्साह तीव्र रुपमे भेल कि आब हमर सभ सपना पुरा भ९ जाएत।

हमसभ चाइना इस्टर्न एयरलाइनक विमान सँ आसिन ७ गते ११.२५ बजे युनान प्रान्तक राजधानी कुनमिंग दिस उडलहुँ । ओतय किछु घण्टाक प्रतिक्षाक बाद चीनक समय अनुसार ६.५० मे राजधानी विजिंगक लेल चाइना इस्टर्नेकेँ विमान सँ ओहि दिस उडलहुँ बिजिंगमे हमसभ आसिन ७, ८, ९ गते रहलहुँ, १०

गते वेरियामे एयर चाइना सँ सियान (XIAN) पहुँचलहुँ। एहि शहरकेँ चीनक सांस्कृतिक राजधानी कहल जाइत अछि। हमरासभकेँ ओतय दू दिन रहबाक छल। १२ गते वेरियामे फेर हमसभ कुनमिंग पहुँचलहुँ। १३ गते दिन भरिक व्यस्त कार्यक्रमकेँ बाद १४ गते राती १२.५५ बजे ढाकाकेँ लेल प्रस्थान कऽ बंगला देशक समय अनुसार १.३० बजे रातिमे ओतय पहुँचलहुँ। करिब सात घण्टाक लम्बा प्रतिक्षाक बाद विमान बंगलादेश सँ भोर ८:३० बजे काठमाण्डूक लेल उड्लहुँ आ ९.३० बजे दिस काठमाण्डू एयर पोर्टमे पहुँच गेलहुँ। हमरासभक सात दिनक चीन भ्रमणकेँ यात्रा समय तालिका इएह छल। मुदा एहि यात्रा प्रकरणमे हम प्राप्त गरेका किछु खास अनुभव आ चिंतनकेँ एतय सेयर करब हमर उद्देश्य रहल अछि। यात्रा संस्मरण लिखय तऽ दोसरे निवन्धक रचना करब।

चिन यात्राक बहुत रास संस्मरणात्मक प्रसंग हमरा लग अछि। जाहिमे सँ एतय चारिगोट प्रसंगकेँ चर्च मात्र करय चाहैत छी। जाहि सँ हमर चिंतन आ सूझ बूझकेँ एकटा नयां धारामे प्रेरित कएने अछि। जे हमरा ज्ञानकेँ बृद्धि मात्र नहि कएने अछि, सुसंस्कृत सेहो बनौने अछि।

चीन प्रतिक जिज्ञासा नयाँ नहि छल। मात्र आंखि देखय, बुझय नहि सकलाक कारण ओ जिज्ञासा सात दिनक यात्रा प्रसंगमे पुरा भेल छल। ओहन जिज्ञाशामे ग्रेटबाल, अरनिको बनौने पेगोडा, ओलम्पिक नगर आ हेन सांगकेँ वास स्थान, जतय वौद्ध मंदिर आ डा. सीत टेम्पल (Da Cien temple) मुख्य छल।

ग्रेटवाल

चीनक ग्रेटवाल प्रतिक जिज्ञाशा विश्वक आश्चर्यकेँ कारणे तऽ छलबे कएल, विभिन्न पत्र पत्रिकामे निरन्तर आबयबला लेख, निवन्ध आ फिल्मसभमे देखाओल जायबला दृश्यसभक कारण सेहो ओतय पहुँची से लगैत छल। हमरासभ सांस्कृतिक यात्रा ओ अवसर सेहो प्रदान कएलक। हमसभ चीनक राजधानी विजिंग पहुँचलाक चारिम दिन अर्थात १० गते ओतय जायकेँ अवसर प्राप्त भेल। एक दिन पूर्वे होटलमे हमरासभकेँ ओ दिन मौशम खराब रहत, बारिस होएबाक प्रवल सम्भावना रहला सँ छत्ता लेबयकेँ लेल कहि चुकल छल। सामान्य दिनमे सेहो ओतय हावा बहब, जाढ लागब रहला सँ आहिकेँ लेल सेहो लऽ गेल गर्म



कपडा हामसभ लगौलहुँ आ होटल सँ ९ थान छत्ता बुझि अपना –आपना जिम्मा लेलहुँ।

हमरासभक गाइड आ द्विभाषिया सेहो मि. चाउ हमरासभकेँ लम्बा यात्राक बाद पर्खाल(देबाल) धरि पहुँचयकेँ लेल केबुलकारक माध्यम सँ सहजरुपमे लऽ गेल। मौशम खराब भऽ चुकल छल। फुँहि परब शुरु भऽ चुकल छल। । हमसभ छत्ताक औढमे विश्वक सर्वोच्च देबाक चढब शुरु कएलहुँ । आधा घण्टा चढब आ आधा घण्टामे घुरयकेँ समय निर्धारित कऽ हमसभ अभियानमे जुटि गेलहुँ । ओतय पहुँचलाक बाद बास्तवमे पुरे शरीरमे रोमांचक अनुभूति भेल छल – इएह अछि चन्द्रमा सँ पृथ्वीपर देखल जायबला एक मात्र बस्तु।

अरनिकोद्वारा निर्मित पेगोडा

हामसभ स्कूलमे पढैत काल अरनिकोक सम्बन्धमे खुब पढैत छलहुँ। ओ माहिर कलाकार छलथि। तिव्वत सँ चीनधरि अपन कलाक प्रदर्शन कएने छलथि। ओ महाकलाकारक कृति देखबाक इच्छा स्वभाविक छल। हमसभ ओतय गेलहुँ। हमरासभक गाइड एकगोट महिला छलीह । ओ बताबय चाहली मुदा हमसभ अरनिकोक सम्बन्धमे जानकारी रखने बतौलहुँ मुदा ओतय पहुँचलाक बाद कनिक धक्का लागल, अरनिको बनौने पेगोडाकेँ मरम्मत सम्भार करबाक लेल चारु दिससँ बांसक सिढी सँ छेकल रहलाक कारण निक जकाँ देखब सम्भव नहि भेल। मुदा ओतय भव्य बुद्ध मन्दिरसभ बना कऽ सजाओल गेलाक होइतो अरनिकोक कृतिकेँ उपेक्षित जकाँ राखब हमरा असहज जकाँ लागल। अरनिकोक मूर्ति सेहो ओही आंगनमे राखल गेल अछि, ओहि सम्बन्धमे कोनो विशेष सूचना राखयकेँ आवश्यकता नहि देखल गेला सँ कनिक नहि निक लागल।

अरनिको (१२४४–१३०६ ई.)क ओ मुर्ति बालकृष्णसमक चिनक आधारमे बनाओल गेल अछि से जानकारी पौलहुँ। मुर्तिक निचा तामाक पातमे निम्न वाक्यसभ लिखल गेल अछि –नेपालक महा बास्तुकला विद् तथा कलाकार अरनिको नेपाल आ चीन बीच सांस्कृतिक आदान प्रदान एवं मित्रताक सम्बाहक छलथि। ओ म्याओ पिङ श:केँ स्वेत चैत्य सहित बहुत भव्य भवन संग दिव्य मूर्ति आ प्रतिमासभक निर्माण कएने छलथि। उच्चस्तरक असंख्य कलात्मक बस्तुसभक संग ओ बहुतरास धार्मिक उपकरणसभ सेहो बनौने छलथि। ओ



अपन अतुलनीय कलाशैली पाछु धरि विकासित होइत रहे कहि कलाकारसभकेँ दक्षता उपलब्ध कराबयबला कार्यशाला बनौने छलथि । ओ युवान साम्राज्यकालक ४५ अम बर्षमे ओहि राज्यक सेवामे सम्मिलित भेल छलथि । ओं ल्याङ राज्यकेँ राजाक पदवी आ प्रतिभाशालीक मानार्थ उपनामद्वारा विभूषित कएल गेल छलथि । नेपालक श्री ५ केँ सरकार हुनका राष्ट्रीय विभूति घोषित कएने छल ।

तहिना मूर्तिक आधार स्तम्भकेँ दोसर कात ई प्रतिमा महान कलाकार अरनिकोकेँ स्मरणमे नेपाली जनताक दिससँ नेपाल पर्यटन बोर्ड, हिमालय बैंक तथा शाही नेपाल वायुसेवा निगमकेँ सहयोगमे अरनिको समाजद्वारा समर्पित कएल गेल अछि । २०५९ साल वैशाख १८ गते :बथ दृण्ड)

एहि प्रकार दानदातव्य प्राप्त मूर्ती राखयकेँ लेल कोनो घर, शेडक निर्माणधरि करय नहि सकबमे ककर कमजोरी मानब ? चिनियांसभ अपना सांस्कृतिक सम्पदासभकेँ देखरेखमे जाहि प्रकार ध्यान दैत अछि ओ हमरासभकेँ सीखक माध्यम किया होबय नहि सकल अछि ?

पैगोडा भितर जा निक जकाँ देखय नहि पौलाक बादो अरनिकोसंगक भेट मनकेँ प्रफुल्लित कऽ देलक । उज्जर पेगोडा (ध्जष्त्भ म्बनयदव) केँ नाम सँ चिन्हल जायबला एहि स्थानमे नेपालीसभकेँ लेल प्रवेश निःशुल्क राखल गेल अछि ।

ओलम्पिक कल्चर सेन्टर

ओहि समयमे पत्र पत्रिकामे प्राय चीनमे होबयबला ओलम्पिककेँ चर्चा पढैत छलहुँ ओ चर्चा खेल आ खेलाडीक सम्बन्धमे मात्रै केन्द्रित नहि छल । ओलम्पिक स्टोडियमकेँ बनाबट सेहो ओहिमे प्रमुख छल । अद्‌भूत कारीगरी । टीभी सँ सेहो विशेष कार्यक्रम देखा चिनियां प्राविधिकसभक ज्ञानकेँ अद्‌भूत प्रदर्शनकेँ रुपमे ओ स्टेडियमक बनाबटकेँ देखाओल जाइत छल । बादमे ओहिकेँ चिडैक खोंता (द्यच्चमक ल्भकत) कहल गेल । तहिना एकटा विशाल घर भितर पानिमे अनेको खेलक स्थल नेशनल एक्वेटिक सेन्टर (ध्वतभच ऋगदभ) सेहो दर्शनीय ।

हमरासभकेँ ओतय सेहो लऽ गेल छल –दोसर दिनमे कनि अबेर पहुँचलाक कारण किछु थप चिज देखय तऽ नहि सकलहुँ , मुदा ओलम्पिक क्षेत्रक ओ विशालता आ भव्यता देखि पछि मन अपने दंग भऽ गेल छल । सेमेन स्टार होटल

सहित सम्पूर्ण खेल अधिकृत आ अन्य अतिथिसभकेँ लेल सभ व्यवस्था एके स्थानमे चीनक राष्ट्रीय जानवर ड्रैगनकेँ आकारमे निर्माण कएल गेल ओ क्षेत्रक अपने विशेषता रहल अछि । ओतय गुडी उडाबयबला आ बेचयबलासभ प्रशस्त छल । बहुत मोल मोलहि कऽ किछु गुडी किनलहुँ –धियापुताक लेल चीनक सनेश ।

हेनसांग प्रतिक सम्मान

हामसभ हाइस्कूलक पाठ्यक्रममे हेनसांगकेँ सम्बन्धमे पढैत छलहुँ । चिनी यात्रीसभ भारतधरि पहुँच बौद्धधर्म ग्रन्थसभकेँ संकलन कऽ चीन लऽ गेल । विकट वाट-अथक यात्री ।

आइ एकटा विशिष्ट व्यत्तित्वक कृतित्व सँ साक्षात्कारक समय छल । हमर चुलबुले गाइड मोनिका (पश्चिमी नाम) हमरासभकेँ डा.सीत टेम्पलमे लऽ जाइत छली । एतय हुनक शब्दमे सियान जौंग अर्थात हामसभ सम्झयबला हैन सांगक बास स्थान, कृतिसभ सँ परिचय कराबय ओ बेसब्र छल, मन्दिर बनौलन्हि आ ओ बौद्ध कृतिसभक चिनी अनुवाद कएलन्हि । ओ अनुवाद कएने कृति ओतहि राखल अछि । भारत सँ घुरलाक बाद तत्काले सम्राटद्वारा कएल गेल स्वागत आ अन्य क्रियाकलापसभ देवालपर लिखल भव्य चित्रसभ बताबि रहल अछि । प्रकोष्ट भितर हेन सांगकेँ भव्य प्रतिमा सेहो स्थापित अछि । तहिना बाहर कम्पाउण्डमे सेहो हुनक विशाल प्रतिभा राखल गेल अछि । ओ सिमानके बासी छलथि । तएँ सिमानवासी हुनका बहुत बेसी सम्मान करैत अछि आ हुनका स्मृतिाकेँ सम्वर्द्धन करय दत्तचित्त भऽ लागल अछि ।

११९ ई सन पूर्व सियानमे बेस्टर्न हान डाइनेस्टी समय दिस सिल्क कारोबार ओतय होइत छल । पाछु इएह सिल्क व्यापार सियान होइत समुद्रतट धरि पसरल । ई व्यापारिक बाट पाछु सिल्कनेडक नाम सँ प्रसिद्ध भऽ गेल । जखन चीनमे सन २५ दिस इस्टर्न हान पिरियडक समयमे भारतीय बुद्धिज्म चीनमे प्रवेश पौलक । सम्भवतः ओकर बाट सेहो इएह सिल्करोडे छल ।

तांग राजवंशक प्रारम्भीक समय ६२९ सन दिस हेन सांग वएह सिल्करोड सँ भारतधरिक यात्रा कएने छलथि –बुद्ध साहित्य,दर्शन प्राप्त करय ओ सन ६४५ मे सियान घुरलन्हि आ बडका Wild goose Pagoda या Da Cien

Temple कैं निर्माण करौलन्हि ।

हेनसांग सन ६०० मे जन्मल छलथि , ६१३ मे बौद्ध बनलन्हि, ६२९ सँ ६४५ धरि भारत भ्रमण कएलन्हि, ६४५ सँ ६६४ धरि बौद्ध साहित्यक अनुवाद कएलन्हि , सन ६६४ मे हुनक देहाबशान भेलन्हि ।

हमरासभकें विस्तार पूर्वक ओहि पैगोडाकें जानकारी प्राप्त भेल । मनमे उठल अनेको जिज्ञाशाकें सेहो शान्त करबाक अवसर पौलहुं ।

चीनमे देखय लायक बहुत चिज अछि । आठ हजार ई.पूर्वधरिक अवशेषसभ संग्रहालयमे देखलहुं त५ ३००० सँ ५००० हजारधरि ई पूर्वक साबून आ विकसित समान देखलाक बाद सभ्यता आ संस्कृतिक विकास चिनियां भूमि अन्य क्षेत्र सँ बेसी सम्पन्न छल से आभाष होइत अछि । आव विश्वास भेल जे लिपिक विकास किया चीनमे भेल छल ।

चीन भ्रमणक एहि प्रसंगमे हम बहुत कम चिजकें चर्च क५ सकल छी , जाहिसँ हमरा पूर्वे सँ प्रभावित करैत आएल छल । अन्य बहुत चिज ओतय गेलाक बाद देखलहुं प्राचीन चीनक स्वरुप सम्राटक बास आ दरवार स्थल टेरिकोटा संग्रहालय, युनेस्को सुरक्षित कएने पाथर युद्ध (Stone Forest) आदि ।

♦♦♦

संस्कृतिकें चिन्हबाक हेतु सेहो यात्राके औचित्य होइत अछि

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आ भारतक साहित्य अकादमी विच दू वर्ष पूर्व भेल सम्झौता अनुसार एक-दोसर देशक साहित्य, संस्कृतिकर्मीसभक आवत-जावत आ सांस्कृतिक-साहित्यिक यात्राक शुरुवात करबाक वातावरण बनल । आ विगतकें वर्ष जकाँ अहुबेर सेहो ओही यात्राक क्रममे नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक उपकुलपति गंगाप्रसाद उप्रेतीक नेतृत्वमे सात सदस्यीय टोली भारतमे २०७० साल पुस ७ गते सँ १० गते धरि भ्रमण क५ घुरल अछि । ओना तँ ई साहित्य अकादमीद्वारा तैयार कएल गेल कार्यक्रममे आधारित होइत अछि मुदा दुनू पक्षक सहमतिमे तैयार कएल गेल एहि यात्राक्रमकें "सांस्कृतिक यात्रा" कहब बेसी उचित हएत ।

नेपाल-भारत बिचक सम्बन्धक सम्बन्धमे व्याख्या करैत रहब उचित नहि बुझाइत अछि । ई तँ प्राचीन रहल आ दुनू देशक सम्बन्धकें निरन्तर सुदृढ करैत आबि रहल पक्ष सेहो अछि । एहन यात्रासभ ओहि सम्बन्धक प्रगाढताकें आओर घनीभूत बनबैत अछि, उपयोगी बनबैत अछि ।

प्राज्ञ सनत रेग्मी, प्राज्ञ डा. महादेव अवस्थी, प्राज्ञ डा. बेन्जु शर्मा, प्राज्ञ राम भरोस कापडि 'भ्रमर' आ प्रकाशन प्रमुख सन्ध्या पहाडी सहितक सात सदस्यीय टोली पुस ४ गते २०७० मे एयर इंडियाक ब ज्ञ(द्ज्ञद्ध शप विमान सँ दिल्ली पहुँचल । अकादमी भारत सरकारक अशोका होटल ग्रूपक एकटा पाँचतारे होटल 'दी जनपथ होटल' मे हमरासभकें रहयकें प्रबन्ध कएने छल ।

यात्राकें सफल बनाबय लेल की कएल जा सकैत अछि , एहि विषयमे हमरासभ विच सेहो निरन्तर छलफल होइत छल । मात्र घुमि क५ जाएकें कोनो औचित्य नहि हएत । हमरासभक यात्राकें जे रुट निर्धारण कएल गेल छल ओ पूर्णतः सांस्कृतिक महत्वक स्थानसभकें छुने छल । ओ ओहिसँ सेहो एहि यात्राकें साहित्यिक संगहि सांस्कृतिक यात्राक रूपमे स्वीकार क५ ओहि अनुरुपक दृष्टि ल५ सम्पन्न क५ सकलहुं तँ ओ नयाँ आ सांस्कृतिक उत्कर्षक साक्षी सेहो बनि

सकैत अछि। हमरासभकेँ देहरादून घुमाओल गेल। कोनो समयमे नेपालक सम्पत्ती रहल देहरादूनमे नेपाली संस्कृतिक अनेको छाप आ प्रमाण देखल जाइत अछि। हमरासभक इच्छा छल १९म् शताब्दीमे दून किल्लाक रक्षार्थ अपन अल्पसैनिकक संग डटि कऽ अंग्रेजकेँ थकौने स्मृति स्थलकेँ देखब। हमसभ किला क्षेत्र रहल जंगलदिस पैसलहुँ। पुछैत-पुछैत, अनजान बाटमे चढाइ चढैत हमसभ स्थललग तँ पहुँचलहुँ, मुदा ओतय धरि मिनिभ्यान पहुँचब मुश्किल रहल सुनलाक बाद हमसभ घुरि गेलहुँ। वीर बलभद्र कुंवरक ओ ऐतिहासिक युद्धकेँ नेपालक इतिहासमे बड़ आदरक संग स्मरण कएल जाइत अछि। ओ वएह स्थल अछि जतय बलभद्र अपन ६०० गोटे वीर सैनिक लऽ ब्रिटिश कमाण्डर रोलो गीलेस्पी (Rollo Gillespie)केँ नेतृत्वमे रहल ३००० सैनिककेँ एक महिना सँ सेहो बेसी समय धरि ओझरौने रहल। ओ लडाई ३१ अक्टुबर सँ ३० नबम्बर १८१४ ई धरि चलल छल। ओतय वीर नेपाली सैनिकसभ दू गोटे अंग्रेज कमाण्डरकेँ समाप्त कएने छल। ओकरासभकेँ अंग्रेजसभ हराबय नहि सकलाक बाद किलाभितर रहल सैनिक सहित ओकर परिवार, बाल बच्चा सभकेँ पीबयबला पानिक स्रोतकेँ रोकि अनेकोकेँ जान ल लेलक आ ओकरासभकेँ ओतयसं निकलबाले अंग्रेजसभ बाध्य कए देने छल। मुदा ओ सभ आत्मसमर्पण नहि कएलक, बरु तीन दिनक बाद अपन ७० गोटे सैनिक सहित बलभद्र कुंवर बहादुरीक संग बाहर आएल छल। हमसभ ओही बहादुर सिपाहीकेँ सलाम करय जाय चाहैत छलहुँ, मुदा समय साथ नहि देलक आ हमसभ घुरि गेलहुँ। ओ स्थल दून सँ एक हजार फीटक उचाईपर रहल अछि। जकरा खलंगा किल्ला अथवा नालापानी नामसँ चिन्हल जाइत अछि।

प्रात भेने हमसभ ऋषिकेसक लेल आगु बढलहुँ। मिनी पर्यटकीय भ्यानमे हमरासभक टोली ऋषिकेस पहुँचल। साधु, सन्त आ तपस्वीसभक तपोभूमि कहल जायबला ऋृषिकेसमे लक्ष्मण झूलाक खास महत्व अछि। हमसभ लक्ष्मण झूला गेलहुँ। प्राचीन आ विशिष्ट अर्थक एहि झूलाकेँ अपना एतय रहल झुलुङ्गे पुलसँ वेसी अन्य रुपमे देखल जा नहि सकैत अछि। मुदा तैयो हजारो श्रद्धालुसभ ओतय अबैत अछि - अपन इच्छा पुरा करय। नौका बिहारक सेहो सुविधा अछि। उच्च-उच्च पहाडक बिचमे अवस्थित एहि स्थानमे 'गंगाजल' क महत्व सेहो ओतबे विशिष्ट रहल अछि। लक्ष्मण झूला गेलहुँ। देखलहुँ आ



ओतय सँ गंगाजलक संग घुरलहुँ।

ऋषिकेसक महत्व अध्यात्मिक अछि मुदा आबयबला पर्यटकसभ मात्र ऋषिकेस लगपासक मठ-मन्दिरसभक आश्रमस्थलमे सेहो ज्ञान पएबाक आशामे बैसल रहैत अछि। पवित्र नदी गंगाक जलसँ अपनाकेँ सिक्त कऽ (अभिसिंचिति) शुद्ध बनौलहुँ आ ओतहि किनल सफा वर्तनमे गंगाजल संचयन कएलहुँ। परापूर्वकाल सँ चलैत आएल धार्मिक विश्वास आ आस्थाक प्रतीक अछि गंगाजल। घर-परिवारक अनेको प्रसंगमे गंगाजल छिटि पवित्र बनाओल जाइत अछि। महाराजा जयपुर जखन इंगलैंडक यात्रा कएने छलथि, ओहि समयमे ओ ओतयकेँ पानि धरि नहि पिलनि। गंगाजल एकटा कलात्मक पीत्तलक विशाल वर्तनमे लऽ गेल छलथि आ ओएह पिने छलथि। ओ वर्तन जयपुरमे महाराजाक निजी सँग्रहालयमे पर्यटकसभक लेल एखनो राखल गेल अछि।

ओ गंगाजलक किछु बुन्द हमरासभक सांस्कृतिक धरातलकेँ एक सूत्रमे बान्हयकेँ काज कएने अछि। तएँ सेहो हामरासभक टोलीकेँ हातमे 'गंगाजल पात्र' सँ एहि यात्राक सांस्कृतिक सूत्रकेँ ऋषिकेस सँ नेपालधरि मजबुत बनाओत आ बनाबि रहल अछि।

तकरा बाद हमरासभक सांस्कृतिक यात्रा हरिद्वारक लेल होइत अछि। पवित्र गंगाक आदिस्रोत गंगोत्री सँ निकलि गंगा सर्वप्रथम हरिद्वारमे प्रकट भेला सँ सेहो ओकर अध्यात्मिक महत्व बेसी अछि। ओहि सँ सेहो एहिकेँ पहिल गंगद्वार कहल जाइत छल। महाकुम्भमे लाखो श्रद्धालुसभक जमघट होबयबला स्थल हरिद्वार देखिते शिर निहुरि जाइत अछि आ भक्तिभावक अनेको चिन्तन मनभितरमे गन्थन मन्थन करय लगैत अछि। एतुका 'हरकी पौडी' कहल जाइत महत्वपूर्ण स्थलमे जल सिंचनद्वारा अपनाकेँ शुद्ध कएलाक बाद उपर पहाडपर अवस्थिति मनसादेवीकेँ निचे सँ प्रार्थना करैत छी, ओतय पहुँचयकेँ लेल ने तँ पैदल आ ने तँ केवुलकारेसँ जायकेँ समय हमरासभक लग रहैत अछि। मुदा नेपाल भारतक हजारो तीर्थयात्रीसभक एहि पवित्र स्थलकेँ दुनू देशविचक सांस्कृतिक सेतुकेँ रूपमे स्वीकार करबाक प्रशस्त कारणकेँ चिंतन-मनन करयकेँ काज नीक जकाँ करैत छी। पुर्वजकेँ तारबाले हरिद्वारमे पूजा-अर्चना करब, दाहसंस्कारक बाद मुक्तिक लेल हरिद्वारमे अस्थिविसर्जन करब आ मोक्ष तथा धर्म प्राप्तिक लेल कुंभक महास्नानसभमे सहभागि होएब सन हमरासभक परम्परागत मान्यता



आ विश्वासकेँ निरन्तर मजबूत बनबैत आबि रहल एहि हरिद्वारकेँ हमसभ बेर बेर प्रणाम करैत छी। ओतय गरीब, भुखाएल सभकेँ भोजन कराएब, दान-दक्षिणा देबयबला श्रद्धालुसभक कमि नहि रहैत अछि। आ व्यापार सेहो ओकर प्रशस्त अछि। सय रुपैयाँमे ११ गोटेकेँ भोजन। पुरी, तरकारी! अनेको दोकनदारसभ यात्रीसभकेँ ओहिकेँ लेल आग्रह करैत देखाइत छल। हमरासभक टीमक एक गोटे सदस्य ओतहि धार्मिक आस्थाकेँ जगबैत दान देबालेल किछु फलफूल बटने छलीह। बादमे तँ मांगयबला सभकेँ लाइन हुनका पाछु एना क पडल जे दृश्य देखबा योग्य छल।

संस्कृति लोकभावना आ चरित्रक प्रदर्शन करैत अछि। ओकर रुप स्थान अनुरुप फरक-फरक होइत अछि। हरिद्वारक एकटा रुढ सांस्कृतिक स्वरुप अछि ई –धर्म करब, दान देब। एहि सँ सेहो एतुका भूमिसँ हमरासभकेँ , हमरासभक समाजकेँ जोडने अछि।

हमरासभक टोली रातिमे नयाँदिल्ली घुरि जाइत अछि, मुदा दून, ऋषिकेस आ हरिद्वारक सांस्कृतिक यात्राकेँ सुखद क्षणसभक मीठगर अनुभूतिक संग। हमसभ तँ नयाँदिल्ली स्थित प्रसिद्ध अक्षरधाम मन्दिर भितरकेँ स्वामी नारायणक जीवनकेँ नीक जकाँ बुझि सेहो अपन सांस्कृतिक यात्राकेँ एकटा सन्दर्भ स्मृतिकेँ रूपमे लेनहे छलहुँ। अक्षरधाम मन्दिर कोनो देवी-देवताक मन्दिर नहि अछि। उन्नाइसम् शताव्दीक नीलकंठ (बादमे स्वामी नारायण)क भगवान रूपमे कएल गेल क्रियाकलापक सुन्दर प्रदर्शन आ हुनके मूर्तिकेँ स्थापित कएल गेल अछि। गुजरातमे जन्मल आ बच्चामे अपना घरसँ निकलि छ : वर्षधरि निरन्तर पहाड, जंगल, पानिक यात्रा कऽ ज्ञान प्राप्त कएनिहार नीलकंठक कथा समेटल एहि मन्दिरमे हुनक जीवन चरित्र ४० मिनेटक थ्रीडी पर्दामे देखाओल जाइत अछि। सुखद आश्चर्यक क्षण तखन अबैत अछि जखन "भगवान नीलकंठ" केँ छ :वर्षक साधनायात्रा क्रममे हुनकाद्वारा नेपाल भ्रमणक प्रसंग अबैत अछि। दृश्यमे काली गण्डकी आ मुक्तिनाथ मन्दिरक स्वरुप देखाओल जाइत अछि जतय् ओ चार वर्ष कठोर साधना कएने उल्लेख कथावाचक कएने अछि। अर्थात् संस्कृतिक ई सुखद सम्मेलन अद्‌भूत आ रोमाञ्चक अछि हमरासभक लेल। विश्वप्रसिद्ध अक्षरधाम मन्दिरक आदि संस्थापक, प्रेरणा स्रोत स्वामी नारायणक सम्बन्ध नेपाल सँ सेहो रहल तथ्यकेँ ऐतिहासिक आ सांस्कृतिक रूपमे हमरासभकेँ

दस्तावेजमे सुरक्षित करय पडत।

हमसभ भ्रमणकेँ क्रममे आगरा सेहो गेलहुँ। आगराक 'ताजमहल' विश्वक सात आश्चर्यमे एक अछि। ओ बनावटकेँ लेल हएत। मुदा ओहि भितर नुकाएल भावनात्मक प्रेमक अपूर्व दर्शनकेँ स्वीकार करबाले गम्भीर होबहि पडत। हमसभ सहजरूपमे देखलहुँ, फोटोसभ खिचलहुँ। ताजमहल भितर चीर निद्रामे सुतल सम्राट शाहजहाँ आ बेगम मुमताजक कब्र सेहो देखलहुँ। कलाक अद्‌भूत मिसाल बुझैत गुन गान सेहो कएलहुँ। मुदा संस्कृतिक मर्मकेँ ओतहि आबि छुलक जखन जीवनमे प्रेमक सफलता आ असफलता, ओकर प्राप्ति आ निरसताक स्मरण होइत अछि। हमरासभक टोलीकेँ एक गोटे कहैत छलथि - हम ताजमहलमे जाइत छी तँ आँखि नोरा जाइत अछि। किए ? ओकर जबाब देबाले साहसक जरुरत पडैत छैक।

मनुक्खक जीवनमे प्रेम आ सौन्दर्यक आगमन, विसर्जन आ अभाव तिनु अवस्था अबैत अछि। हमरासभक सांस्कृतिक मान्यता सेहो ओहिकेँ स्वीकार कएने अछि। प्रेम विना जीवन अपूर्ण कहल जाइत अछि। जखन ताजमहल देखलाक बाद आहि अधुरा जीवनक बोध होइत अछि तखन आँखि नोरा जाइत छैक। ताजमहल देखलाक बाद जखन अपना प्रति प्रेमी वा प्रेमिकाक व्यवहारकेँ नकारात्मक पक्षक स्मरण होइत अछि तखन आँखि नोरा जाइत अछि आ असाध्य प्रेम पौलाक बाद सेहो किछु नहि कऽ सकल विवशता सँ सेहो आँखि नोरा जाइत अछि। कोनो शायर कहने सेहो छथि – कोनो शहंशाह ताजमहल बना हम गरीब प्रेमीसभक प्रेमकेँ मजाक उडौने छथि । देखब, बुझब आ स्वीकार करबाक अपन-अपन दृष्टिकोण होइत अछि। हमरासभक टोलीक साथीसभकेँ ककरो आँखि नहि नोराएल। शायद ओहि दिस सोचबाक अवसरे नहि पौलक। हँ, मनमे एकटा छोट पीडा त उठले छल – प्रेम आ समर्पणक एहन व्यक्तित्व शाहजहाँकेँ हुनके पुत्र जहाँगीर किल्लामे बन्दी बना देने छल। ओ किलाक झरोखासँ टुकुर-टुकुर अपने बनौने ताजमहलकेँ देखैत रहैत छल कहादन ! वास्तवमे आँखि नोरएबाक समय एतहु तँ अबैत छैक। शक्तिशाली सम्राटक गति सेहो ओएह होइत अछि जे एकटा अदना नागरिककेँ। कतहु कतहु तँ बूढ होइते बेटा-पुतहु सेवा-सुश्रुषा करबाक बदला घर निकाला कऽ दैत अछि। ओसभ खुल्ला आकासमे, चौकपर, धर्मशालामे वा अन्य कतहुँ मृत्युक वाट तकैत रहैत

अछि । हमरासभक सामाजिक चिंतनकेँ ई पीडादायी पक्षक स्मरण एतय अएलाकक बाद होएब अस्वभाविक नहि हएत !

साहित्यकारसभक संग लिखयकेँ प्रशस्त सामग्री रहैत अछि । हमरासभक एहन यात्रासभ सँ ओहिकेँ उच्च संग्रह क' सकैत छी आ ओहिकेँ अपना रचनामे समेटि ओहिकेँ कालजयी रचनाक रूपमे स्थापित क' सकैत छी । ओहिकेँ लेल सेहो ई यात्राक क्रम निरन्तर जारी राखय पडत – वागमती सँ गंगा यमुनाधरिक ई धारा प्रवाहमान रह पडतै ।

♦♦♦

पटना साहित्य उत्सबमे साहित्यिक सितारा सभक जमघट

जखन हमरासँ पटनामे होब'बला साहित्य उत्सबक हेतु इमेल पता मांगल गेल तँ थोडेक रोमाञ्च आ थोडेक खुशी सेहो भेल । राजस्थानक जयपुरमे विगत एक दशकसँ साहित्य उत्सबक आयोजन होइत आएल अछि । नेपालोसँ नेपाली भाषी साहित्यकार,समीक्षक ओत्त भाग लैत रहलाह अछि । साहित्यमे रुचि रखनिहार ककरा ने मोन हएतैक जे एहन समारोहमे सामिल होइ आ लाभान्वित हएबाक अवसर प्राप्त करी ।

से जखन पटना लिटरेचर फेस्टिभलसँ औपचारिक आमंत्रण आएल त तखन मात्र प्रशन्नता भेल आ जिज्ञाशा सेहे । आखिर हमर चयन कोना भ' सकलहुँ ओत्त । हम जखन इन्टरनेटक माध्यमसँ जानकारी प्राप्त कएलहुँ तँ फिल्मी हस्ती गुलजारक संग अशोक बाजपेयी, पुष्पेश पन्त, अंग्रेजीक चर्चित लेखक विक्रम सेठ सन सन व्यक्तित्वक सहभागिताक सूची देखल आ तकरा अतिरिक्तो जकर नाम हम नहि जनैत छलहुँ, तिनका सभक नमहर सूची छल । लगभग ४३-४४ गोटेक पैनल बनाओल गेल छल , जाहिमे ४५ मिनटक समय द' विमर्श कराओल गेलै । साहित्यक विभिन्न विधापर व्यापक बहस भेल छल तँ गीत संगीत पर सेहो जमि क' विचार विमर्श भेल । प्रत्येक साँझ शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, गजल आदिक मनोहर गायन स्थानीय आ बहरिया चर्चित गायक सभकद्वारा सम्पन्न भेल छल ।गौहर वाइक डङ्गशमरी दर्शककेँ झुमा देने रहैक । अर्थात १४ फरवरी सँ १६ धरिक तीन दिना ई महोत्सब अदभूत संयोजनक हेतु स्मरणीय रहत । एकर उद्घाटन विहारक मुख्यमंत्री नितिश कुमार कएलनि ।

हँ, बातक पुनः जडिमे आउ । शुरुमे हमरा बड़ जिज्ञाशा रहए जे हमर सहभागिताक लक्ष्य की ? हम हिन्दी साहित्यक बारेमे बात करबैक आकि किछु आने सन्दर्भ रहतैक । मुदा तकरो समाधान नेटेमे भेटल । कार्यक्रमक रुप रेखा जे आयोजकद्वारा प्रेस सम्मेलनमे उपलब्ध कराओल गेल रहैक ताहि अनुसार हमरा दोसर दिनक कार्यक्रममे राखल गेल मैथिलीक पैनलमे एकटा वक्ताक रुपमे

सामिल कएल गेल छल जकर संयोजन एकटा युवा समीक्षक अरुण नारायण करताह आ ओहिमे हमरा अतिरिक्त मैथिली हिन्दीक कथाकार उषा किरण खान आ चर्चित युवा समीक्षक डा. तारानन्द वियोगी सेहो वक्ताक रुपमे रहताह। ई पढि मोन प्रशन्न भेल, चलु धर्म संकट सँ मुक्ति भेटल। स्व.सुन्दर झा शास्त्रीक शब्दमे हमरा हिनहिनाए नहि पडत , माने हम मैथिलीमे बाजि सकैत छलहुँ।

हमरा सभक आवास होटल चाणक्यमे राखल गेल छल जे सभ तरहेँ व्यवस्थित आ मनलग्गु छलैक।

कार्यक्रमक आकर्षण

पटना साहित्य उत्सव (Patana Literary Festival)क ई दोसर संस्करण छल। पहिल गत वर्ष २०१३ मार्च कऽ आयोजित छल। पहिल हएबाक कारणे. ओ किछु लघु छल , मुदा आकर्षणक जे विन्दु पहिलमे रहैक ओ एहूमे छल अर्थात् फिल्मी गीतकार गुलजार। यद्यपि ओ बहुत नीक कवि छथि, हुनक एकटा कथा संग्रह जे वाणी प्रकाशन, दिल्ली प्रकाशित कएने अछि , हमरा लग अछि तएँ कथाकार आ फिल्मक पटकथा लेखक सेहो छथि। मुदा हुनक चर्चा फिल्मकर्मीक रुपमे परुको साल भेल रहन्हि एहु साल धुम गज्जरि कएलनि। हुनकासँ सटि सटि कऽ फोटो खिंचएबाक होड़ रहलै। मिडिया सभ हुनके चारुकात लुधकल रहल। पटनाक अखबार तीन दिन धरि आर ककरो नहि चिन्हलक। मात्र गुलजारक चित्र आ विचार पसरल रहल।

हँ, एक दिनक हेतु पटनाक मिडियाँकेँ अपना दिश मोडलक अंग्रेजीक लेखक विक्रम सेठ। हुनक सम्वादबला पैनलमे पटना म्युजियमक अडोटोरियम खचाखच भरल रहल आ से युवा युवतीक सँ बेसी। डा.शेफाली रायक संग सेक्सपर खुल्ला बहस करैत आ समलैंगिक सम्बन्धकेँ उचित ठहरबैत विक्रम सेठ युवा सभक आँखिक पपनीपर नृत्य करैत रहल। ओ दू हृदयक विचक प्रेमकें सर्वथा उचित ठहरौलनि। पद्मश्री सम्मानसं विभूषित द सूटेबल ब्यायक लेखक विकम सेठ युवा सभक अनुरोधपर किछु अपन अंग्रेजी कविता सुनौलक।

कार्यक्रममे हुन माय लीला सेठ सेहो छलीह जे कहियो न्यायाधीश छलीह आ एहि सम्बन्धि बनल एकटा आयोगक सदस्यक रुपमे अपन प्रतिवेदन दऽ कोर्टकेँ फैसला करबाक हेतु वातावरण बनएबाक काज कएने छलीह।

सहित्य उत्सवमे अशोक बाजपेयी, आलोक धन्वा, रविन्द्र राजहंस, नन्द किशोर आचार्य, अरुण कमल, सुमन केसरी अग्रवाल आदि हिन्दीक चर्चित कवि लोकनिक कविता बाचन सत्र साहित्य प्रेमी सभक उल्लासक क्षण छल। हिन्दी कवितामे प्रतीक विधानक प्रयोग आ ताहिसँ इच्छित भावक स्थापना कोनो गीतक बोलपर नृत्यांगनाद्वारा कएल जाएबला भावनृत्यक भाषाक बैशिष्ट दिश इंगित करैत छल। अद्भूत, रोमांचपूर्ण। मैथिली कविताक जडिकेँ फेर सँ खोधबाक मोन होबऽ लगैछ - ओहिमे नव ढंगक उबजाउ माटि आ उर्बरक मिला पुष्ट करबा लेल।

आनन्द तँ तखनो अबैत रहल जखन गुलजारक गीत / कविता यात्रापर नोंक झोक संग विदेश विभाग सँ सेवा निवृत हिन्दी अंग्रेजीक सुप्रसिद्ध कवि पवन वर्मा प्रश्न पुछैत रहलाह , गुलजार तकर उत्तर दैत रहलाह। फिल्मसँ हटि कऽ पूर्णतः साहित्यिक माहौल बनाओल गेल रहैक। अपन किछु नव कविता ओत्त ओ रखलनि। शब्दक चमत्कार आ एकटा जीवनक विशाल फलक दिग्दर्शन।

वाह गुलजार - ' इतनी छोटी, दुबली-पतली पगडंडी,
रोज पहाडो की चोटी पर चढ जाती है,
इतनि चौडी तारकोल की सड़के भी,
वहाँ नहीं जा पाती ....

फिल्मी दुनियाँमे संघर्षरत् आ किछु हदधरि कामयाब सेहो गायक, गीतकार, संगीतकार, थिएटर कलाकार आ सभ सँ बढि कऽ विहारक प्रतिभा पीयुष मिश्रा जखन मंचपर अएलाह तँ वुद्धलानक बहरिया पण्डालमे फेर सँ दर्शक, श्रोता भरि गेल। खुरसी खाली नहि छलैक। ओ अपन फिल्म प्रवेशक कथा तँ सुनएबे कयलनि। किछु गीत गओलनि, ओकर सचना प्रक्रियापर लोकक जिज्ञाशा शाँत कएलनि। किछु आरो फिल्मी हस्ती सभ आयल छलाह जे विहारेक छथि आ ओत्तय कोनो ने कोनो रुपमे स्थापित छथि।

मिडियापर सेहो एकटा सत्र छल। जाहिमे 'समाज आ बजारक विचमे मिडिया' पर खुलि कऽ बहस भेल। संचार जगत सँ जूडल ख्यातिनामा पत्रकार रबीश, श्रीकान्त, संदीप भूतोड़िया आदि पत्रकारिताक अवस्था, घरानासभक पत्रकारिता पर प्रभाव, पाठकक अवस्था आदिपर घनघोर विमर्श सभ भेल।

साहित्य उत्सबक एकटा आर आकर्षण छलीह -बेबी हल्दार, जे कहियो कलकत्तामे एकटा सेठक ओत्त घरेलु कामदार रहए आ ओत्तहि ओ अपन जिवनी लिखलक जे छपिते बाजारमे लुट्टी भऽ गेलै, जकर ओनो भाषामे संस्करण निकललै आ ओ रातारातरात चर्चित भऽ गेलीह । ओकरापर बनल फिल्म सेहो ओत्त प्रदर्शन भेलैक आ ओ दर्शकसँ प्रत्यक्ष सम्वादित सेहो भेलीह । एखन धरि तीन गोट पुस्तक ओ प्रकाशित कऽ चुकल छथि । बेबी हल्दार सम्पूर्ण कार्यकमक आकर्षण छलीह ।

कार्यक्रममे कवीरपर सेहो व्यापक वहस भेल । एकटा पैनल कबीर पर केन्द्रित रहैक । अब्दुल विस्मिल्लाह साहेब एकबेर त गरमा गेलाह कबीरक ओहि पांतीपर जे मस्जिद आ मुल्लापर लिखल अछि । ओ पांती सुनौलनि

कांकर पाथर जोड के मस्जिद लिया चुनाय,

उसपे चढ मुल्ला बांग दे क्या बहरा हुआ खुदाय ।

ई पांती ओ कोना लिखलनि पता नहि,मुदा ई सत्य अछि जे कवीर अनपढ जरुर छलाह,मूर्ख नहि । पैनलमे कबीर प करिब पचीस वर्षसं शोध क रहल पुरुषोत्तम अग्रवाल हुनका विश्व कविक रुपमे स्थापित कएलनि ।

तहिना फणिश्वर नाथ रेणुपर केन्द्रित एकटा पैनलमे पत्रकार चन्द्रकिशोर झा, रुचिरा गुप्तासँ बातचित करैत रेणुक कतेको छुअल अनछुअएल प्रसंगक चर्च कएलनि । दुनू पत्रकार रेणुकेँ नीक जकाँ स्मरण कएलक । खास कऽ रुचिरा गुप्ता अड़रियाक छलीह आ रेणुक संग सम्पर्कमे रहलीह । तएँ ओ कतेको प्रसंगकेँ ओत्त रखलीह । चन्द्रकिशोर झा रेणुकेँ नेपाल सँ सम्बन्धकेँ नीक जकाँ फरिछओलनि ।

क्षेत्रीय भाषाक सन्दर्भ

एहि बेरुका उत्सवमे पहिल बेर मैथिली सामिल कएल गेल छल । जेना कि आपसमे तय भेल रहैक उषा किरण खान मैथिली लेखिकापर बजतीह, तारानन्द वियोगी समग्र मैथिली साहित्यक प्रगति आ अवस्थापर टिप्पणी करताह आ हम नेपालक मैथिली साहित्यपर प्रकाश पाडबैक । भेवो सएह कएल । मुदा ४५ मिनेटक समय कम रहैक । तैयो सूचना प्रवाह कएल गेल । श्रोतामे मैथिली भाषी रहथि से तखन बुझि पडल जखन हम अपन विचार मैथिलीमे राखि रहल

छलहुँ , आ उषा जीकेँ दोबारा बजबाक अवसर भेटलनि आ ओ हिन्दी कि मैथिलीमे बाजीबला मनःस्थितिमे अएलीह तँ स्रोता एक स्वर सँ मैथिलीमे बजबाक बात उठौलकनि । मैथिली पैनल अपन विचारमे पूर्ण छल , मुदा पटना कओलेजक एकटा प्राध्यापकक अबूझ आ आक्रोशपूर्ण प्रश्नसँ सम्पूर्ण परिसरमे चर्चा आनि देलक - आखिर मैथिलीमे ई कि भेलै ? चलु एतहु मैथिल अपन चरित्र देखएबा सँ बाज नहि अएलाह ।

भोजपुरीक सत्र कएक अर्थमे स्मरणीय रहत । पहिल तँ ओहिमे भोजपुरी साहित्यक पुरोधा व्यक्तित्व, साहित्य अकादमी सभाक सदस्य, अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी सम्मेलनक अध्यक्ष अरुणेश निरनक उपस्थिति महत्वपूर्ण छल आ दोसरमे भीखारी ठाकुरक एक मात्र जिवित संघतिया रामाज्ञा राम (१०० वर्ष)क गीत गायन । ओह ! अद्‌भूत छल भीखारी ठाकुरक गीत ओकर मुँह सँ सुनब ।

अंगिका आ बज्जिकापर सेहो चर्चा खुब भेल । एकटा सत्र एकरा लेल समर्पित छल । एहि चर्चामे भाग लेलनि अंगिकाक लेखक डा. योगेन्द्र , डा. रामलखन सिंह अरोही आ आचार्य चन्द्र प्रकाश पराशर जी । हिनका सभक मत रहए जे एहि भाषाक अकादमीक गठन नहि भेला सँ एकर साहित्य लोकतक पहुँचि नहि रहल अछि । ओ सभ हिन्दीसं फराक भऽ आब क्षेत्रीय भाषा बढि रहल अछि से दावी सेहो कएलनि । आरोही जी अपन अंगिका भाषाक कविता सुनौलनि -'कइसे रहबई गांव माँ , अब मौत बसइ छै गाँव माँ, गर्म हवा दिन रात बहइ छै गाँव माँ .... ।

मगही साहित्यपर भेल चर्चा एहु मानेमे चर्चित रहल जे ओहिमे भाग लेनिहार साहित्यकार लोकनि मैथिली लगायतक भाषाक आदि स्रोत मगही हएबाक दावी करैत गेलाह । ओ सभ हिन्दीसं प्राचीन मगहीके मानलनि । भाग लेने रहथि मिथिलेश , डा. भारत आ संयोजन रहनि नरेनकेँ । नेपालमे जेना मैथिली भाषीकेँ मगही भाषी बना राजनीतिक खेल शुरु भेल अछि तेहन आब ओम्हरो शुरु भऽ रहल छैक , जखन वर्णरत्नाकरकेँ मगहीक आदि ग्रन्थ कहल जाए लगलैक अछि ।

समग्रतः पटना साहित्य उत्सब हरेक स्तर पर सफल रहल । अगामी दिनमे एकरा आर नीक जकाँ माँजि कऽ आयोजन कएल जएबाक चाही ।

किछु असन्दर्भ

- पटना साहित्य उत्सवमे स्थानीय साहित्यकार बारल गेलाह जे आरोप पत्र पत्रिका सभ लगबैत रहल आ तकर उदाहरण ओत्त दर्शक दीर्घामे बहरिया आमंत्रितसँ फाजिलक अनुपस्थितिसँ बोध भेल छल ।
- एहि आमन्त्रण नहि देबामे आयोजक लोकनिक मजबुरी भऽ सकैत छन्हि, मुदा तकरा टारबाक प्रयास हएबाक चाहैत छल ।
- समयावधि कम राखल गेल छल । ४५ मिनटमे सभ वस्तु समेटव संभव नहि रहैक । तएँ आगाँ समय बढएबा पर जोड देल जाए ।
- पुस्तक स्टॉलकेँ आर वृहत करबाक जरुरी । जरुरी पुस्तक नहि भेटलै लोककेँ , मात्र लेखक जे आएल रहथि तकरे रहैक ।
- माइकक व्यवस्था होइतो, उपयुक्त साउण्ड सिस्टमक आभाव रहैक, जाहि सँ प्रस्तोताकेँ कठिनाई भेलनि ।
- मंचक सजावट पटना साहित्य उत्सवक गरिमा सन नहि रहैक ।
- स्थानीय मिडियामे स्थानीय भाषाक सत्रके कम मोजर देल गेलै ।

समग्रमे -

नवरस स्कूल अफ परफर्मिंग आर्टक एहि आयोजनमे डा. अजित प्रधान, हुनक पत्नि नविता प्रधान आ जन सम्पर्क व्यवस्थामे सक्रिय अराधना प्रधानक कुशल व्यवस्थापन अत्यन्त सुदृढ छल आ से शुरुसं अन्त धरि बनल रहल । सहभागी साहित्यकार, कलाकार , विद्वत वर्ग पूर्ण सन्तुष्ट देखल गेला । विहार सरकारक कला, संस्कृति एवं युवा विभागक सचिव चंचल जीक लगनशीलता पर हुनका बधाई नहि देब अपराध हएत । अन्ततः सफल आयोजनक सफल परिणति भेल ।

♦♦♦

एक दिन मगधक प्राचीन राजधानीमे

आइ कएक दिनसं नियार भऽ रहल छलैक - महोत्तरीक गौरका मेला जएबाक चाही तीन वर्षपर मलेमास अबैत छैक आ एत्त लोक नदीमे नहा कऽ धार्मिक आस्थाक मान रखैत अछि । कोनो दुरो नहि छैक, गाडीसं कुछेक मिनटक बाट । रवि आ मंगल दिन शुभ होइछ कहांदन । फलाफल भेटै छै ।

हमरा पटना जएबाक छल, प्रकाशनक काजसं । भेल जे मलमासमे राजगीर त आर महत्वपूर्ण मानल जाइत छैक । किए ने एक पंथ दू काज होए । तैयारी शुरु भेल आ जुलाई ५ ता. कऽ पटना पहुँचि गेलहुँ । पत्नि संगे छलीह । जंकि राजगीरक यात्रा छलैक, मलेमासक लाभ उठएबा लेल जेठकी पुतहुके सेहो साथे लऽ लेने रहथि ।

पटनामे एकटा एहन परिस्थिति भेलै जे हम राजगीर जएबासं मठेर लगलहुँ । व्यस्तता आ पानिक अबिरल आगमन । सुखल पटना हमरा सभक आगमनक संगे वर्षाक पानिसं डुबि गेल सन छल - मछरी वाजार, राजेन्द्र नगर, नालारोड, एकजीविशन रोड, एतेक धरि जे पहिल सांझ इन्द्रपुरीक प्रवेश सडक सेहो डुबि गेल छल । रवि आ सोम घनघोर वर्षा । दुत । आब की कर' जाएल जाए । पत्निसं पुछलियनि । ओ पुतहु आएल हएबाक कारण आ आवश्यकता दिश ध्यान आकृष्ट कएलनि । भेल तखन मंगल कऽ नहि, बुध कऽ जाएल जाए । मंगल कऽ पटनामे बचल काज पुरा कएल गेल, गाडीक साफ्टमे किछु समस्या छलैक तकरा ठीक कराओल गेल । हमरा सभक संगे जमाय जएबाक लेल तैयार भेलाह - राजगीर मेला ।

तखन बुध दिन अर्थात जुलाई ८ ता. कऽ भोरे ५.३० वजे हम सभ तैयार भऽ गाड़ीमे बैसि गेल छी । एहि ठामसं ११० कि.मि. पूर्व-दक्षिण कोनमे अवस्थित राजगीर पहाडी आ जंगलक विच बसल प्राचीन मगधक राजधानी रहल प्राकृतिक सौन्दर्यसं भरल ठाम अछि ।

२०११ ई. क जनगणनाक अनुसार एतुक्का जनसंख्या ४१,६१९ अछि तं ई समुद्र तलसं २४० फिटक ऊंचाई पर अवस्थित अछि । विहारक नालन्दा जिल्लामे रहल एहि नगरीक विशेषता गर्म जलक कुंआ (चश्मा) छैक, जाहिमे डुबकी लगा

क ऽ लोक धन्य मानैत अछि। सामान्यो दिनमे एहि गर्मजलमे स्नान कएल जाइछ। मान्यता छैक एकर पानिमे औषधीय गुण अछि जे चर्मरोग आदिमे फलदायी होइत अछि। एहि छोट-छोट गर्मजलक कुआ मध्य ब्रम्हकुण्ड अत्यन्त महत्वपूर्ण मानल जाइछ, जे शुरुएमे छैक आ ऐतिहासिक कथाक आधार पर कहल जाइछ जे सम्राट विम्वसार कहियो काल स्वयं एहि गर्मजलमे स्नान कर' अबैत छलाह। विम्वसार (५५८ ई. सं ४९१ ई. पूर्व)क शासन काल ५४२ई. पूर्व सं ४९२ ई. पूर्व धरि मानल जाइत अछि। अर्थात् ई ब्रम्हकुण्ड पांच सय ई. पूर्व धरिक अछि जे प्राचीनतम् सांस्कृतिक पुरातात्विक सम्पदाक रुपमे एखनो लोक ज्ञानक बृद्धि कऽ रहल अछि।

स्कारपिओ अपन गति लऽ चुकल अछि - ८०-९० कि.मि. प्रति घंटा। एहिसं तेज चलएबा लेल हम चालकके मना कऽ देने छिऐक। हड़बरीसं गड़बरीक संभावना बेसी रहैत छैक।

पटनाक परिवहन नगरसं नीकलि आगांक मोड़सं राजगीर जाएबला फोर लेन पर दौग लागल अछि गाड़ी। गाडीकि एहि गतिक संग बाटमे पड़ैत दू गोट महत्वपूर्ण स्थलक दर्शनक लाभ मोनके गुदगुदा दैत अछि-विहार शरीफ आ नालन्दाक।

विकासप्रिय राजनेता, नेपाली जनमानसमे अपन छाप छोड़ने विहारक मुख्य मंत्री नितिश कुमारक निर्वाचन क्षेत्र अछि विहारशरीफ। भारतीय अखबार सभमे विहारशरीफक नाम बरोबरि पढ़ैत रहैत छी। राजगीर सं २५ कि.मि. उत्तर पूर्व दिश अवस्थित ई शहर मुसलमान सभक हेतु बड़ पैघ तीर्थ स्थल मानल जाइत अछि। एत्त प्रसिद्ध मुस्लिम संत मखदूम शाह शरफुद्दीनक समाधि छैक। ई कहियो विहारक राजधानी सेहो रहि चुकल छल। मध्यकालमे ई मुस्लिम शिक्षाक एकटा पैघ केन्द्र छल, तहिया एकरा ओदंतपुरी कहल जाइत छलैक।

होइए, किछु काल विहारशरीफमे बीलमि जाइ। चारु कात नजरि खिरा शहरकें नीहारैत छी। चलु, एत्त अएबाक प्रशन्नता तं भेटिए गेल। ओम्हर राजगीरमे देरी भऽ सकैछ आ फेर बाटमे नालन्दा तं सेहो अछि ने!

हम इतिहासक विद्यार्थी नहि छी, कक्षाक हिसावसं। मुदा रुचिसं निरन्तर अध्ययन करैत रहलहुँ अछि। नालन्दा अपन बौद्ध विश्वविद्यालयक हेतु, पांचवी शतावदकि वादे खासे चर्चित रहल अछि। एखन एत्त विश्वविद्यालयक अवशेष



लोक देखैत अछि आ एकर प्राचीन स्वरुप आ विस्तार प्रति नतमस्तक होइत अछि।

इतिहास कहैत अछि गुप्त वंशक राजा कुमार गुप्त प्रथम पांचवी शताव्दीमे एकर निर्माण कएलक। जे पहिने बौद्ध विहार मात्र रहैक बादमे विश्वविद्यालयक स्तर धरि विकसित भेल। एकरा एहि रुपमे विकसित करबामे मौखरी नरेश सं लऽ हर्षबर्द्धन धरि आर्थिक सहयोग कऽ स्थापित कएलनि। १३०३ ई. मे मुसलमान आक्रमणमे एकरा ध्वश्त कऽ देल गेल। वहुतो भिक्षुक मारल गेल - विश्वविद्यालय तहस-नहस भऽ गेल।

विश्वविद्यालयक अवशेष अलेक्जेन्डर कनिङघम द्वारा खोजल गेल छल। एत्त १० हजार छात्र एवं दू हजार शिक्षक रहैत छलाह। ई महायान बौद्ध आ हीनयान बौद्ध शिक्षाक उच्च मान्यता प्राप्त केन्द्र छल। ७ वी शताव्दीमे चिनी यात्री ह्वेन सांग एक वर्ष धरि एत्त विद्यार्थी आ शिक्षक रुपमे रहल हएबाक दस्तावेज उपलव्ध अछि।

हम नालन्दाक एहि महान धरतीकें प्रणाम करैत छी आ भग्नावशेष क गरिमाके हृदयमे आत्मसात् करैत राजगीर दिश बढ़ि जाइत छी जे एत्त सं मात्र १० कि.मि.क दुरी पर अछि।

लिअ प्रवेशद्वार आबि गेल - राजगीरमे अपनेक स्वागत अछि। किछु मास पूर्व जखन हम सब बौद्ध गया गेल रही, तहिए भेल जे राजगीर यात्रा नहि भेने बौद्ध गयाक यात्रा अपूर्ण अछि। दुनू स्थलक बौद्ध सर्किटक रुपमे नीक कनेक्शन छैक। इएह किए-नेपालक लुम्विनी (बुद्धक जन्म स्थल) आ बोधिसत्व प्राप्तिस्थल बौद्ध गया (जाहिमे राजगीर सेहो पड़ैत अछि) कें एकटा बौद्ध सर्किटक रुपमे विकसित करबाक विचार भारतक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नेपाली संसदमे व्यक्त कऽ चुकल छथि। आ लुम्विनी आ बौद्धगया विच धार्मिक कनेक्सनक बात तं समझौतामे आबि गेल अछि।

'वायुपराण'क अनुसार मगध सम्राट वसु द्वारा राजगीरमे वाजपेयी यज्ञ कराओल गेल रहए जत ब्रह्मा द्वारा अग्निकुंडमे विभिन्न तीर्थक जलके आह्वान कऽ मंगाओल गेल रहए - सएह जलक भंडार एखन ब्रह्मकुंड थिक। ताही ग्रन्थ सभक आधार पर ई मान्यता अछि जे मलेमासमे एत्त सभ देवी देवता आबि कऽ बैसैत छथि। आ इएह समय छैक एत्त बड़ पैघ मलमास मेला लगैत अछि।

मेलाक नाम पर एखनो हमर देह रोमांचसं भरि जाइत अछि। हमर मित्र



राधाकान्त झा (७३ वर्ष) गवाह छथि-जनकपुरक विवाहपञ्चमी आ रामनवमी मेलामे नियमित आनन्द उठएबामे ओ निरन्तर साथ रहैत छलाह। जखन हम हाइ स्कूलक छात्र छलहुँ प्रायः पांच-५ कक्षाक तखन पहिल बेर हुनके संगे विवाहपञ्चमी मेलामे आएल एकटा टुरिंग टाकिज (घुमती सिनेमा हौल) जे तिरहुतिया गाछीमे छल, मे 'दुश्मन' फिल्म देखने छलहुँ। ई हमर जीवनक पहिल फिल्म छल। थर्ड वा फोर्थ क्लाशमे पटहा पर बैसि कऽ देखल एहि फिल्ममे रामसिंह डाकु बनल रहए देवानन्द। युवा देवानन्द। आब बुझैछी ई फिल्म १९५६ ई. मे बनल छल।

से राजगीर मेलाक शुभारंभ भ चुकल अछि। गाडी चालक पार्कमे राखि अबैत अछि। एत्तसं पैदल वा घोड़ा गाडीमे जाए पड़ैत छैक। अनुभवक कमिसं हमसभ पैदले बढ़ि जाइत छी। सड़कके दुनूकात दोकान सब शुरु भऽ चुकल अछि। मीठाइ,पुरी, जीलेबी आ नमकीन सभ। श्रृंगार सामग्री। कनेक आगां बढ़लापर मेलाक तमाशा-खेल। थिएटर, सर्कस, जादू आ मौतके कुआ। हिड़न खटोला घुमुआ झूला....। पता नहि आर कतेक। बड़ पैघ क्षेत्रफलमे पसरल अछि। उपर पहाडी पर एकटा मंदिर, जत्त लोक सब हेंज बांन्हि पहाड़ चढ़ि जा रहल अछि।

जनकपुरसं चलैत काल हमरा एकटा जिज्ञाशु पुछने छल-राजगीरमे नदीक संगम नहि छैक, लोक नहाइत कत्त छैक। हम सकपका गेल रही। नदी बूझल नहि छल, आ नहएबा लेल ब्रह्मकुण्डक नाम मात्र जानकारीमे छल। से कहने रहिऐक सएह।

एत्त पता चलैत अछि नदियो अछि-प्राची, सरस्वती आ वैतरणी। एकर अवस्था की छैक पता नहि। हम सभ जखन ब्रह्मकुण्ड दिश जाइत छलहुँ त एकटा पुल पार करैत रही, जकर निचां एकटा नहर बहैत रहै आ जकर घोर मठा पानिमे किछु महिला स्नान करबाक उपकम कऽ रहल छलीह। लगैए - इएह तीनू नदीमेसं एक हएत।

जे से आन लोक जकां हमहुँ सभ ब्रह्मकुण्ड दिश बढ़ैत छी। अहा, वांसक घेरासं आवागमनक सुविधाक हेतु वाटबनाओल गेल अछि-पुरुष आ महिलाक हेतु फूट-फूट।

हं, ई कुंड धरि जएवा लेल मात्र अछि। जखन प्रवेश द्वारा लग जाइत छी तखन



पुरुष-महिला संग संगे प्रवेश करैत अछि। लिअ-आबि गेलहुँ ब्रह्मकुंड। महिला-पुरुषक भीड़ लागल अछि। लगभग एक दर्जन गर्म कुंड छैक पहाड़क तलहट्टीमे जत्त लोक जा कऽ स्नान करैत छल। प्रशासन आब पाइपक द्वारा गर्म पानिक स्रोतकें कलात्मक रुपें एहि सप्तधारा झरनामे लओने अछि जकरा निचां बैसि कऽ लोक स्नान करैत अछि, माथपर पानि छिटैत अछि आ नहएबाक आनन्द लैत अछि। पंडा सभ एत्तहु अपन कमाल देखबैत अछि-पीतरिके लोटामे पानि भरि देहपर छीटि दैत, चानन लगादैछ। आ.....।

हमरा सभके भेल जे इएह छै ब्रह्कुंड। नहि ई तं सर्वसाधारणकें सुविधाक हेतु प्रशासनक ओरिआओन छल। बास्तवमे ब्रह्मकुंड पूर्व दिशक दरबज्जासं जाए पड़ैत छैक। लोक पैसैत अछि। कुंडमे नहाइत अछि आ उत्तर मुंहक द्वारसं बहरा जाइत अछि। सप्तधाराक प्राङ्गनकें चित्र लेबाक मनाही अछि। हम दोसर दरबज्जासं बाहर आबि भेन्टलेशनक गोल भूर दऽ कऽ एक-दूटा चित्र लऽ लैत छी। पत्नि आ पड़रियाबाली पुतहु कुंडमे पैसैत छथि। आएलो छथि ताही लेल। हम सब वाहर प्रतिक्षा करैत छी। आ जखन ओ सब अबैत छथि तं आगांमे बनाओल लक्ष्मीनारायण मंन्दिरमे दर्शनक हेतु पठा दैत छीयनि।

अद्‌भूत छैक राजगीरक अध्यात्मिक अवस्था। बौद्ध, जैन आ रामानन्द सम्प्रदायक अद्‌भूत संगम। राजगीरक पहाडी पर लगभग दू दर्जन जैन मंन्दिर बनाओल गेल अछि, जत्त पहुंचब कठिन छैक, कष्टकर छैक। तहिना जापान सरकारक एकटा संस्था पहाड़क उंचाई पर आकर्षक स्तूप बनौने अछि, जकरा देखबाक हेतु कष्टकर बाटसं जाए पड़ैत छलैक। आब रज्जू मार्ग (रोपवे) सं जएबाक सुविधा सेहो छैक। महाभारत प्रसंगमे जरासंघ आ कृष्णाक युद्धक सन्दर्भ एहि ठामसं अछि। हिन्दुधर्मावलम्वी सेहो अपन अराध्यदेव विष्णु आ लक्ष्मीके दर्शन कऽ भावविभोर भऽ उठैत अछि।

पत्नि आ पुतहु दुनू गोटे दर्शन कऽ बहरा चुकल छथि। हम सब वाहर निकल' लागल छी। उतरैत काल किछु चित्र उतारबाक विचार अबैत अछि आ साक्षी चित्र खिंचल जाइछ।

सभसं पहिने शुरुएमे जुत्ता-चप्पल राखल ठाममे जा कऽ ओ लेब' पड़त। प्रशासन द्वारा निःशुल्क व्यवस्था छैक। से लऽ हम सब बाहर सड़क पर आबि सोच' लगैत छी की करी। पहिने भूख मेटाओल जाए अथवा पहाड़ दिश दर्शनीय स्थल देखल जाए।



ओना शुरुमे मेहमान घोड़ा गाडी बलाकें खुब पछोड़ धरैत छथि-हमरा पांच गोटेकें घुमा देब लेल। ओ मानैत नहि अछि-दश गोटेके मात्र चढाओल जाइछ। आ सफरक समय ? मात्र ४-५ घंटा। नहि, भेल पहिने भूखे मेटाओल जाए। हम सभ एकटा जलखईक दोकानमे पैसैत छी-कचौरी, जिलेबी आ तरकारी !

से पहिने जलखई, तकरा बाद दर्शन, मेला-ठेला !

जखन भूख टरल तं भेल आब किछु ठाम घुमि फीरि लेल जाए। जमाय जी काफी प्रयास कऽ चुकल छलाह, टमटम बाला दश गोटा सं कम लऽ जएबा लेल तैयार नहि छल। जखन कि एक टमटमके जे सौसे भाड़ा हयतैक से देवाक बात सेहो कहि चुकल रहथि। यात्री एक होइ कि दश भाडा जं निर्धारित भेटबे करैत छैक तं लेबामे हर्ज की। मुदा टमटम बाला टस सं मस नहि भेल। अजगूत लागल। तखन एकर भेद बुझलिऐ। वास्तवमे ई सभ विहार पर्यटन वोर्डसं स्वीकृति प्राप्त सवारी चालक सव छल जकरा प्रति व्यक्ति विभिन्न दर्शनीय ठाम देखएबाक भाड़ा निर्धारण छलैक जं ओ पांच गोटेके लऽ जाइत त पांच गोटेक पाइ मात्र ओ लऽ सकैत छल। जे ओकरा लेल घाटाक सौदा होइत। जं बात् मिला कऽ लइयो जाएल जाए तं कोनो तरहक चेकिंग वा उजुरी परने मामला बीगड़ि सकैत छलै। बेचारा उंटबाला बजैत तं किछु नै छल। बस नहि जाएबाक रट लगौने रहए।

दर्शनीय स्थल तं देखवाक रहबे करए, पांच गोटे आर ओटिआएबाक नियार भेल। रौदक धाही बढ़ल जा रहल छलैक। पटना जल्दी घुरबाक सेहो रहैक (वांकी काज सम्पन्न करवाक लेल। तखन राजगीर मेलाक आनन्द उठबैत दर्शनीय स्थल सभक वारेमे सेहो जिज्ञासा शांत कएल।

राजगीर बौद्ध दर्शनक केन्द्रविन्दु रहल ठाम अछि जत्त सं मात्र १० कि.मि. उत्तरमे अवस्थित अछि नालन्दा, जे पांचम शताव्दीक वाद वौद्ध दर्शन आ शिक्षाक हेतु अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र रहि चुकल छल आ जकर चर्च हम पूर्वमे कऽ चुकल छी।

'वृद्धकूट' एक एहन पहाड़ी अछि जकर सम्वन्ध बौद्ध धर्मसं अछि। कहल जाइछ भगवान बुद्ध जखन राजगीर अबैत छलाह तं एही पहाड़ी पर रुकैत छलाह। एहि पहाड़ीक चर्च चिनी यात्री हेनसांग सेहो कएने अछि। ओ कएक वर्ष नालन्दा महाविहारमे रहैत छलाह। एहि पहाडी पर एखन वड़ आकर्षक स्तूप बनाओल गेल अछि जे जापान सरकारक पहल पर तैयार कएल गेल अछि। स्तूपके

भितर बुद्धक आकर्षक प्रतिमा स्थापित छैक। ई जं कि उंचहाड़ी पर अछि, ओत्त जाएब कष्टप्रद छैक तएँ एखन रोपवेक सुविधा कऽ देल गेल छैक।

राजगीरसं सटले वेणुबन अछि जे सम्राट विम्वसार द्वारा बुद्धक हेतु बनओल गेल छल। जखन ओ राजगृह (राजगीर) आबथि तं एत्तहि रुकथि।

'तपोधर्म' गर्म पानिक झरनाक लगमे स्थित छैक। एत्तहि गर्मजलक झरनाकें व्यवस्थित कएल गेल छैक (जलसिंक्त आ स्नानक हेतु। ब्रह्मकुण्ड सेहो इएह कहबैत अछि। 'जरासंघ अखाढ़ा' सेहो एकटा गन्तव्य स्थल अछि। एकरा संग जरासंघक ओ स्मृति जूड़ल छैक जहिया जरासंघ कृष्ण पर हमला कएने छल।

'विम्वसारक जेल'क भग्नावशेष ओहि बइमान वेटाक स्मरण करबैत छैक जे सत्ताक लोभमे अपन वापकें कैद कऽ लेने रहए। अजात शत्रु विम्वसार कें एत्तहि बन्दी बनौने छल। एहि अवशेषक खोज १९१४ ई. मे भेल छल। वास्तवमे प्रथम शताव्दीमे एत्त मठक रुपमे एकरा उपयोग कएल जएबाक बात कहल जाइछ।

छठम् शताव्दी ई. पूर्व मे निर्मित अजातशत्रुक किल्ला सेहो पर्यटक सभक हेतु आकर्षणक केन्द्रविन्दु अछि। एकरा लगेमे बनाओल ७.५ मिट उंच स्तूप सेहो अजात शत्रुए बनौने छल।

विंवसारक खजानाक रुपमे प्रसिद्ध सोनभंडार गुफा तिलस्मी जकां लगैत छैक। एहिमे दू कक्ष अछि। एक मे सैनिक रहैत छल, दोसरमे खजाना छलैक। कहल जाइछ (सम्राट विंवसारक खजाना एखनो एहिमे बन्न अछि।

'जैन मंदिर'क श्रृंखला राजगीरक पहाड़ी पर ओहिना देखल जा सकैछ। लगभग २६ मंदिर हएतैक। ई पर्वतक उपरका छोर पर हएबाक कारणें सामान्य दर्शनार्थीक हेतु पहुंचब अत्यन्त कठिन छैक।

'सुवर्ण भंडार'क नामसं ख्यात एकठा पहाडी गुफामे जरासंघक खजाना छैक। एहि गुफामे लिखल लीपि एकरा खोलबाक चाभी छैक। जं केओ पढ़ि लेत त एहि महक सोनाकें निकालल जा सकैछ।

आर(आर बहुत रास सम्पदासभ छैक जकरा देखल, बूझल जएबाक चाहिऐक। हमरा सभक समय पएर आ मन दुनूकें रोकि रहल अछि।

भारी मनसं गाडी स्टैण्डमे अबैत छी। ड्राइभर गाडी निकालैत अछि। हम सभ ओहिमे चहरि अनेकों स्मृतिकें तह पर बैसबैत पटनाक हेतु विदा भऽ जाइत छी।

♦♦♦

तायमचा नाचक रमझम आ पोखराक सांझ

पर्यटकीय आकर्षणक शहर पोखराक लेल पर्यटन बर्षक लफडा नहि चाही। बारहो महिना पर्यटन मौशम रहैत अछि, खास क' फागुन,चैत,वैशाख त आओर उत्तम। अन्नपूर्णा हिमाल श्रृंखलाकेँ नजदिक सँ देखबाक हुए, फेवातालमे बोटिंग करबाक हुए अथवा नजदिकक पहाडी पगडन्डीपर ट्रैकिङ्ग करबाक किएक नहि, पोखरा सभदिन लोभवैत रहैत अछि। आ हमसभ सेहो फागुन २१ गते शनिदिन ओहि लोभमे फसलहुँ आ ओकर भरपूर आनन्द सेहो उठौलहुँ। शनिदिन पोखराक मुख्य बाजारक अधिकांश बडका दोकानसभ बन्द छल। किनमेलक गुंजायश नहि छल, मुदा जे लोभ हमरासभकेँ आकर्षित कएने छल, फेवामे बोटिंग क' बराही मंदिरधरि जएबाक। ड्राइभर केशव भाई शनिदिन गाडी फीशटेल लौज सँ आगु जाए नहि देत कहलाक बाद हम सभ फीशटेल होटल लगक घाट सँ बराही मंदिरधरिक यात्रा कएलहुँ। एहि सँ पहिने सेहो हम यात्रा कएने छलहुँ, मुदा ओ छोट छल, लेकसाइड सँ बराहीक पांच सात मिनटक मात्र, मुदा ई बीस पचीस मिनटक लम्बा बोटिंग नयां अनुभूति दियौने छल।

हमरासभक बोट चालककेँ हम प्रश्न करैत छी –मोटरबोट किएक संचालनमे नहि अछि ? ओ कनेक उत्तेजित होइत कहैत छथि - ओ चलल तँ सयौं परिवारक उठिवास भ' जाएत। तएँ चलाबय नहि देल गेल अछि। बात सत्य अछि, मुदा मोटरबोट चलला सँ खतरा कम होइत आ आनन्द सेहो सम्भवतः बेसी लेल जा सकैत छल की।

हमसभ ६ बजे सांझ बराही मन्दिर क्षेत्रमे पहुँचलहुँ। भीड छल। दर्शन आ फोटोक अलगे रमझम छल। हम दृश्यसभकेँ अपना कैमरामे कैद करय लागल छलहुँ तँ सहयात्री संस्कृतिविद डा.चूडामणि बन्धु आ प्राज्ञ डा.संजिता वर्मा दर्शन पूजामे व्यस्त छलथि।

बराही मंदिरक दक्षिणी पहाडपर बसोबास कएनिहारसभक दैनिकीक सम्बन्धमे सोचलहुँ आ नाव सँ नियमित आबय जायबलाक बाध्यता आ खतराकेँ सेहो ध्यान कएलहु। एहिकेँ मनमे खेलबैत प्राकृतिक सौन्दर्यक सुखानुभूतिकेँ आत्मसात

करैत लेकसाइड घाट दिस बोटकेँ आगु बढेलहुँ।

शनिक दिन छल, बाटघाट पैदले चलैत दृश्यवलोकन करैत जएबाक हमरासभक निर्णयक कारण फेर ओहि फीशटेल घाट लग घुरबाक कार्यक्रम स्थगित क' तीनसय पांच रुपियां बोट चालककेँ दैत ओत्तहि उतरि गेलहुँ।

आब हमसभ चौकपर छी –केम्हर जाएब। डा.बन्धु कनेक उपरदिस चली से सुझाव देलाक बाद हमसभ पश्चिम दिस लगलहुँ। सवारी साधन सर्वथा बन्द छल, तएँ बाटक कात कातमे होटल रेष्टुरेन्ट वाला सभक पुरे कब्जा छल। सडकपर गीतसभक उच्च ध्वनि आ मासुक परिकार संगहि रम हिस्की, स्कोच, वाइन आ वीयरक चुस्की। वाटपर सजा क' राखल गेल कुर्सि टेबुलपर विदेशीसभक चकचकी बेसी देखाइत छल।

शनिदिनक रमझम लेक साइडमे छल से हमसभ अनुभव कएलहुँ। पस्मीना आ याक उनक साल सूती कपडा, पुस्तकसभ गिफटक दोकान, थान्का चित्रसभ आ मिथिला लोकचित्रसभ। हँ, मिथिला लोकचित्रक उपयोगी बस्तुसभ दोकानमे देखलाक बाद हमरा खुशी लागल छल। पर्यटकीय वाजारमे उ विदेशी लोभाबयबला कला तँ पक्के अछि। मुदा काठमाण्डूमे किछु तथाकथित मिथिलाकलाक अनुसन्धाता कहि प्रस्तुत भेनिहारसभ एहिकेँ गलत व्याख्या क' रहल अछि। मिथिलाक मौलिक चित्रकारीमे व्यवसायीक फयूजन राखि अन्तर्राष्ट्रिय बाजारमे विद्रुप प्रस्तुती करैत अछि आ समीक्षकसभ सँ प्रशंसा सेहो पबैत अछि। मिथिला चित्रकलाक अन्तर्राष्ट्रियकरणक स्थल मधुवनी(विहार) सँ ई कला पुरे विश्वमे स्थापित भ' चुकल अछि मुदा अपन मौलिक स्वरुपक बलपर। ओहिमे नेपाल जेहन पैसाक लोभमे व्यवसायीक विकृति लाबयकेँ काज कोनो कलाकार नहि कएलक।

कतहुँ मादलक स्वरपर तँ कतहुँ सारंगीक धुनपर मस्ती मनबैत युवासभक टोली सेहो एहि फेस्टिभवल इभेन्टमे सामेल छल। होटलसभमे दोहरी गीतसभक स्वर लहरी दुरे सँ सुनाइत छल।

ओतबेमे हमसभ एकटा नाचटोलीकेँ भेटलहुँ। सडकपर नचैत पश्चिम दिस बढैत जा रहल। चारिपाँच गोटे लडकी कांन्ह सँ निचा पाछु दिस चिडैक पाँखिके आकृति लगा नाचि रहल छल तँ दू गोटे भाइ जोकरक आकृतिमे ओकरासभकेँ साथ द' रहल छल। पाछु सँ चारि पांचटा लडकी नेवारी पहिरनमे खिड, झाइल,

दुस्या, ढोलकी सहितक बाजा बजबैत संगे जा रहल छल। एकगोटे अगुवा जकाँ देखायबला व्यक्ति टोलीकेँ हात सँ इशारा कऽ ओतहि नाचय कहलक। लिय भव्य नृत्य शुरु भेल। किछु बेरक बाद टोली आगु बढल। हम ओहि अगुवाकेँ रोकैत कहलहु - ई कोन नाच अछि ? ओकर जवाव छल - ई तायमचा नाच अछि। नेवारसभ मरयबला घरमे मृत्यु संस्कारक बाद जनै पूर्णिमाकेँ गाईजात्रा दिन एहिना हमसभ नृत्य करैत जाइत छी।

हम जिज्ञाशा रखैत छी–अखन किए ? अखन फेस्टिभल भेला सँ निकालने छी - पोखरा उपमहानगरपालिका वाड नं. १० रामनगरक समर बहादुर श्रेष्ठ(पंमुख) हमरासभकेँ स्पष्ट कएलनि। ओ तायमचा नाच व्यवस्थापन समितिक अध्यक्ष सेहो छथि। तायक अर्थ लिगो भेल ओ अर्थबैत छथि। मुदा पोखराक संस्कृति क्षेत्रमे सक्रिय डा.कुशमाकर न्योपाने तायक अर्थ नेवारीमे बृद्ध आ मचाक वच्चा रहल अपन कार्यपत्र(२०६७।११।२० गते पोखराक सांस्कृतिक गोष्ठीमे प्रस्तुत)मे लिखने छथि। काठमाण्डूमे गाइजात्रामे निकालल जाएबला नाच आ पोखराक एहि नाचमे किछु अन्तर अछि। ओतय गाईके मुखौटा बना नाचल जाइत अछि, एतय परीक भेषभूषामे। गाइजात्राक कथा प्रचलिते अछि–काठमाण्डकू राजा प्रताप मल्लक बेटा चक्रवर्त्तीन्द्र मल्लके असामयिक निधन भेलाक बाद रानी शोकाकुल भेली। एहन शोक सभक घरमे भ सकैछ से बोध कराबय राजा ओहि बर्ष मरल मृतकसभकेँ घर सँ एकटा गाई सिंगारि कऽ निकालबाक घोषणा कएलनि। ओहि अनुसार बहुतो घर सँ निकललाक बाद रानी सभक घरमे होइत अछि कहि चित बुझौने छली। ओहि समय सँ गाईजात्रा आ तायमचा नाच शुरु भेल कहल जाइत अछि।

नर्तकीसभ घाधर, दोपट्टा , गर्दनमे हार, रंगविरंगी माला, सिरपर मुकुट आ पीठपर चराक पाँखि जेहन आकृति..। सुखद अनुपम आ आकर्षक दृश्य उपस्थित अछि पोखराक हल्लाभरल सडकपर। एतय कतहु सरकारी औपचारिकता नहि छल। सभ सहज छल। पोखराबासी पर्यटनक आनन्द अपने तरिका सँ मना रहल छलथि। पर्यटन संस्कृतिक अद्‌भूत प्रयोगभूमि पोखराकेँ सरकारी आडम्बर नहि चाही। कतेक सहज , कतेक नीक, कतेक प्रिय अछि पोखराक ई बासीसभ ।

डा.बन्धु सँ हमरा बातचित होइत रहैत अछि –पोखराबासी साच्चे पर्यटनमे खाइत अछि, पर्यटनमे सुतैत अछि , पर्यटनमे रमैत अछि। जीवन चर्या पर्यटनमे

समर्पण कएने अछि।

आठ बाजय लागल अछि। स्थान छोडबाक मन तँ नहि होइत अछि मुदा फिशटेल घाट क्षेत्रमे गाडी पार्क कऽ बैसल भाइ केशवक फोन आबि चुकला सँ होटल दिस जएबाक मन बनबय लगैत छी। डैमसाइडक होटल केसीक बण्डापर ठाढ भोर ७ बजे उत्तर दिस देखल जाएबला सफा, स्वच्छ अन्नपूर्णा हिमाल श्रृंखला आ ओहिमे बहुत चर्चित माछापुच्छेक दृश्यावलोकनकेँ जे आनन्द अवैत अछि , धरतीपर रहल एहि सडक उत्सवक आनन्द सेहो ओहि सँ कम हम महशुस नहि कएलहुँ।

हैं,हमसभ निर्णय करैत छी –एकबेर फेर इएह आनन्द प्राप्तिक लेल अवैत छी आ बेर बेर अवैत रहब इएह बिशेषता अछि एहि पर्यटन नगरी पोखराकेँ।

♦♦♦

बोधिबृक्षकें छाहरिमे

सुनैत आ पढ़ैत रहलहुँ अछि, बौद्ध धर्माम्वलम्वीसभक लेल बोधिबृक्ष अत्यन्त महत्व रखैत अछि। पढ़ने तँ इहो छलहुँ कि एकर ठाढ़ि देश-विदेशमे अत्यन्त श्रद्धाक संग राखल जाइत अछि, किछु नियमपूर्वक किछु गैरकानूनी रुपमें। भगवान बुद्ध ई.पूर्व चारिमकें अन्त आ पाँचमके शुरुमे एतय बुद्धत्व प्राप्त कएने छलथि। बुद्ध बोध गयामे सात हप्ता धरि समाधि एवं ध्यान करैत वितौने छलथि, जाहिमे पहिल हप्ता इएह बोधिबृक्षकें निचा गुजारलथि, जतयँ हुनका ज्ञान (बुद्धत्व) प्राप्त भेल छलनि। अन्य छवो स्थान बहुत श्रद्धा पूर्वक पूजित अछि, मानित अछि।

हम ओहि बोधिबृक्षकें छाहरिमे ठाढ छी। हमरा एकटा जिज्ञाशा अछि, एकटा सुखद अनुभूतिक सिहरन अछि। जकरा हम पाठ्य पुस्तक, विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छपल आलेखसभ आ अन्य बौद्ध ग्रन्थसभमे पढ़ैता तथा देखैत आएल छलहु, आई ओकरा नजदिक सँ अनुभव करय पावि रहल छी।

मुख्य मन्दिर महाबोधि बिहारकें पश्चिममे अवस्थित ई बोधि बृक्षकें उत्तर-दक्षिणमे श्रद्धालु बौद्धधर्माम्वली देशी-विदेशी लोक ध्यान मुद्रामे बैसि क ऽ जाप क ऽ रहल छथि। फूल-प्रसादक संग हुनक अराधना निरन्तर चलैत रहल अछि। हम सेहो नतमस्तक भ ऽ जाइत छी, स्वभाविक रुपें हाथ प्रणामक मुद्रामे उठि जाइत अछि।

बोधिबृक्ष कतेको बेर नष्ट भ ऽ चुकल अछि। सर्वप्रथम बंगालक राजा शशांक एतुका भवन सभकें नष्ट क ऽ देने छलथि, जाहिमे बोधिबृक्षकें सेहो उखाड़ि क ऽ जरा देल गेल छल। एहिकें बाद कलिंग जाइत काल सम्राट अशोक सेहो एहिकें उखाडि देने छलथि। तहिया धरि ओ हिन्दूधर्मालम्वी छलथि। फेर साम्राज्ञी तिष्णरक्षिता कलिंग विजयकें बाद ओकरा उखड़बा देने छलथि ताधरि अशोक बौद्ध भ ऽ गेल छलथि आ एहि झोंकमें साम्राज्ञी ओकरा नष्ट कएने छलथि। एहिकें बाद पुर्णवर्मन पुनः वृक्षारोपण कएने छलथि। अन्तिमवेर बोधिद्रुमरोपण १८७६ में भेल, जे आइ हमसभ देखैत छी, जे आइ हम देखैत छी ओ बोधिबृक्षक पांचम पीढ़ी अछि।

बोधगया आबयकें एकटा खास उद्देश्य छल। बड़का चर्चा भ ऽ रहल अछि एखन हमरासभक देशमे लुम्बिनी आ बोधगया विच बौद्ध सर्किट निर्माण करबाक। स्वयं भारतक प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी एहि बातकें कतेको बेर नेपालमे दोहरा चुकल छथि। ओहुना विश्वभरिक बौद्ध धर्मालम्वी बुद्धपूर्णिमा (वैशाख) कें एतय जुटैत छथि। सिद्धार्थका गौतम बुद्ध भेल ई सुखद अवसर एतय धार्मिक अवसर होइत अछि बौद्ध मार्गीसभक लेल। ओम्हर लुम्विनी सेहो एहि प्रकार बौद्ध धर्मीसभक लेल अत्यन्त पवित्र स्थल अछि, जतय बुद्धक जन्म भेल छल। एहि प्रकार जन्म सँ बुद्धत्व प्राप्त धरिक ई सफर नेपाल-भारतक एहि पवित्र बन्धन यात्रा पर टिकल अछि, जकरा अधीक सँ अधीक अपन अन्तरात्मामे बौद्ध धर्मालम्बी समेटि लेबय चाहैत अछि। सम्भवतः एहि लेल सेहो लुम्विनी सँ बोध गया धरिक सर्किट निर्माण सँ एकटा नयाँ अध्यायक शुरुआत हएत आ ओकरा जल्दीए कार्यरुप देबाक सेहो चाही। हम बोध गयामे विद्वानसभकें बिच एहि प्रकारक उत्कण्ट अभिलाषाकें सेहो पौलहुँ। लुम्विनीक प्रति अगाध आस्था, बोध गयाकें प्रति अप्रतिम श्रद्धा वास्तवमे हृदय छुबयबला प्रसंग अछि, जे बोधगयाकें पवित्र धरती पर पायर रखलाक बाद महशूस कएल जा सकैत अछि।

मुख्य मन्दिरमे प्रवेश करैत काल हम महाबोधि विहारकें अत्यन्त श्रद्धा आ जिज्ञाशा संग देखने छलहुँ। १८० फीट ऊँच आ आधार सँ ५० फिट चौड़ा ई बिहार कहिया बनल अभिलेखक अभाव अछि। मुदा एकर वर्णन चिनी यात्री ह्वेनसांग सेहो कएने छथि।

विहारक गर्भ गृहमे बुद्धक सोनेकें पानि चढ़ल भूमि स्पर्श मुद्रामे एकटा विशाल मूर्ति स्थापित कएल गेल अछि। ई प्रतिमा ३८० ई. मे स्थापित कएल गेल छल। विहारकें चारु दिससँ देवालपर अनेको मूर्तिसभ बनाओल गेल अछि जे अत्यन्त कलात्मक आ आकर्षक अछि।

वर्तमान महा विहार कहिया बनल इतिहासमे ठोस प्रमाण नहि अछि, मुदा जनरल कनिंघमकें अनुसार महाबोधि विहारकें राजा अशोक द्वारा निर्मित महाविहारकें अवशेष पर निर्मित मानल गेल अछि। वर्तमान मन्दिर करिब दोसर शताब्दीक अनुमानित अछि। एकर काल निर्धारण कनिष्ककें बादक दोसर कुषाण शासक हुपिवककें एकटा स्वर्ण मुद्राक प्राप्तिकें बाद कएल गेल अछि।

नेपालमे एकटा चर्चा बेरबेर नेपालीसभक कोमल मनकें सतबैत हरल छल

कि बुद्धक जन्म नेपालमे नहि भारतक तिलोराकोटमे भेल अछि एहन प्रचार भारतीय पक्ष सँ कएल जाइत अछि। कपिलवस्तुए जकाँ राजा शुद्धोधनक दरवारकेँ अवशेष ओम्हर सेहो निकालि लेल गेल अछि भारतीय पुरातत्वविदसभ द्वारा आ ओकरा प्रचारित कएल जा रहल अछि।

स्थिति एतय धरि भेल कि जखन हम नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानकेँ प्रतिनिधि मंडलकेँ सदस्यक रुपमे चीन गेल छलहुँ आ ओतर हमरासभक गाइड जखन घुमाबयकेँ क्रममे "बुद्धक जन्म भारतमे भेल छल " कहि कऽ परिचय देलक तँ हमसभ चौक गेल छलहुँ। हमरासभक टीम लिडर वर्तमान कुलपति गंगा प्रसाद उप्रेती ओहि गाइडकेँ लगभग डटैत कहने छलथि - ई गलत अछि। वुद्धक जन्म नेपालक कपिलवस्तुमे भेल छल, नहि कि भारत मे। अहाँ गाइड छी, लोकसभकेँ ऐहन भ्रामक वात नहि कहल करु'। यद्यपि ओ अपनाकेँ सुधारयकेँ वचन देने छलथि, मुदा हमरा नहि लगैत अछि, वर्षोंकेँ प्रशिक्षण, ज्ञान ओ क्षण भरिमे छोड़ि देने हएत।

ओ छोड़े वा नहि छोड़े भारतीय प्रधान मन्त्री हमरासभक संसदमे बड विश्वासक संग बुद्धक जन्म स्थल नेपालक लुम्विनीकेँ मानने छथि, आ ओतय भ्रमण करबाक इच्छा सेहो देखौने छलथि। बोधिबृक्षक अंश ओतय पठाओल गेल अछि। अर्थात् आब ई विवाद समाप्त भऽ, चुकल अछि।

एहि लेल सेहो लुम्विनी आ बोधगया विचक सम्वन्ध आओर सुमधुर हएत, प्रगाढ़ हएत तथा दुनू पवित्र स्थलक विकास एहि सर्किटकेँ योजना अनुरुप होइत हरत।

बोधगयामे अनेक देशसभ अपन-अपन विहार बनौने अछि। भव्य, आकर्षक आ दर्शनीय। लुम्विनीमे सेहो एहि प्रकारक दर्शनीय बौद्ध विहारसभ अछि, जकरा दर्शनार्थी उत्सुकता आ आस्था सँ देखैत, दर्शन पूजा करैत छथि।

एतय अनेक बौद्ध सिद्धान्तवादी संघ, संस्थासभ सक्रिय अछि, जे बौद्ध धर्मक प्रचार, प्रशिक्षणक आयोजन करैत अछि। पूरा बोध गया बुद्धमय भऽ गेल अछि। कतय देखू, कतय छोड़ू। गर्मिक उमस भरल दुपहरिया शरीरकेँ भलेहि धिपा रहल अछि, मुदा मन तँ 'बुद्धं शरणं गच्छामि' भऽ रहल अछि।

कनेक इतिहास दिस देखी। बोध गयामे शंकराचार्य मठ अछि, जे कहियो महाबोधि विहार मठकेँ रखबार होइत छलथि। ई तँ अछि ने अद्‌भूत। जी हँ,

मगध विश्वविद्यालय निर्माणक लेल ३५० एकड़ भूमि दानमे इएह मठ देने अछि तँ संस्कृत महाविद्यालय आ कतेको स्कूलक निर्माता सेहो इ अछि। शैव मतकेँ गिरी सम्प्रदायक महन्त एतय रहैत छथि। १५९० ई. मे जखन गोसाइ घमंड गिरी शंकराचार्य मठक नौह एतय लेलनि तँ एकर प्रभाव दूर-दूर धरि गेल आ तखन दिल्लीकेँ वादशाह मोहम्मद शाह १७१७ ई. मे तत्कालीन महन्त लालगिरीकेँ ताराडीह सहित कतेको गामक जागिरदारी देने छलथि। ताराडीहमे बौद्धसभक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल महाबोधि मन्दिर सेहो अवस्थित छल आ स्वभाविक रुप सँ एकर संचालन, देख-रेखक दायित्व मठ पर पड़ि गेल।

कहल जाइत अछि पुरातत्व विभाग १९८१ ई. सँ १९९१ ई. धरि दश वर्षधरि एतय खोधाइ कएलक आ २००० ई. पूर्व धरि अनेक समाग्रिसभकेँ खोजी कएलक। नव पाषाण काल सँ पाल कात धरिक सात सांस्कृतिक कालक अवशेष अनवरत रुप सँ भेटल अछि। बोधगयाकेँ शंकराचार्य मठक विश्वविख्यात बौद्ध धरोहर महाबोध मन्दिरकेँ १५९०-१९४९ ई. धरि ३५९ वर्षसभमे संजोगि कऽ राखयकेँ श्रेय प्राप्त अछि।

चलैत-चलैत हम विश्व विख्यात बुद्ध प्रतिमाकेँ सेहो देखय चाहलहुँ। मूल विहार परिसर सँ किछुएक मिटर पश्चिममे अवस्थित ई बुद्ध प्रतिमा ८० फीट उँचाईक अछि। एकर निर्माण १९८४ ई.मे प्रारम्भ भेल छल आ १९८९ ई.मे पूर्ण भेल। एकर निर्माण दाइजोक्यो सेक्ट, जापान द्वारा कएल गेल अछि। एकर अनावरण दलाई लामा १८ नोभेम्वर १९८९ ई. केँ कएने छलथि। आगुमे दूनु कात भगवान बुद्धक शिष्य सरिपुत्र आ महामोग्गल्लान सहित १० भिक्षुसभक प्रतिमा ठाढ कएल गेल अछि।

हम फेर बोधिबृक्षकेँ निचा रहैत कालक क्षणसभक स्मरण करैत अछि। अपना एतय सम्विधान नहि बनि पौलाक तनाव, मस्यौदामे नेतासभक बेइमानीकेँ प्रति आक्रोश, भेदभाव पूर्ण नीतिक निरन्तर पसरैत दायरा, समावेशी आ समाजिक न्यायक घटैत स्तर, मधेशीसभक प्रति भेदभावक नंगा रुप, एक अपन प्रदेश नहि होबय देबाक प्रपंचमे बुनल जा रहल जालमे माछ जकाँ तड़पैत आम मधेशिसभक माटिके प्रति जज्वातसभ सँ उग्रभेल देश, ऐहन अवसर पर ई बोधिबृक्ष किछुओ ज्ञान हमरा माध्यम सँ अपन देश धरि पठा पौलहुँ-'बुद्धक अपन देश, अपन धरती, नेपालक निति निर्मातासभ लग, जतय नैतिकता, इमानदारी आ शान्तिकेँ

आवश्यकता अछि ।

हम एकटा अदना आदमी, जिज्ञाशावश एहि पवित्र बृक्षकैं निचा ठाढ भऽ गेलहुँ अछि। नहि साध्य नहि साधन, किछु सेहो बनयकैं सामर्थ्य नहि अछि हमरामे। किएक तँ ई पवित्र बृक्ष किछु पठा पाएब हमरा द्वारा पठा पाओत मुदा ई स्वयं सेहो पांचम पीढी धरि एतय ठाढ बुद्धके बुधत्वक असली सन्देश विश्वकैं दऽ रहल अछि, शायद एहि तरंगित वायुकैं मध्यम सँ हमरा ओतय सेहो जाएँ। बुद्ध सर्किटकैं निर्माणक एहि सँ निक उपलब्धि आओर की भऽ सकैत अछि।

♦♦♦



भगवान वेंकटेश्वरक दीव्य दर्शन सुखक अलौकिक अनुभूति

हमसभ तीन दिनक यात्राक बाद गुड्डुर जंकशन पहुँचलहुँ। भारतीय रेलक संघमित्रा एक्सप्रेस अपन निर्धारित समयपर हमरासभकैं ओतय पहुँचौने छल। ओतय सँ कार्यक्रम स्थल ब्रम्हर्षि आश्रम, रामकृष्णपुरम जएबाक छल। नेपाली टोली सहित हमसभ एकटा मिनी बसपर चढि ओहि दिस आगु बढलहुँ। बाटेमे भोजन करी साथीसभक आग्रहपर एकटा निक ठाठ-बाठबला भेजहोटलमे पसिलहुँ। ओतय उत्तर भारतीय भोजनक स्वाद लेलहुँ। ओतय सँ तिरुपति त पहुँचलहुँ, मुदा ब्रम्हर्षि आश्रम खोजयमे समस्या भऽ गेल।बादमे पुछैत पुछैत हमसभ आश्रमक आवास क्षेत्रमे पहुँच अन्य स्थान सँ आएल कार्यक्रमक सहभागीसभ संग मिल कऽ बैसलहुँ। बादमे दोसर तल्लापर अलगे रहबाक व्यवस्था कएल गेलाक कारणें हम ओहि दिस बढलहुँ।

इन्टरनेट सहितक अन्य माध्यम सँ जानकारी भेल अनुसार तिरुपति गर्म स्थान रहल बुझने छलहुँ। मात्र तिरुमाला पहाडपर अवस्थित भगवान वेंकटेश्वरक मन्दिर परिसर शितल रहल कहल गेल छल। मुदा जखन हमसभ ब्रम्हर्षि आश्रम पहुँचलहुँ – मौसम बदलल जकाँ छल। सामान्य गर्मि मात्र छल। वर्षा होइत रहला सँ वातावरण अत्यन्त मनमोहक सेहो बनैत गेल छल। चारुदिस पहाडसभक श्रृंखला– आश्रम सँ मंत्रमुग्ध बनयबला दृश्य छल। तिरुपतिसँ आश्रमचौक धरि आवत-जावत करबाक लेल टेम्पूक नियमित सवारी उपलब्ध होइत अछि, मात्र बाह्रऽ रुपैयाँमे। दुरी १० मि. मि. अछि। दोसर दिन भोरे ६ वजे नहा-धो ठीक भऽ निचा उतरलहुँ। भोरे तिरुपति होइत भगवान वेंकटेश्वरक दर्शन कार्यक्रम छल। यात्राक संयोजन कएनिहार महानुभाव तिलंगाना आन्दोलनक क्रममे तिरुपतिमे भेल हडताल सँ समयपर गाडीक व्यवस्था करय नहि सकलाह। हमसभ अगुता कऽ अपने व्यवस्था कऽ जएबाक कहि आयोजकसँग अलग भऽ टेम्पो सँ तिरुपति अएलहुँ। आ ओतय सँ छः सयमे आवत जावत मिला जीपकैं पन्ध्र सय रुपैयाँ दऽ तिरुमाला दिस लगलहुँ। मनमे मन्दिर प्रतिक जिज्ञासा आ भगवान वेंकटेश्वरकैं दर्शन करबाक सुअवसरक अत्यधिक खुशी



छल ।

हमरासभक जीप आकर्षक टोल गेट लग रुकैत अछि । ओतय अन्य सवारीसभ सेहो लाइनमे रुकल अछि । ओतय सवारी आ सवार दुनूकेँ निक जकाँ चेक जाँच कएल जाइत अछि । सवारीकर असुलैत अछि तहन मात्र ओतय सँ जाय दैत अछि । ओतहि कारी गरुडक भव्य प्रतिमा स्थापित अछि । वास्तवमे तिरुपतिक मन्दिर क्षेत्रमे गरूड प्रतिमाक अत्यन्त बेसी महत्व देखल जाइत अछि । भगवान वेंकटेश्वरकेँ विष्णुक अवतार मानि कऽ हएत, बाहन गरुडक महत्व दर्शाओल गेल अछि ।

हमसभ आगु बढैत छी । पहाडी बाट-मुगलिङ्ग-काठमाडू बाटक छनक दऽ रहल अछि । रमणीय दृश्य आ हँसमुख पहाडी श्रृंखला-वाटकेँ उल्लासपूर्ण बनबैत छल । आकासमे कारी बादलक नृत्य यथावत जारी छल । विच-विचमे पानिक वेग सेहो अबैत छल । अन्ततः हमसभ तिरुमला मन्दिर परिसरमे प्रवेश कएलहुँ । गाडी सँ उतरि टिकट कटाबयबला स्थान दिस गेलहुँ । 'विशेष दर्शन जाएबला बाट' कहि चिन्हित सङ्केत पट्टकेँ पछुअबैत लाइन लागयबला स्थानपर पहुँचलहुँ । ओतय कैमरा आ मोबाइल जम्मा कऽ रू. तीनसय प्रति दर्शनार्थी दऽ कऽ टिकट लेलहुँ आ क्यू कम्पलेक्सदिस बढ्लहुँ । ओहिकेँ बाद दर्शनार्थीसभक लाइन पंक्तिमे सामेल भेलहुँ । मुख्य मन्दिरधरि पहुँचयमे ६ टा द्वार पार करय परैत छैक ।

प्रत्येक द्वारकेँ भितर राखल कुर्सीसभपर दर्शनार्थीसभ क्रमशः बैसैत, अपन पारी अविते दोसर रुममे प्रवेश करैत अन्ततः मूल मन्दिरक प्राङ्गनमे पहुँचैत अछि । हजारो-हजारक ई क्रम विशेष दर्शनमे होइत अछि तँ साधारण ढंगसँ लाइन लागयबलामे सेहो ओहिना हजारो लाखोकेँ लाइन रहैत हएत से अनुमान अछि ।

जखन मूल मन्दिरक प्राङ्गनमे पहुँचैत छी, एकटा अद्‌भूत भक्तिमय आनन्द शरीरकेँ गुदगुदा दैत अछि – आब भगवान वेंकेटेशवरक दर्शन हएत । सोन एवं अन्य बहुमूल्य आभूषण एवं रत्नजटित भव्य मिनार निचा विराजमान अलोकिक शक्तिक अधिष्ठाता, जगत कल्याणकारी भगवान विष्णुक अवतार, परम श्रद्धेय भगवान वेंकेटेश्वरक मूर्ति अवलोकनक ओ सुखद क्षण अवर्णिय अछि । तेज प्रकाशमे ओजस्वी मूर्तिक दर्शन अत्यन्त भक्ति, श्रद्धापूर्वक कएल जाइत अछि । भक्तजन पंक्तिबद्ध भऽ दर्शन करैत लाइने सँ बाहर होइत अछि ।

तिरुपति मन्दिरक काल निर्धारण करयमे अनुसनधातासभ अखनोधरि नहि सकल अछि । मुदा ओ अति प्राचीन मन्दिर रहल अछि से प्रमाण अछि । निचा सँ दू हजार पचास फीट उपर रहल एहि मन्दिरक काल आठम शताब्दी सँ पहिनेकेँ रहल तथ्य ओहि समयक एकटा गर्भगृह आर एउटा अन्तराल भेटला सँ जानकारी होइत अछि । दक्षिण भारतमे चोलकाल (९००–१२५० ई.) केँ अपन अलगे महत्व अछि । तिरुपति मन्दिरक निर्माण सेहो ओहि कालक एकटा उपलब्धि मानय परत । ओहि समयक शिलालेखसभ तिरुमल मन्दिरमे प्राप्त भेल अछि । ओहि समयक हिन्दु राजासभक प्रभुत्व सत्रहम शताब्दी धरि रहल ऐतिहासिक साक्ष्य अछि । बादमे सत्रहम शताब्दीक मध्यधरि गोलकुण्डाक सुलतान तिरुमल तिरुपति क्षेत्र जितने आ एक सय पचास वर्षधरि अपन अधिनमे रखने तथ्य तिरुमल तिरुपति देवस्थान, २००९ द्वारा प्रकाशित डा. एम् रामाराव लिखित एवं दे. सत्यनारायणद्वारा अनुदित पुस्तक "तिरुमल तिरुपति तिरुचानूरहे मन्दिर" पृ. २२ मे उल्लेख अछि । विजयनगरक राजा वेङ्कट द्वितीय अङ्ग्रेजी कम्पनी ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ पूर्वी तटपर एकटा छोटका जमीन १६४० ई. मे उपलब्ध करौलक । ओतय ओसभ किला बनौलक आ अपन शक्तिक विस्तार कएलक । मुसलमान शासकसभक अधीन रहल तिरुमल तिरुपति मन्दिरक आयकेँ हक नवाव मोहम्मद अली १७५० ई. मे ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ देलक । बादमे तँ ओहि क्षेत्रक प्रशासन सेहो १८०१ ई. मे कम्पनी अपना हाथमे लऽ लेलक । मुदा ओ हिन्दु मन्दिरसभक प्रशासन अपना हातमे लेबाक अनिच्छाक कारण तिरुमल तिरुपति मन्दिरकेँ १८४३ ई. मे महन्तसभक हातमे सौपि देलक । बादमे मद्रास सरकार १९३३ ई. मे मन्दिर प्रशासन अपना हातमे लऽ एकटा ट्रस्ट गठन कऽ ओहिकेँ जिम्मा देलक । आन्ध्र प्रदेश बनलाक बाद मन्दिर व्यवस्थापन राज्य सरकार ट्रस्टक माध्यम सँ करैत आएल अछि । आइ ओ मन्दिर विश्वक सभसँ धनी मन्दिरक रूपमे चिन्हल जाइत अछि ।

करिब अढ़ाई घन्टाधरि छः टा रुममे बैसैत, पार करैत दर्शन करयमे सफल भेलाक बाद हमसभ कटौने रसीदक आधारपर वेंकटेश्वर भगवानक प्रसाद किछु दुर रहल भव्य प्रसाद वितरण भवन सँ प्राप्त कएलहुँ । ओहिकेँ बाद तिरुमला क्षेत्रमे घुमय जएबाक स्वतन्त्रता अछि । वस, छोटका गाडीसभ निरन्तर पबैत अछि । मन्दिरक दिससँ तिरुपतिक किछु दूर वस स्टैण्डधरि निःशुल्क वस सेवा

संचालित अछि। यात्री, दर्शनार्थीसभक लेल बहुत सस्ता आवास गृह उपलब्ध होइत अछि, जतय सस्त, शुद्ध खानाक सेहो व्यवस्था अछि।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान प्रशासनक पच्चीस हजार कर्मचारी दर्शनार्थीसभक सुविधाकेँ ध्यान रखैत अछि तँ दर्शन, पूजा, प्रसाद, आवास, यातायात सभक सुव्यवस्था करैत अछि। प्रसाद बनाबयमे मशीनक प्रयोग होइत अछि – मनौं लड्डु बनेबाक काज होइत अछि।

केश मुंडन तिरुपतिमे आबयबला श्रद्धालुसभक प्रमुख कामना रहैत अछि। जतय देखु– मुंडन करौनेसभक व्यापक उपस्थिति महशुस होइत अछि। दैनिक वीसो हजार भक्तजन अपन केश कटा समर्पित करैत अछि। दर्शनार्थीसभक लेल नि:शुल्क भोजनक सेहो व्यवस्था अछि। दैनिक पचीस हजार दर्शनार्थी नि:शुल्क भोजन करैत अछि। रामवगिचा नाम सँ यात्रीसभक निवासकेँ लेल भव्य अतिथि सदनसभ अछि।

हमसभ मौशमक बिग्रैत लक्षणकेँ देखि तत्काल तिरुपतिक वासस्थल ब्रह्मर्षि आश्रम घुरबाक नियार कएलहुँ आ अपने लौने जीपमे सवार भऽ वर्षाक पानि सँ भिजैत तिरुपति पहुँचलहुँ। ओतय एकहु मिनेट नहि रुकि आश्रमदिस गेलहुँ। पन्ध्र-वीस मिनेटक बाट।

दिसम्वर २१ ता. २००९ केँ ई सुखद आ विमुग्धकारी दिन हमरासभक लेल सभदिनक लेल स्मरणीय भऽ गेल। हमरासभक क्यामरामे खिँचाएल ओ अविस्मरणीय दृश्यसभ भविष्यक सम्पति मानैत मनेमन गौरवक अनुभूति करैत २२ ता. मे पदमावतीक दर्शन करबाक निर्णय सेहो कएलहुँ। भगवान वेंकटेश्वरक दर्शन कएलाक बाद पद्मावतीक सेहो दर्शन कएल जाइत अछि।

लक्ष्मीक अवतार मानल गेल पद्मावतीकेँ श्रीनिवास (वेंकटेश्वर भगवान) क कनिया कहल जाइत अछि। हुनक मन्दिर तिरुच्चानुरमे रहल अछि। एहि तिरुपति सँ ३ कि. मि. पूर्वमे अवस्थित अछि। एतहुँ क्यू सिस्टममे दर्शन कएल जाइत अछि। हमसभ एतय सेहो श्रद्धा-भक्तिपूर्वक माँ पद्मावतीक भव्य दर्शन कएलहुँ।

२३ ता. मे तिरुपतिस्थित गोविन्दराज स्वामीक दर्शन भक्तिपूर्वक करैत गेलहुँ। मन्दिरक स्थापना आचार्य रामानुजद्वारा कएल गेल मानल जाइत अछि। मन्दिर एघारहम् शताब्दीदिस बनल शिलालेखसभ सँ जानकारी प्राप्त होइत

अछि।

छठम् अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक स्थल तिरुपति होएब सहभागीसभक लेल तीर्थ करब सरह भेल छल। हमसभ सेहो एहि सुअवसरक भक्ति दर्शनमे उपयोग कएलहुँ।

तिरुपति जएबाक लेल नियमित काठमाडौँ-दिल्ली-तिरुपति हवाई सेवा अछि तँ रेलगाडी सेहो नियमित पहुँचैत अछि। वस सेवा सेहो विभिन्न नगर सँ जोडल अछि। तिरुपति वा तिरुमलमे कतहुँ आवास सुविधा सस्ता आ आरामदायी उपलब्ध होइत अछि। सम्भवत: ई तीर्थयात्रीसभकेँ ध्यानमे राखि व्यवस्था कएल गेल हएत।

♦♦♦

सीताक नगरी सँ मायाक नगरी धरि

(१९ दिसम्बर २००६)

मुम्बईक निमन्त्रण आलहादकारी तँ अछि मुदा उचित ढंगे सम्वादक आभाव कनेक असमंजशमे पाडने छल। पहिले बेर मुम्बई जएबाक अवसर, कोना जाइ, ककरा संग। बादमे रेवती रमण जी फोन कऽ खोज-पुछारी कएलनि। अन्ततः १५ ता. दिसम्बर कऽ जटही हमसभ २ बजे पहुँचलहुँ, मुदा दड़िभंगाक बस ४ बजे मात्र छल। दू घण्टाक समय काटब कठिन छल। काटल गेल। चारि बजे खूजल बस १० बजे दड़िभंगा पहुँचल। चन्द्रेश ओहिठाम गेलहुँ। भोजन तैयार छल , भोजन कऽ अगिला कार्यक्रम सम्बन्धमे छलफल भेल। रेवती जी , चन्द्रेश जी सेहो मुम्बई पहिल बेर जा रहल छलाह चलु एक सँ तीन भला।

मुदा, एकटा बात एखनो अविश्वसनीय छल। हमरा सभक कन्फर्म टिकट अछि कि नहि। ओना चन्द्रेश जी एस २ क ९,१० हमरा सभक सीट सुरक्षित बतौलनि। हमरे सभक संग पं. रामचन्द्र झाजीक टिकट सेहो छन्हि ११ नं. क। ओहो तृतिय अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन, मुम्बईमे 'मिथिलारत्न' सँ सम्मानित होबऽ जा रहल छलाह।

१ बाजि कऽ १० मिनेटपर पवन एक्सप्रेस मुम्बईक हेतु खुजत आ ओ २१ ता. कऽ ६ बजेभोरे पहुँचि जाएत -इएह समय रहैक। मुदा पता चलैत अछि जे आब ३:३० बजे खुजत। हमसभ देरिए कऽ स्टेशन पहुँचलहुँ। आवश्यक समानसभ स्टेशनेपर कीनल बाटमे जाड़ होइछ से एहन कऽ चन्द्रेश जी आ रमणजी डेरौलनि जे बाध्य भऽ एकटा जैकेट दडिभंगामे हमरा किनय पडल अछि।

खूब समय लगौलक। ४ बजेक बाद खुजल। पं. रामचन्द्र झा ज्योतिषीजीक सान्निध्य हमरासभकें प्राप्त भेल। बहुत किछु हुनका सँ सिखलहुँ, ज्ञान प्राप्त कएलहुँ। ज्योतिषशास्तक विश्वसनीयता , प्राचिन एवं अर्वाचिन पद्धति। पंञ्चाङ्ग निर्माणक आ सर्वसम्मति। अनेको पक्ष। ततबे नहि पंडित जी एहि तरहक यात्रा अभ्यस्त छलाह से बीच बीचमे गाइडक काज सेहो करथि। स्टेशनसभक जानकारी , सम्भावित दूरी , पहुँचबाक समय अनुमान। बनारस पहुँचैत अछि गाडी। मोनेमोन स्मरण आ प्रणाम करैत छी- वाबा विश्वनाथकें। फैल सँ घुमबाक अवसर फेर किहयो भेटत तँ अबस्से नमन करब तहिना फैल सँ।



प्रयाग घाट। भोरमे गाडी पहुँचैत अछि। गाडी आठ घण्टा लेट चलि रहल अछि तएँ प्रयाग घाटक दर्शन भऽ सकल। गंगा जमूना आ सरस्वतिक पवित्र संगम। अर्धकुम्भक भव्य तैयारी चलि रहल। रेलबे पुलक दूनु दिस। पण्डाल, अखाडा सभ निर्माण होइत। ३ जनवरी सँ प्रारम्भ हयत ई कुम्भ। नदीमे सरस्वतीजीकें खोजब कठिन भऽ गेल अछि मुदा श्रद्धा आ भक्तिमे लिन लोक गंगाक पानिकें छुटिया कऽ देखऽ नहि चाहैत अछि - हर हर गंगे... । किछुए दिनक बाद एतय साधु सन्तक विशाल जमघट होयत। प्रवचन, गीत नाद भजन किर्तन। प्रयाग घाटपर झुसी ओ नैनी सँ गाडी सभक आगमन होइछ मेलाक हेतु।

इलाहावाद अएलाक बाद डा. हरिवंश राय बच्चन मन पडैत छथि। मन तँ एतुक्का गरमागरम जिलेबियो पडैत अछि, मुदा बजारमे जएबाक समय नहि अछि , आ एत.. । नहि ओतय स्टेशनेपर गरम गरम जिलेबी छनाइए रहल छैक। तँ किछु भऽ जाओ। हम सहटिक ऽ १० टकाक एक पतौरा गरामा गरम जिलेबी लैत छी , जल्दी चाभऽ लगैत छी। कतौ गाडी ने खुजि जाए .. ई सोचिते छलहुँ की गाडी ससरय लगैछ। हमरा लगैए ई त बाम दिस जाएत ने, दहिन दिस चलि रहल अछि। शायद ठाम परिवर्तन कऽ रहल होइक। नहि .. हमर भ्रम छल। गाडी तँ गति पकड़ऽ चाहैत अछि। हम लगभग दौगैत अगिला डिब्बामे फानि गेलहुँ । हकमेत छी तएँ जिलेबी खएबामे अशौकर्य भऽ रहल अछि। ठेकनिअबैत छी। दोसर डिब्बाक अन्तमे गेलापर अपन सीट देखि पडैछ। रेवती जी आ पं. जी हमरे प्रतिक्षा करैत। ई जिलेबी त लाहेब कऽ देने छल , विचारि कऽ, बाँकी जिलेबी डिब्बा सँ बाहर फेकि मुँह हाथ धो सिटपर आबि बैसि गेलहुँ। नहि, आब सगबग नहि।

नमहर दूरीक गाडीमे खान पीनक सभ सामग्री लोक अपने लऽ कऽ चलैत अछि। रेलक डिब्बापक अपन फूट संस्कृति होइछ। मेल जोल भऽ जाइछ , सहयात्रीक संग मिलि कऽ खान पिन होबऽ लगैत छैक। समानक देखरेख सेहो एहि सँ भऽ जाइछ। हँ लोक सुरक्षाक हेतु अपन सुटकेशकें लोहक जंजिर सँ बान्हि कऽ ताला लगा रखैत अछि। चलू , सुरक्षाक भ्रम तँ कम सँ कम मनमे बनल रहैछ। ओना चोरक हेतु ई कतेक पैघ अवरोध।

तत्काल दूटा डिब्बा जोड़ल जाइछ रेलमे। लगभग डेढ सय सीट ११५० टका बेसी दऽ २४ घण्टा पूर्व रिजर्वेशन करऽ पडैछ। तैयो भीड आ वेटिङ्गमे लोक रहैत अछि। हमरो सभक डिब्बामे रामनारायण राय, मनमोहन मधुबनीक रहैत



अछि। संगमे अपने भतिजी आ भतिजा प्रायः। रातिमे जखन टीटी टिकट चेक करऽ अबैत अछि तँ दुटा सीटक व्यवस्था भऽ गेल होयबाक बात कहैत छैक। रामनारायण भतिजी आ भतिजाकेँ सीटपर धऽ अबैत छैक। ओ हमरेसभ सीटक दोगमे निचा किछु ओछा कऽ सुति रहै अछि। ड्रेसो अदभूत। हमसभ स्वीटर कोट, मफलर कोचने, ओ हाफ शर्ट, पैंन्ट आ पैरमे चप्पल बस। एकटा नमहर गमछा, जकरा ओढनाक रुपमे प्रयोग करैत अछि। विगत १२-१३ वर्ष सँ ओ मुम्बई रहैत अछि। बांद्रामे। ओकरा अनुसारे विजुलीक काज करैत अछि। देहदशा सँ आयुक अनुमान कएल जा सकैछ। ओ दू राति, दू दिन बैसले मुम्बई पहुँचैत अछि .....।

११ बजे दारागंज पहुचैत अछि। गाडी आठ घण्टा लेट भऽ चुकल होइछ। आब मुम्बई १२ बजेक बादे काल्हि पहुँचत। रीवाद्वार स्टेशन, सेनाक विशाल कैम्प। हरिन कुदैत फुदकैत। दूर दूर धरि जंगल इलाका सम्भवतः सेनाक प्रशिक्षण स्थल ...। जैतवार स्टेशन सँ गुजरैतकाल बगलमे बैसल एकटा शिक्षक बजैत छथि -एहि क्षेत्रमे रामरजक उत्पादन होइछ। लाल लाल माटि सभतरि देखि पडैत छैक। रामरज जकरा कहि देबाल पर घरक भीतपर लगा रंगल जाइछ। एत्त सँ निर्यात होइत अछि। प्रशोधित कर ऽबला कतेको मशीन एत्त लागल अछि।

मानिकपुर स्टेशन, चित्रकुट जाएबला ट्रेन एत्तसँ भेटैत छैक। वएह चित्रकुट जत्त संतकवि तुलसी दासकेँ ब्रह्मज्ञान भेटलनि। हनुमानजी सँ साक्षात्कार सम्भव भेलनि। चित्रकुटकेँ घाटपर परे सन्तनकेँ भीड...। मार्कुण्डी स्टेशन, मार्कण्डेय ऋषिक आश्रम एत्तहि अछि। इलाहाबाद सँ १०० कि मि पूर्व। चित्रकुटमे कामतानाथ मन्दिरक अपन बैशिष्टय छैक। ओतहि कामतागिरी पहाडक १५ दिनक परिक्रमा कएल जाइछ। हरेक अमावश्याक मेला लगैछ, परिक्रमा कएल जाइछ। दीपावलीमे विराटदीप दान आयोजन एत्त होइछ। मझगंवा स्टेशन अबैत अछि। एत्त सरभंग मूनिक आश्रम कहल जाइछ।

इलाहावाद स्टेहन सँ २०० किमि दक्षिणमे विध्याचल पर्वत श्रृंखला प्रारम्भ होइछ। रामायणक उत्तरकाण्डमे जकर चर्चा अछि। लगैछ राम वनगमन समयक बहुत रास प्रसंग एम्हरे घटित भेल हो। एखनो जंगलक अवस्था ततबे घनगर ..। दूर धरि प्राचीन सम्भयताक दिग्दर्शन करबैत अछि ..। देशमे कोचन स्वीटर आ कोट



आबूह लाग लागल अछि। गर्मी बढि रहलैक अछि। मुम्बई तँ एक हाफकेँ जाड छैक ..कपडासभ सैंतबाक व्योत धरबऽ लगैत छी।

हमसभ सतना जिलामे प्रवेश करैत छी। वएह सतना जे सिमेन्ट उत्पादनलेऽ जानल जाइत अछि। एत्त दश सिमेन्ट फैक्ट्री छैक - विरला, प्रिज्म, सतना, जेपी, एसीसी आदि सभ नामी सिमेन्ट एत्तहि सँ समस्त भारत एवं नेपालमे जाइत अछि।

विश्व प्रसिद्ध काममूर्तिक अनुपम प्राकृतिक गुफा खजुराहो - एत्तहि सँ जाइत अछि, मात्र ७० किमि पश्चिम। मोन होइत अछि जँ ताहि उद्देश्य आयल रहितहुँ तँ अवश्य एत्तहि उतरि ओम्हर भगितौं.. मुदा से सम्भव नहि छल..।

लिअ आबि गेल मैहर जंक्सन। मैहर सिमेन्ट सेहा ..। मुदा एहि ठामक विशेष महत्व छैक अल्हा रुदलक कारणें सेहो। बुदेंलखण्डक एहि महानायकक जीवन प्रसंगक अनेको स्थलमे मैहर। लगेमे महोबा। भव्य स्मारक छैका आल्हाक।

एना कहल जाइछ -कालिंजर(जे मैहर सँ सटले अछि) क राजा परमारक ओत्त जागरिक नामक एकटा भाट छल। जे मोहबाक दू प्रसिद्धवीर अल्हा आ रुदलक वीर चरितक विस्तृत वर्णन एकटा गेय काव्यक रुपमे कएने रहय। अल्हा आ रुदल परमारक सामंत छल। अल्हामे ओकरबीरताक ओजपूर्ण वर्णन कएल जाइत अछि। कहल जाइछ अल्हा १४ लडाई लडल रहय। ओत्तहि रुदलकेँ एकटा ब्राह्मण छल सँ मारि देने छल। अल्हा गायनमे वीरभावनाक जतेक प्रौढ़रुप भेटैत अछि अन्यत्र भेटब दुर्लभ थिक। १३ वीं शदी सँ आइ धरि गायनक परम्परा चलि आबि रहल अछि।

गाडि भागि रहल अछि ...। हमसभ मुम्बईक हेतु अनेको सपना मोनेमन गुथने जा रहल छी ...। नासिक टपित जंगल फेर सँ शुरु भऽ जाइछ। पहाड आ जंगल। मुम्बई सँ पूर्व तँ काठमाडूक बाटक पहाडी रास्ता मोन पडैत अछि। ओहिना घुमैत बस ट्रक आ जीप, गाडीसभ। रेल कएबेर पहाडक खोह सँ गुजरैत अछि। अन्हार गुजगुज ..। अपन फूट आनन्द। कैमराक बैट्री कमजोर अछि -फोटो चाहियो कऽ नहि लऽ पाबि रहल छी। प्राकृतिक दृश्यक भरमार, जकरा संयोगि कऽ राखल जएबाक चाही ..।

दस घण्टा देरी सँ पवन एक्सप्रेस मुम्बईप कुर्ला स्थित लोकमान्य तिलक टर्मिनल पर रुकैत अछि। लगभग ४६ घण्टाक रेल यात्रामे पहिलबेर रेलक रुकबे नीक लागल अछि .., चलू मुम्बई तँ पहुँचलहुँ। दू बाजि चुकल अछि। कार्यक्रमक लेल आएल सभ गोटेक संग हमहुँ प्लेटफार्मपर पयर धरैत छी। ♦♦♦



खुजल प्रेमक नगरी थिक मुम्बई !

(१९ दिसम्बर २०१५)

ठीक दश वर्षक बाद सन २०१५ कऽ २२,२३ दिसम्बरमे होब बला बारहम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमे भाग लेबाक हेतु मुम्बई जएबाक नियार करैत छी। दश गोटेक भरिगर टोलीक संग। एक राजविराजसँ हवाई जहाजसँ जाएत, नौ हमरा संगे दरभंगा होइत मुम्बई।

बन्दी जारी छै। सीमापर जएबाक समस्या। ओत्तसँ दरभंगा धरि पहुँचबाक दोसर समस्या। की कएल जाए। तखन अन्तमे एकटा जीप कएल -६५०० पैसठीसयमे। ओ जीप १९ ता. कऽ दरभंगा भोरे पहुँचाओत। जत्तसँ पवन एक्सप्रेस हमरा सभकेँ दिनकेँ १ :१० बजेसँ मुम्बईक हेतु लऽ चलत। अढाई मास पूर्व टिकट कटलोपर एसी नहि भेटल छल। एस १मे सभ टिकट। चलु रिजर्वेशनमे किछुओ तँ सहुलियत हएबे करत !

जीप कोहुना १० बजे धरि दरभंगा पहुँचबैत अछि। आब समस्या छल टोलीक एकटा सदस्यकेँ टिकट नहि छलै तकर टिकटक जोगाड करबाक। वेटिङ्गमे भेटब सम्भव नहि भेलैक तँ पैसेन्जर टिकट कटाओल गेल आ ओम्हर सँ २५ ता. कऽ वेटिङ्ग भेटि गेलै। एही अफरातफरीमे डेड घण्टा सँ उपर लागि गेलैक। वारह बजैत रहै - भेलै जे भोजन कऽ लेल जाए। गाडी रहबे करैक। से टावर चौक जाइत जाममे पडैत गेला सँ १२:३० बाजि गेलै। आधा घण्टामे खा कऽ १ बजे अपन सीटपर बैसि सकब संभव नहि बुझएलै। गाडी बलाकेँ खुशामद कऽकोहुना पुनः रेलवे स्टेशन दिस बढलहुँ। से अबै अबैत १२:४५ भऽ गेलै। सामान सभ उठबैत आ तीन नं.क प्लेटफर्मपर चढबैत दश मिनट आओर खिचलक। अपन सीट ओटिया कऽ समान धएलहुं तँ प्रायः १५ मिनट बाँकी छल। भेलै जे खानाक उपाय करब तँ गाडी छुटि सकैए - से सभ गोटे मनमारि कऽ गाडीएमे बैसि गेलहुँ। गाडीमे यद्यपी खानाक सम्भावना तँ नहि छल, भेल जे जलखई बेरहटिया सँ काज चलि जएतै।

गाडी ठिक समयपर खूजि गेलै। घरक किछु सामग्री छल सएह खा पानि पीलहुँ। मुदा ओ पेट आ मोन ककरो सन्तुष्ट नहि कऽ सकल छल। जँ जँ स्टेशन

बढैत गेलै, विद्यार्थी सन अनुहारबला युवासभ गाडीमे चढऽ लागल। पहिो त सामान्य बात बुझएलै। ओहुना ई डिब्बा सबसं अन्तिम छल१ नं आ सीट छल ७०- ७१ माने मुँहेपर। मुम्बईमे रहैत मित्र कामेश्वर जखन सुनलक त कहऽ लागल - अपन सिट भितरक कोनो सीट सँ बदलि लिअ। जाड़ लागत आ कोलाहल सेहो बेसी हएत। भेल देखल जएतै। मुदा जखन विद्यार्थीसभक संख्या बढैत गेल तँ जान पराभावमे पडि गेल। चाह नाश्ता बला सभक बाट बन्न भऽ गेलै। डिब्बामे पयर धरबाक जगह नहि। किछु सदस्य एहु दुआरे पानियो पीनाई छोडि देलनि जे कतहु लग्घी लागत त ट्वाइलेट कोना जाएब। बाटे बन्न रहैक। आ एहन कस्साकसीमे भोजन भातक कल्पनो करब बेकार छल। हमरो सभक डिब्बामे एक गोटे रहथि दरभंगेके जकर ममहरा प्रायः महेन्द्र नगर धनुषा नेपालमे रहैक। ओ युवक मुम्बई कोनो काज करैत छल। खूब बाचाल आ तार्किक।

विद्यार्थीसभकेँ नियन्त्रणमे राखि बाटकेँ व्यवस्थित करबामे बेस सक्रिय रहलाह। किछु राहत भेटैक तँ तकरे कारण सँ। गाडी जँ जँ स्टेशन टपैत जाए, युवा सभ भरैत जाए। पता चलल ईसभ इलाहावादमे रेलवेक परीक्षा देबऽ जा रहल छल। पाँच हजार सीटपर पन्द्रह लाख प्रत्यासी। रबिकेँ होबयबला परीक्षामे सामेल होएबाक लेल विहार सँ प्रत्याशीक भीड जा रहल छल। बादमे ज्ञात भेल जे जे गति हमरासभक डिब्बाक रहैक सएह गति तेइसो डिब्बाक छलै। सभ अहुरिया कटैत रहि गेल - ने खाना, ने पीना आ ने दिशा मैदान। मौगैत होइत रहलै सभकेँ।

हमरे डिब्बामे चन्द्रेश सेहो रहथि। ओ दूटा टिकट कटौने छलाह। पत्नि कारणवस नहि आबि सकलखिन्ह। ओ सीट खाली छलै आ निचका वर्थ रहै। हमरा लेल धन सन। आब हमरा रातिमे सुतबाक लेल अढ़ भेटि गेल छल। से लगभग आठ बजे चन्द्रेश सुतबाक लेल हाक पडैत छथि। जीह जान जाँति कऽ सीटपर पहुँचैत छी त ओ अपन झोडा सँ दिनमे बनाओल सोहारी आ कोबीक भूजिया बहार कऽ हमरा सोझा बढा दैत छथि। ओहि महा जंजालमे रातुक ई खाना अमृत तँ कम नहि बुझाइछ। हम सएह सोहारी खा अन्दाजे सँ पानि पिबि सुति रहैत छी। एहि आशामे जे भोर ३ बजे इलाहाबादमे जखन ई उपद्रबी जमान उतरत त चैन सँ साँस लेल।

मुदा से हमरासभक भ्रम छल । जे भितर पैसि उपद्रब मचबैत रहए से त छलहे । रातिमे जाहि स्टेशनपर गाडी रुकैक तेहने जमातक लोक डिब्बामे पैसय चाहे । से डिब्बामे जगहे नहि रहैक तएँ मूल दरबज्जा बन्द कऽ देल गेल रहैक । मुदा जँ कि ई पछिल्ला डिब्बा रहैक । सभ एहीपर चढ़ चाहय आ दरबज्जा बन्द देखलापर मारते रास हल्ला करैक , गाडि फइज्जत करैक, दरबज्जा पीटैक । एहनमे निन्न हएब सम्भव छलैक ! कोहुना करोट फेरैत रही । तएँ एक आध घण्टा नहि सुतल हएत से कहब कठिन , तखन आन सदस्य लोकनि कहादन भरि राति जगले , कछमछाइत रहि गेलाह । एक तँ पेट खाली रहनि आ दोसर डिब्बाक धूमगज्जरि सँ आदंक पसरल रहैक ।

जखन इलाहावाद आएल तँ धमाधम युवासभ उतरऽ लागल रहए । किछुए देरमे डिब्बा खाली भऽ गेल रहैक । सभ निसाँस छोडलक । जे पेट आ बेग ताबि सुटकल रहथि से ट्वाइलेट दिस दौगलाह । किछु विछाओन सरिया सुतबाक उपक्रम करऽ लगलाह - जएह दू तीन घण्टा आँखि झपा जाए ।

...

अद्‌भूत । २१ ता. कऽ पवन एक्सप्रेस अपन निर्धारित समय ३:४० पर मुम्वईक लोकमान्य तिलक टर्मिनसपर रुकि गेल । अपन अपन समानक संग सभ गोटे हुलिमे मिझरा गेलहुं जे हमरा सभकेँ स्टेशनकेँ बाहर लागल दू गोट लक्जरी बसमे सीटपर लऽ अनलक । ओत्त सँ विरारक हेतु बस चलल । जे १:४५ घण्टामे होटल लग लऽ अनलक । किछु देर बिलमक बाद हमरासभकेँ होटलमे बजाओल गेल जत्त १०४ नम्बर कोठरी हमरा सभकेँ देलक । एक कोठरी आर देबाक रहैक से देब कहि आयोजक बेपत्ता भेल से २५ ता.मे विदा होएबाक काल मात्र बाहरमे अनुहार देखौलनि । नेपाली प्रतिनिधि मण्डल पहिने सँ गछल एक कोठरी आवंटन नहि कएने जे कष्ट नहि भोगबाक छलैक सभ भोगैत कार्यक्रम सफल बनएबामे हर संभव प्रयत्न कएने छल । एतेक धरि जे दू घण्टा सँ उपरक कथित प्रभातफेरीमे एक मात्र नेपाली प्रतिनिधि मण्डलक बैनर सडकपर रहैक , जकरा पर सभक नजरि रहि रहि कऽ दौगि जाइक आ मोवाइल आ कैमराक फ्लैस बेर बेर क्लिक होइत रहै ।

मूल समारोहमे मंचपर उचित समयमे प्रतिनिधित्व नहि कराओल गेल रहैक । सम्पूर्ण कार्यक्रममे उपेक्षित राखल गेलै नेपाली टीमकेँ । बाज देबाक



औचित्य रहितो अवसर सँ बंचित कऽ देल गेल रहैक । कमजोर कवि सम्मेलन भेल, सेमिनारक भार कोहुना सम्हारलनि मणिकान्त जी , ओहुमे हमर मित्रे हमर गुणगान तेना ने कएलनि जे सौसे सहभागी हमर चिन्हल लोक हुनक परिचय हमरा सँ पुछैत रहलाह ।

खानपीनक व्यवस्था अत्यन्त अव्यवस्थित । पहिल दिन कतेको गोटे भुखले रहि गेल तँ खीचडि खा प्राण जोगौलनि ।, कारण जलखई विना प्रभातफेरीमे लऽ गेलाक बाद एक्कहि बेर तीन बजे कार्यक्रम स्थलपर छोड़ब भूखे की हाल भेल हएतैक ।

मंचक व्यवस्था, बैसबाक ओरिआओन, ध्वनि आ प्रकाशक व्यवस्था कतहुं सँ आयोजनक कमजोरी नहि झलका रहल छल । भव्यता रहैक । २८ हजार सँ उपर खुरसी दर्शकक हेतु राखल रहैक । सामान्य , भीआइपी, भी भी आइपी आ अतिथिक । मुखा सभ भद्रगोल । सभक ध्यान साँगितिक कार्यक्रमपर । मूल आयोजन कातमे पडि गेल छल । सांगीतिक कार्यक्रमक प्रचारमे कतेको लाख खर्च भेल हएतैक । भरि भरि पेजक रंगीन विज्ञापन । निमंत्रणपत्र चारि पृष्टक ए४ साइजक रंगीन । भाषा, साहित्यमे तकर दशांशो खर्च नहि । साहित्यकार सम्मान सँ बारल गेलाह । विदाईमे अव्यवस्था भऽ गेलैक । नहि देब ठीक रहैक । एकटा नीति बनल रहबाक चाही । आ जखन देल गेल तँ मुँह देखि मुंगबा परसल गेल । दूर दराज सँ कठिन परिस्थितिमे मुम्बई पहुँचलकेँ पीडा नहि बुझल गेल । आयोजकक ई उदासीनता आर्थिक नहि समाजिक सरोकारकेँ छहोछित कएलक ।

एहनो माहौलमे हमसभ मां जीवदानीक भव्य दर्शन कएल । पन्द्रह सय पैतीस सीढी चढि कऽ पहाडक उचाइपर हुनक दर्शन स्वयंमे हमरा लेल रोमांचक आ स्मरणीय अछि । मित्र कामेश्वर कुमार श्रीवास्तवक उकसौलापर हमरामे हिम्मत आएल आ हम एहि पुनित काजकेँ करबामे सफल भेलहुं ।

हँ, हमर नेनाक मित्र कामेश्वर एखन विगत ४ दशक सँ पालघरमे रहि रहल छथि । अपन केमिकलकेँ व्यवसाय छन्हि । कयक बेर अएबाक आग्रह करैत छलाह , नहि संयोग बैसैत छल । एहि बेर बैसल तँ २१ ता. सँ २५ ता. तक निरन्तर संग रहलाह । हँ, तखन हुनक डेरापर नहि जा सकबाक कचोट बनले रहि गेल । से उधारी रहल ।

आयोजक लोकनिक खानपन व्यवस्थाक अस्तव्यस्तताक कारणे जलखई आ



भोजनक जोगाड लगेक एकटा बंगाली परिवारक दोकानमे कर፡ पडल। पशुपतिजी तकर व्योंत लगौलनि। आ इहो एकटा संयोगक बात रहैक। भोरका समयमे सभ गोटे ओकरे दोकानमे चाह पिवथि। हम जँ कि चाह नहि पीबि तँ दूधक जोगाडमे जखन ओहि दोकानमे पैसलहुँ तँ पाव आ दूधक जलखईक व्योंत भ፡ गेल। से नियमित सएह उपक्रम आब दिनधरि जारी रहल। तखन संयोगक बात ई रहैक जे २१ ता. क፡ जखन हमसभ जीवदानी माताक दर्शनक लेल जाए लगलहुँ तँ आयोजकक कथनानुसार बुढाभाई कहलनि - भोजन तैयार छै से खाइए क፡ जाइ। दश बजैत रहै। भेल जे ठिके कहैत अछि खाईए ली। आहिरे बा , ई त होइत होइत १ बाजि गेल। पशुपतिजीकेँ उपवास रहनि -एकादशीक। ओ नहि नहि करैत लालमोहन जतलखिन्ह। तुरते भोजनक बाद हमसभ जीवदानी मन्दिरक सीढी चढलहुँ। आ तेहने विकट सीढी सँ निचा उतरलहुँ। विचमे नेवो पानि सेहो भेलैक। मुदा साँझमे जखन घुरलहुँ तँ पशुपतिजीकेँ पेट एनाक፡ खराब भेलनि जे रातिभरि ट्वाइलेटमे अवरजात करैत रहलाह। खाना सेहो नहि खएलनि। भोरमे जखन चाहक बेर अएलैक तँ वंगालीकेँ खीच्चडि बनाब፡ कहलखिन्ह आ ओ नीक जकाँ बना खुवा देलकनि। बस, एहि सँ ज्ञात भेल जे ओ खाना सेहो बना सकैत अछि। हमसभ अपना अनुकूल खानाक अर्डर द፡ बनब፡ लगलहुँ तखन जा क፡ मन चैन भेल।

२५ ता. क፡ राजेन्द्रनगर एक्सप्रेसक पटना धरिक टिकट रहए। नियार भेलै जे एक्केबेर होटल छोडि सभ गोटे स्टेशने चली , ओत्तहि समान राखि दर्शनीय स्थल देखबा लेल नीकलि जाइक। गाडी ११:३५मे रहैक। रातिमे। हडबडीक कोनो कारण नहि छलैक।

होटलबलाक सहयोग सँ दूटा टेक्सी मंगाओल गेल। १५०० टका प्रति टैक्सी। नौ गोटे असवारी। दू टैक्सीमे विदा भेलहुँ। डेढ घण्टामे स्टेशन पहुँचि गेलहुँ। पहिने क्लक रुम खोजल गेल समान रखबा लेल। से सम्भव नहि भेल तँ एसी क्लाशक विश्रामगृहमे शरण लेल। सभ गोटे भितरेमे खाना खएलहुँ। ५० रु थाली। सस्त, स्वच्छ आ पवित्र। तकरा बाद भेल जे टैक्सी क፡ समान सहिते सभ गाटे दर्शनार्थ चली। १६०० टका प्रति टैक्सी (मैक्सी) तय भेल। ओहिना बैसल गेल आ किछु दर्शनीय स्थलसभक अवलोकन भेल। चर्च गेट। गेटवेअफ इण्डियाक आगु पाछु घुमि मोन हल्लुक कयल गेल। घूमिक፡ आबी तँ टैक्सीबला



वेपत्ता। फोन करी तँ अबैत छी कहैत, मुखा कतहुँ अतापता नहि। कामेश्वर खोजबीनमे लागल। सभक मनमे आशंका। पता नहि कत उड़ि गेल।

लिअ, ओहो आबि गेल - सभ गोटेकेँ साँसमे साँस अएलैक। ओत्त सँ मेरिन ड्राइभ होइत ....मेहता पार्क अएलहुँ। कमला नेहरु पार्क घुमैत ओत्त सँ मेरिन ड्राइभक सुन्दर दृश्य कैमरामे कैद कयलहुँ। भेलै जे आब महालक्ष्मी मन्दिरक दर्शन भ፡ जाओ। बड़ घुमानक बाद जखन मन्दिर दरबज्जा परिसरमे पहुँचलहुँ तँ लोकक भीड देखलहुँ॥ क्रिसमसक छुट्टी। छुट्टीमे जकर अपना अनुकुलक मन्दिर, चर्च आ मस्जिदमे जएबाक स्थिति रहैत छैक। एत भीड देखि आगा जएबाक साहस नहि भेल। समय वितल जा रहल छलैक। तखन ओत्त सँ दरगाहमे जएबाक नियार भेल। सिद्ध पुरुष जे कहैत छथि होइछै कहाँदन। सडक सँ दश वारह मिनट चललापर सैयदपीर हाजी अली शाह बुखारीक एहि पवित्र दरगाहपर पहुँचल जा सकैछ। समुद्रक दक्षिणवारी कात पानिमे बनल ई दरगाह वर्षातमे पुरा निचा पानिमे डुबल रहैत अछि , तैयो ओत्त धरि जाएबला बाट परलोक निशंक चलैत अपन मनोकामनाक पूर्ति ले आराधना करैत अछि।

ई दरगाह १४३१ ईमे बनाओल गेल अछि। सुफी सन्त पीर हाजी अलीक स्मृतिमे टापूपर स्थित ई दरगाह मुसलमान आ हिन्दु दुनू हेतु धार्मिक महत्व रखैत अछि। हाजी अली ट्रस्टक अनुसार हाली उजबेकिस्तानक बुखारा सँ सौसे दुनियाक भ्रमण क፡ भारत आएल छलाह। बरलीक खाडीमे स्थित ई दरगाह सडक सँ ४०० मीटरक दूरीपर अछि, जत्त निम्न ज्वारक समय मात्र जायल जा सकैछ। दरगाह ४५०० मिटरक क्षेत्रफलमे पसरल अछि। देवाल स्वेत रंग सँ रंगल छैक। विचमे एकटा मीनार छै जे ८५ फीट उंच अछि आ जे परिसरकेँ विशिष्ट पहिचान दैत छैक।

मस्जिदकेँ भितर पीर हाजी अलीक मजार अछि जे लाल आ हरियर चादर सँ झाँपल रहैछ आ जकरा चारु कात चानी सँ बनल घेरा छैक।

रोचक जानकारी बता दी - फिल्म फिंजामे एकटा कव्वाली एत्तहि फिल्माओल गेल छल। तहिना अमिताभ बच्चनक प्रसिद्ध फिल्म कुलीक अन्तिम दृश्य एतहि फिल्माओल गेल छल।

सुरुज गोसाइ पछिममे निचा खहरि चुकल छथि। हमसभ डेग बढबैत सडकपर उतरय चाहैत छी। जत्त हमरासभक टैक्सी ठाढ़ अछि। यद्यपी टैक्सी



खोजबामे लगभग आधा घंटा सँ उपर लागि जाइत अछि। तैयो सन्तोष होइत अछि। चलु किछु तँ देखि सकलहुँ। ओना लोकल ट्रेनक सफरक आनन्द नीक जकाँ उठौलहुँ। पछिला बेर २००६मे जखन एत्त एहने कार्यक्रममे आयल रही तँ लोकल ट्रेन हाथ नहि लागल रहय। ओना घुमल बड रही -शनि आ साइबाबाक मंदिर। महालक्ष्मी , सिद्धिविनायक, वम्पादेवी, संजय गांधी, राष्ट्रिय उडान ! आह, की मोन पडि गेल। एहि उद्यानमे पशुपक्षी त भेटब दुर्लभ रहए मुदा युवा युवतीक चुम्माचाटी आलिंगन आ .... ।

से तँ एहि बेर जखन मेरिन ड्राइभ सँ गुजरैत रही तँ एक जोडी ठोढ सटयने एहिना दुनियाँ सँ बेखबर एक दोसराकेँ घोटि जएबालेल उद्यत भेटल छल। सीनियर सीटिजन सँ भरल नौ गोटेक हमरासभक टीममे कतेक गोटे ओहि दृश्यक गुदगुदीकेँ पचा सकल हएताह , कहब कठिन अछि मुदा हमरा तँ ठीकेँ दश वर्ष पूर्वक संजय गाँधी उद्यानक खुल्ला प्रेम प्रसंग मोन पाडि , देहकेँ भुरभुरा देने रहए। दश वर्ष पूर्व त एहन दृश्य सँ मोन रोमांच हएब बनैत छै ने औ।

मित्र कामेश्वर कुमार श्रीवास्तव महालक्ष्मी स्टेशन सँ पालघर जएवा लेऽ जीद करैत छथि। हुनका सहुलियत हयतनि। भारी मोन सँ विदा करैत छी। हमरासभक टैक्सी स्टेशन दिस बढि जाइत अछि।

♦♦♦

बनारसक नौता आ मेघक ताण्डव

समय रहैक २०६९ साल माघ। वितैत माघक एकटा भोरमे पडरिया (सर्लाही)सँ समधीजीक फोन आएल रहए (समधीजी, १५ता.कऽ बनारस (उत्तर प्रदेश)मे बचबाके विवाह छैक, अपने अवश्य चलियौ। जँ कि सासुरमे सारक विवाह रहै, हमर जेठ बालक अवश्य जाएत। ठीक छै जएबाके चाही। फेर हम किए जाई ओतेक दूर। मन त असकताएल। ओनाहु बात रखबाले कहि देने रहिऐक(ठीक छै।विचार करबै बस, बात एतबे पर रहि गेलै।

दूचारि दिनक बाद पटनासँ जमायक फोन आएल। हुनको सभके बरियातीमे जएबा लेल आग्रह कएल गेल रहनि। से ओ हमरा सँ पुछि आश्वस्त होब चाहैत छलाह जे की हमरो सभके आमन्त्रण अछि आ हमहुँ सभ जएबाक नियार कएने छी वा नहि।

साँच बात त ई रहै ताधरि बनारस जएबाक कोनो निर्णय नहि रहए। बरु मठेर देने रहिऐक। जखन पटनासँ बात भेल त एकाएक एकटा कार्यक्रम बनि गेलै(किए ने सपरिवार चली, पटनासँ बेटी जमायके सेहोसँग लऽली। एक पंथ दू काज। बरियातीक बरियाती आ विश्वनाथ भगवानक दर्शन। वराणसी घुमलो ने रहए से तकरो लाभ भेटिए जाएत।

दू तीन दिनमे परिवारमे विचार कऽ पटना खबर कऽ देल गेलै (हँ, हम सभ जाएब, अहुँ सब तैयार रहू। फरवरी १५ ता. कऽ विवाह छै। ताही दिन अपने गाडीसँ चलबाक नियार भेलै। पटना सेहो तैयार भऽ गेल। आब पक्का भऽ गेलै जे १५ फरबरी २०१३ कऽ बनारस जएबाक छैक। मोनमे एकटा उत्साह आबि गेलै सभमे। सम्भवत: पटनो मे सएह भेल छल हएतैक। पडरिया पहुँचल बालककेँ अपना सभक जएबाक योजना बता देल गेलै।

ई योजना बनैत कालधरि मौसम ठीकेठाक रहैक। हमरा कनेक विस्मृत भऽ रहल अछि। हम सभ माने हम, पत्नि, हमर सरहोजि, हमर नतिनी चारिगोटे १३ ता. कऽ पटना पहुँचल रही। मुदा जखन पटना जएबाक तैयारी चलि रहल छल तँ पानिक लक्षण देखार होब' लागल रहैक। मेघ अपन करतब देखएबा लेल आतुर भेल एम्हर ओम्हर नाचि रहल छल। आ सएह भेल, पटना पहुँचिते

घनघोर वर्षा होब' लागल । अहिरे बा । बाटघाट देखलो ने, ई भदबारी जकाँ मेघक करतब । कोना हएत ।

नेहमान आश्वस्त कएलनि(एह, कोनो बात नहि छैक । बाट नीक छैक । पानि की करतै । रास्ता तँ पूछि लेल जा सकैछै ने । वातो ठीके रहै(वाटक निर्देश ओना राजमार्ग सभपर देलो रहैछ । नहि तँ पूछल जा सकैछ ।

हम सभ बनारस चलबाले तैयार भेलहुँ भीनसर ५ बजे । मेघ बरसैत त नहि, मुदा घटा घनघोर रहए, कखनो उझलि सकैत छल । गाडी चालक बरुणकेँ गाडी तैयार करबा लेल कहि देल गेलै । पटना सँ बेटी, जमाय,छोटका नाती आ नतिनी जाएत से रातिए बुझबामे आबि गेल रहए । सभ गोटे तैयार भऽ गाडीमे बैसलहुँ । लगेज सभ सरियाकऽ राखल जा चुकल छल । सभ सात गोटे छलहुँ । स्कारपियो मे दूरक यात्रा ओतेक कष्टप्रद नहि होइछ, तएँ कनेक बेसीए आश्वस्त रही । प्रायः छः बाजिगेल रहै जखन स्कारपिओ पटनाक ट्रैफिकविहिन चमचमाइत सडकपर दौगल । भोरमे पटनाक सडक लावण्यवती लगैत रहैछ, जखन दिनमे आ साँझमे राक्षसी भऽ जाइत अछि । जाम जाम आ मात्र जाम ।

जे से हम सभ पटनासँ बनारसक २७८ किमि दूरीक सडक पर मन साधिकऽ बढि रहल छलहुँ । बरियातीमे भाग लेबाक सुख आ बनारस घुमबाक प्रशन्नता । मेघक उमरैत घुमरैत स्वरुपसँ निडर बनौने छल । आहिरे बा... । गाडी फच दऽ बैसि गेल । हौ, बरुण, की कैलहो हौ । मुश्किलसँ एक डेढ घण्टाक दूरी पर पटनासँ आएल रही । भेल जे जँ समय पर गाडी ठीक नहि हएत तँ घुरही पडत । सभ कल्पना क्षणेमे तिरोहित भऽ गेल ।

बरुण दौगल लगेक बासमे कोनो मैकेनिक खोज । सम्भवतः उपयुक्त रींचो, औजार नहि रहैक गाडीमे । हम तँ ठीके निराश भऽ गेल रही । तखन नेहमान कनेक आश्वस्त रहथि । ओ जल्दी अगुतएबो ने करैत छथि । अपनो गाडी छन्हि(चलबैत छथि । छू छा सेहो कएलनि । भेल जे ठेलल जाए । सेहो कएल गेलै ।कोनो प्रभाव नहि । स्टेयरिंग पर मेहमाने छलाह । हम सभ लगभग निराशे भऽ गेल रही कि गाडी स्टार्ट भऽ गेल । ई चमत्कार कोना भेलै । ककरो ने बुझल रहै । चलु भऽ गेलै त भऽ गेलै । फेर कतौ धोखा ने दिअए । एह देखल जएतै । सभ गोटे बैसलहुँ । मन अदकल छल, पता नहि । से बाटमे तकराबाद कोनो तरहक धोखा नहि देलक । जखलई, खाना खएबा लेल रोकैत, बढैत, रहलहुँ । स्कारपियो

दनदनाइत चलैत रहल । वास्तवमे गाडी कहियो काल गरम भेला पर सेल्फ विद्रोह कऽ दैत छैक । जँ कनेक ठण्ढायल कि अपने मने दौग' लगैछ । ई खुबी एकर हम किछु समयबाद बुझलि ऐ, से आई धरि चलैत जा रहल अछि ।

हम सभ बनारसक कल्पनामे राजमार्गक छिहलैत धरातलपर भागल जा रहल छी तँ तहिना मुसलाधार वर्षा हमरा सभक सँग यात्रा कर' लागल छल । एतेक धरि जे गाडीमे बैसल, अगल बगलक गाम, शहर, चौर आ निर्माण सभकेँ देखबाक लोभ पुरा नहि भऽ सकल । घनघोर घटा आ चारु कात अन्हार वताबरण । भिजेबलिटी पचासो मीटर मुश्किल सँ । चालक त' गाडी ससारि सकत तकरो कठिनाइए भऽ रहल छलैक । ई त मेहमान छलथि जे आगा बैसल ओकरा टोकारा दैत गाडीकेँ ससारि रहल छलाह ।

बनारस आब ४०-५० कि.मि. मात्र छल । समय छलै साँझक ५ बजे । बत्ती त नहि बरल रहैक मुदा बरतै जरुर, कारण बाट जाम छै । पुछल गेलै ककरोसँ त बाजल रहै ई जाम सात सँ पूर्व खतम नहि हएत । बनारसमे प्रवेश मे एहने जाम रहै छै । एह एकटा बात त छुटिए गेल । इलाहावाद (प्रयाग) मे कुम्भ मेला सेहो रहैक । ई जाम मोन पाडलक । ट्राफिक ई दुरावस्था तकरो कारण रहैक । हमरो सभके मोन मे रहय जँ वातावरण अनुकूल रहैक तँ दू घण्टाक बाट प्रयागमे डुबकी लगाइए आबी । से प्रकृतिके मन्जुर नहि छै जेना । गाडीके ससरबो प पराभब भऽ गेल छलै ।जेना तेना ठीके सात बजेक लुकछुकमे ८(१0किमी दूरी पर अएलहुँ । चलु,प्राणमे प्राण आएल । बनारसमे बचबाकेँ फोन कएल । लागल (हमसभ लगमे आबि गेल छी । ७:३० बजेधरि आबि जाएब (कहलिऐक । जँ, मौसम सफा रहितैक त आनन्द अबितैक । मुदा मुसलाधार वर्षामे सभ अन्हारे अन्हार । आब बनारसक बिजली देखार होब' लागल अछि ।

हमसभ बनारसक रेलवे स्टेशन लग पहुँचि गेल छी ।ओतसँ गन्तव्य दिस । फोन कएल बात भेल । लोकेशन बताओल गेल । हमसभ गाडी लऽकऽ ओहि क्षेत्रमे जा चारुकात खोजि अएलहुँ । छत्ता नहि रहने गाडियोसँ बचिए कऽ निकलैत छलहुँ । बरियातीक तामझाम बला कतेको दरबज्जा पर अहेर कऽ आएल रही । मुदा पता नहि, ओ बरियाती कत्ता रहए । फोन करी तँ होहल्ला सुनिऐ । ओम्हरसँ केओ फोनो नहि उठाबे । दुख भेल, बचबाक फोन नहि उठैक । ओकरा तऽ बुझल छलैक हमर परिवार आबि चुकल अछि । खोजबीन

हएबाक चाही। बनारसक गल्लीमे वैचारिक संकटसँ ग्रस्त सभकेओ हमरा सभक सुधि नहि लऽ सकल। आब !

तखन काठमाण्डू फोन कएल गोपाल झा जीकेँ। एत नेपाली मन्दिर छै,ललिताघाट पर। ओत्त रहबाक नीक व्यवस्था छैक। जँ, ओ बात कऽ देथि तँ रहाइस भऽ सकैत अछि। से बेचारा तुरत मन्दिरक महन्थ के खबर कएलनि। ओम्हर सँ फोन आएल आ बाटक कठिनाई बतबैत जँ आब' चाही त' आबि सकैछी कहलनि। वर्षाक ई घनघोर आलममे बिन देखल सुनल कत्त जाएल जाए। से हम सभ एतहि जोगाड लगएबाक बात कहि हुनका धन्यवाद देलियनि।

कुम्भ मेलाक ई अन्तिम पडाव थिक बुनारस। जे जाए चाहैए सेहो,जे घुरैए सेहो। एतहि टिकैए, लाँज,होटल खाली भेटब दुर्लभ। से मेहमान सौंसे बौआ अएलाह कतहुँ नहि भेटलनि। धीआपूता रहैक। एखन धरि भोजनो नहि भेल रहैक। रातिके नवसँ टपि गेल रहै। तखन मेहमाने टोहलैत लैत एकटा अधखरु मुदा व्यवस्थित होटलक पता लगौलनि। प्रति रुम रु. एकजार रुपैआ। चलु भेटल त। दू टा रुम लेल गेल। महिला बच्चा एकटामे आ एकटामे हम आ मेहमान। रुम एटैच बाथरुम आ चौडगर पलंगवला रहैक। रहबाक बासक बाद भोजनक हेतु हम सब बजारमे गेलहुँ। खाना खा सभ केओ आराम करैत कल्हुका आब बला क्षणक प्रसंग चिन्तनमे लागल रहलहुँ। तखन ई क्लेष रहबे करए, जाहि निमन्त्रण पर जनकपुर सँ बनारस तकक कष्टपूर्ण यात्रा कएल, से तँ पुरा नहिए भेल, बरु रह' वैस धरिमे आफत आबि गेल।

भोर कनेक साफ रहैक। कही तँ बुँदा बाँदी बन्न रहैक। मुदा मेघक झिझिरकोना बन्न नै रहैक। तएँ खतरा टरल नहि छल। सभ गोटे नहा धो क' तैयार भऽ गंगाघाट पर जएबाक निर्णय कएलहुँ। ओतसँ गाडी लऽकऽ गंगाघाट दिश बढलहुँ। एकटा सीमाधरि मात्र जएबाक अनुमति रहैक से ओतही गाडी पार्क कऽ हमसभ घाट पर पहुँचलहुँ। ओत देहपर पानि छीटिकऽ अपनाकेँ पवित्र बनबैत माँ गंगे केँ सादर नमन करैत गेलहुँ। भेल जे नौका बिहार कएल जाए। एकटा नौका तोडलनि मेहमान जाहिमे सभ गोटे वैसैत गेलहुँ। डगमग करैत नाओ बैसबा काल डरो लगैत रहए। नाब चलल दक्षिण दिश। सभ घाट सभकेँ जानकारी दैत।बिचमे एक बेर फेर बुँदा बाँदी भेलैक। हम सभ नाओके कातमे लगाबक लेल कहि किन्हेरक एकटा शेडमे नुका रहलहुँ। जखन वर्षा शान्त भेलै



त पुनः नाओ यात्रा जारी भेल। गंगामे उजरका चिडै सभ चाउचाउ करैत चारु भर चकभाउर दैत खूब नीक लगैत छल। लोक उपरेसँ दाना लेने आबए आ तकरा छीटला पर ओ चिडै नाओक चारुकात नचैत रहै। अद्भूत दृश्य... ।

हमरा सभक लक्ष्य नेपाली मन्दिर रहए। महन्थ जीकेँ हम सभ अपन अएबाक सूचना दऽ देने रहियनि। पत्ता चलल हम सभ घाट पर जखन आएल रही, महन्थजी हमरा सभके लेब' स्वयं होटल धरि पहुँचि गेल छलाह। खुशी भेल। उएह.. देखू, पैगोडा स्टाइलक ओ मन्दिर। उएह अछि नेपाली मन्दिर।

मन्दिरक घाट पर उतरैत छी। महन्थजीक पत्ता पुछैत एक कोठरीमे पहुँचि जाइत छी, जत हमरा सभकेँ किछु काल बैस कहल जाइत अछि। महन्थजी पूजापाठमे भऽ सकैत छथि। कारिन्दा सभ एम्हर ओम्हर करैत। ता खबरि अबैत अछि। हम सभ चेलबा सँगे महन्थजीक कोठरीमे पहुँचैत छी। महन्थजी बड आत्मिय भावसँ स्वागत करैत छथि। रतुका असुविधा प्रति दुख व्यक्त करैत आई ओतहि रहबाक लेल अनुरोध करैत छथि। मुदा हम सभ आइए घूरि जएबाक बात कहि हुनक आग्रह नहि मानैत छीयनि। तखन चाह अबैत छैक। बातचीत होइछ। बाहर फेरसँ इन्द्र भगवानक कृपा बरसि रहल छलैक। से तावडतोड। आब तँ एतहुँ सँ निकलब पराभव। विचार अछि लगले हाथ भगवान विश्वनाथकेँ दर्शनो कइएली। से हुनकासँ आदेश लऽ उठैत छी। ओ एकटा शिष्यकेँ छाता लऽ सँगे पठबैत छथि। बनारसक गलीसँ जल्दी गन्तव्य धरि पहुँचबाक लेल। विदा करैत करैत फेर भोजनक आग्रह करैत छथि। हम हाथजोडि लैत छीयनि। निचाँ उतरैत छी। छाता तँ महज कहबा लेल छल भीज त गेल छलहुँए। ओ शिष्य ठीक ५(७ मिनटमे मन्दिरक मुहान लग पहुँचा विदा लऽ लैत अछि। हम सभ लाइनमे लगैत छी। मुदा जखन नजरि खिरबै छी तँ अनन्त लगैछ(पंक्तिधारी सभक उपस्थिति। पानि पडैत पंक्ति अशेष। पटना आइए घुरबाक निर्णय। कछमछा कऽ निर्णय कर' पडैछ चलु एतहिसँ विश्वनाथ बाबाकेँ दर्शन कऽ घुरु... । फेर दोसर बेर।

हम सभ पूर्ण रुपेण भीजि गेल छी। हँ, सभकेँ एक सेट कऽ कपडा गाडीमे रहैक। सुविधा अनुसार सबगोटे कपडा बदलैत छी। तखन खाली हाथें रेलवे स्टेशनक बाट होइते पटना दिश बढ' लगैत छी। १५(२० मिनट चलल हएत कि



नारायणजी, हमर बालक, सँ सम्पर्क होइछ। ओहो सँगे जाएत कहैत अछि। संगमे जेठ बालक पप्पु सेहो छलैक। तखन फेर गाडी घुमा कऽ रेल्वे स्टेशन वला जलखईक दोकान लग लबैत छी। ओ सभ आबय ताधरि जलखईक अर्डर दऽ देल गेल रहैछ।

जलखई आबि गेल रहैक। सभ गोटे खाइते रहए कि बचबासभ आबि जाइछ। रतुका पीडा त कहल गेलै मुदा ओ अपने परेशानी सुनब' लागल रहए। जे से सभ केओ नाश्ता पानीकऽ पटना दीशि विदा भऽ गेल रही।

ई यात्रा एतेक असफल आ कष्टदायी रहल, कहब मुश्किल। ने बरियाती, ने दर्शन आ ने प्रयागमे डुम। चारिममे बनारसो दर्शनक अवसर नहि। तैयो धन्य बरियाती पुरबाक निमन्त्रणकँ जे कमसकम बनारसमे पहुँचबाक स्थिति तँ उत्पन्न भेलैक। कहल जाइछ बाबा विश्वनाथक नगरीमे प्रवेशोसं तन मन पवित्र भ जाइछ। सेहो सपरिवार। एहि बेर सएह !!

♦♦♦





रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

जन्म : २००८ साल, साओन, बधचौडा, जि. धनुषा

शिक्षा : एम.ए. (त्रि.वि.वि.)

प्रकाशित कृति :

काव्य: बन्न कोठरी औनाइत धुंवा (कवितासंग्रह) : २०२९ साल, नहि, आब नहि (दीर्घकविता) २०३६ साल, मोमक पधलैत अधर (गीत, गजल), अप्पन अनचिन्हार (कवितासंग्रह) :१९९० ई., भयो अब भयो (अनुवाद) बस अब नही (हिन्दी अनुवाद),अन्हरियाक चान (गजल संग्रह)२०७०: कथा: तोरासंगे जएबौरे कुजवा (कथासङ्ग्रह) १९८४ ई., हुगली ऊपर बहैत गंगा (कथासङ्ग्रह) २०६५। उपन्यास : घरमुहाँ २०६९। नाटक : रानी चन्द्रवती : २०४५ साल, एकटा आओर वसन्त : २०५२ साल, महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक : २०५४ साल, भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू (नेपाली अनुवाद) २०६४ भैया अएलै अपन सोराज (नाटक) २०६७। एकटा आओर बसन्त एवं अन्य नाटक,साझा प्रकाशन,सूली पर इजोत एवं अन्य नाटक। शोध: जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू: २०५६ साल, राजकमलक कथासाहित्यमे नारी : २०६४ साल, लोकनाट्य : जट-जटिन : २०६४ : Cultural Heritage of Janakpur : २०६२ साल। मैथिली लोकसंस्कृति (आलेख संग्रह) २०६६। तराईको फांट देखि हिमालको कांख सम्म (आलेख संग्रह), प्रकाशक: साझा प्रकाशन, २०६७। विविध :आजको धनुषा : २०३९ साल, जनकपुर लोकचित्र : २०४६ साल। समयको अन्तराल पछ्याउदै (आलेख संग्रह, २०६६ साल) ठेकान पर (विचार संग्रह), समय-सन्दर्भ(निबन्ध संग्रह) २०६८,अहाँ जे कहलहुँ (साक्षात्कार संग्रह) २०७१। चीन जे हम देखलहुं (यात्रा संस्मरण) सम्पादन: मैथिली पद्यसङ्ग्रह : (नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठान) : २०५१ साल, लाबाक धान (कवितासङ्ग्रह) २०५१ साल, त्रिशूली (स्व. माथुरद्वारा लिखित खण्डकाव्य) २०४९ साल, नेपालक मैथिली पत्रकारिता : २०४४ साल, मैथिली लोकनृत्य : भावभंगिमा एवं स्वरूप (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान) २०६१, अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल : २०६५साल, हम और तुम (हिन्दी कवितासंग्रह) : २०६६साल,मैथिलीनाटक-संग्रह (नाटक संग्रह) २०६७, महाकवि विद्यापति आ नेपाल (निबन्ध संग्रह) २०६८, मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन,२०६९,लोकनायक सलहेस (निबन्ध संग्रह) २०६९। लोकनायक सलहेस (द्वितीय खण्ड) (निबन्ध संग्रह) २०७०, लोकगाथा नायक: दीनाभद्री (२०७०)। सम्मान: नेपाल राजकीय पज्ञा (प्रतिष्ठानद्वारा प्रदत्त प्रथम 'मायादेवी प्रज्ञापुरस्कार' द्वारा सम्मानित : २०५२ साल, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गाद्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान, शेखर प्रकाशन, पटनाद्वारा 'शेखर सम्मान', ने. मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुरद्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बईद्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान, मधुरिमा नेपालद्वारा 'मधुरिमा सम्मान', चेतना समिति,पटना द्वारा यात्री चेतना पुरस्कार ,साझा प्रकाशन द्वारा साझा लोक संस्कृति पुरस्कार (२०६८), विद्यापति मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार(२०६९) आदि दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त। विशेष : पूर्वसदस्य, प्राज्ञ परिषद्, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, कमलादी, पूर्वअध्यक्ष: साझा प्रकाशन ,ललितपुर।

ISBN 978-9937-0-1346-8





जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान